नित नवल राजकमल

सुभाष चंद्र यादव



12

राजकमल चौधरीक जन्म बिहार के रामपुर हवेली नामक गाम मे 1929 ई. मे भेल रहनि। जखन ओ अड़तीस बरखक रहथि, तखने 1967 ई. मे हुनक मृत्यु भ' गेलनि। हुनक जीवन आ साहित्य दुनू अनेक तरहक विवाद सँ घेरायल रहल। हुनका बारे मे किसिम-किसिम के खिस्सा हुनक जीवन कालहि मे पसरि गेल छलनि। राजकमलक रचना-काल फकत तेरह बरखक छल। एहि छोट सन अवधि मे मैथिली आ हिंदी मे ओ विपुल साहित्यक निर्माण कयलनि। कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, निबंध, रिपोतजि-एहि सभ विधा मे ओ निरंतर रचना करैत रहलाह। ओ बांग्ला के अनेक उपन्यासक हिंदी अनुवाद कयलथि। राजकमलक व्यक्तित्व मे समायल अथाह करुणा हुनका अनायास साहित्य दिस ल' गेल। हुनक साहित्य वैयक्तिकता आ सामाजिकताक द्वन्द्व सँ निर्मित भेल अछि। हुनक साहित्य मे गहन भावावेग आ जीवनक ऊष्मा के दर्शन होइत अछि। हुनक मैथिली साहित्यक मिजाज हुनक हिंदी साहित्य सँ भिन्न अछि। मैथिली मे हुनक लेखकीय व्यक्तित्वक समस्त भव्यता आ सुंदरता प्रकट भेल अछि। राजकमल विशिष्ट भाषा-शैलीक अप्रतिम रचनाकार छलाह।

नित नवल राजकमल

(राजकमलक जीवन)

सुभाष चन्द्र यादव

अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-91925-33-8

नित नवल राजकमल

पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2022

मूल्य : 250.00 रुपए

प्रकाशक
अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फोन : 0-9871856053
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण : अंतिका आर्ट्स

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

NIT NAVAL RAJKAMAL (Biography) by Subhash Chandra Yadav
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 250.00

धर्मप्राण
संतोष कुमार
कुंदन
सुव्रता
गिरिवर कृष्ण
राधे राधे

भूमिका

ई किताब साहित्य अकादेमीक अनुरोध पर मूलतः मैथिली मे लिखल गेल। लेकिन छपल हिंदी मे। पहिने 'पहल' नामक हिंदी पत्रिका एकरा अक्तूबर 1998 मे पुस्तिका रूप मे छापलक। फेर किछु साल बाद 2001 मे सारांश प्रकाशन एकरा पुस्तकाकार प्रकाशित कयलक। हिंदी मे ई 'राजकमल चौधरी का सफर' शीर्षक सँ छपल। अखन एकर हिंदी संस्करण अनुपलब्ध अछि, मुदा ओकरो नव संस्करण अही पोथी संग अंतिका प्रकाश सँ आबि रहल अछि।

चारि साल बाद 2005 मे विश्वनाथ अपन पत्रिका 'रचना'क विशेषांक निकालि सम्पूर्ण पांडुलिपि मैथिली मे प्रकाशित कयलनि। नाम छल 'राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ'। हुनके आग्रह पर साहित्य अकादेमी मे पांडुलिपि संबंधी दुष्चक्रक अंतर्कथा उजागर कयल गेल। विश्वनाथ कहने छलाह जे एकरा ओ बहुत प्रेम सँ आ सुरुचिपूर्वक पुस्तकाकार प्रकाशित करबौताह। मुदा से संभव नहि भ' सकल।

आब ई चारिम बेर प्रकाशित भ' रहल अछि। एहि बेर मैथिली पोथीक रूप मे। गौरीनाथक सद्भावना आ सदाशयताक फलस्वरूप अंतिका प्रकाशन एकरा प्रकाश मे आनत। एहि बेर एकर नाम देल गेल अछि—नित नवल राजकमल।

प्रकाशन-यात्राक हरेक खेप एकर भूमिको लिखाइत गेल। मगर एहि संस्करण मे हिंदी वला भूमिका नहि देल जा रहल अछि। मूल मैथिली वला पहिल भूमिका आ 'रचना' मे प्रकाशित भूमिका टा सम्मिलित कयल अछि। पहिल भूमिका 'आदिकथा' नाम सँ अछि। दोसर भूमिकाक शीर्षक अछि—एहि मोनोग्राफक बारे मे।

परिशिष्ट मे वाचक के हैसियत सँ रामदेव झा द्वारा लिखित प्रतिवेदन अछि। ओहि प्रतिवेदनक साहित्य अकादेमी केँ देल गेल हमर जवाब अछि—'वाचक का प्रतिवेदन' के बारे में। प्रतिवेदन आ ओकर जवाब दुनू हिंदी मे अछि।

सुभाष चंद्र यादव
14.10.2020
सुपौल

एहि मोनोग्राफक बारे मे

राजकमल चौधरी पर मोनोग्राफ लिखबाक काज हमरा 1993 ई.क अंत मे भेटल छल। सुनलहुँ जे साहित्य अकादेमीक एहि निर्णय सँ एहन कतेको व्यक्ति खिसिया गेलाह, जिनका कोनो ने कोनो कारणेँ ई विश्वास छलनि जे राजकमल पर मोनोग्राफ लिखबाक लेल वैह सर्वाधिक उपयुक्त आ योग्य छथि। मैथिली मे निस्संदेह अनेक योग्य व्यक्ति छथि आ ई काज किनको देल जा सकैत छल। लेकिन मैथिली परामर्श मंडलक जाहि बैसार मे ई निर्णय भेल ताहि मे कोनो दोसर नाम नहि छल। देवकान्त झा प्रस्ताव देलनि आ ओ स्वीकृत भ' गेल।

मोनोग्राफ लिखबा मे हमरा बहुत विलम्ब भेल। ओकर पाण्डुलिपि हम 1996 ई.क अप्रैल मे कलकत्ता मे भेल बोर्डक मीटिंग मे जमा कयलहुँ। मीटिंगे मे पाण्डुलिपि रामदेव झा केँ समीक्षा हेतु द' देल गेलनि। ई बात ठीक नहि भेल, से मीटिंगक बाद तखन बुझायल जखन मोहन भारद्वाज एहि दिस ध्यान दिऔलनि। मीटिंग मे हम रामदेव झाक 'पसिझैत पाथर'क प्रस्तावित अंगरेजी अनुवादक विरोध कयने छलियैक। पाँच-छह मास गुजरि गेलाक बादो जखन रामदेव झा अपन समीक्षात्मक रिपोर्ट नहि पठौलथिन त' विश्वास भ' गेल जे ओ हमरा विरोध करबाक मजा चखा रहल छथि।

फलत: साहित्य अकादेमी केँ हम पत्र लिखलिऐक जे समीक्षक सँ रिपोर्ट अविलम्ब मँगाओल जाय। अंतत: आठ महीनाक बाद जनवरी 1997मे रामदेव झा रिपोर्ट जमा कयलथि। पाण्डुलिपि केँ ओ अस्वीकृत क' देने छलाह। हुनक रिपोर्ट 'वाचक का प्रतिवेदन' प्रकाशित कयल जा रहल अछि। ओहि रिपोर्टक जवाब, जे हम साहित्य अकादेमी केँ पठौने छलिऐक, सेहो 'वाचक का प्रतिवेदन'क तुरंत बाद छापल जा रहल अछि।

रामदेव झा द्वारा रिपोर्ट जमा करबा सँ पहिने मोहन भारद्वाज दिल्ली गेल छलाह तँ हमरे कहला पर ओ साहित्य अकादेमीक उपसचिव रमेश भसीन सँ गप्प कयने छलथि। तकर सूचना दैत ओ लिखने छलाह—'भसीन सँ अहाँक पत्रक प्रसंग गप्प

भेल। ओ कहलनि जे अन्यथा रिपोर्ट अयला पर पुन: दोसर गोटे सँ रिभ्यू कराओल जयतैक। पोथी छपतैक, कने-मने संशोधन कर' पड़य से संभव। अहाँ निश्चिंत रहू।'

पाण्डुलिपि अस्वीकृत हेबाक आशंका तँ रहबे करय। रच्छ ई छल जे परामर्श मंडलक एक टा और मीटिंग, जे ओकर आखिरी मीटिंग होइत, अप्रैल मे निर्धारित छल, जाहि मे सदस्यक रूप मे उपस्थित रहि हम अपन पाण्डुलिपि केँ बचेबाक प्रयास क' सकैत छलहुँ। दिल्ली मे मीटिंग सँ पहिने भसीन कहलनि जाहि नाम पर आपत्ति हो, तकर विरोध अहाँ मीटिंगे मे करब। मीटिंग मे निर्णय भेल जे पाण्डुलिपि केँ समीक्षा फेर सँ कराओल जाय। ककरा देल जाय? सभ चुप छल। सुझाव रामदेवे झा दिस सँ आयल—मोहन भारद्वाज। हमरा भसीनक सलाह मोन त' पड़ल, लेकिन ई नहि खटकल जे रामदेव झा किएक मोहन भारद्वाजक नाम सुझा रहल छथि। हमरा मोहन भारद्वाज पर अविश्वास नहि रहय आ हम चुप रहि गेलहुँ। बाद मे मोहन भारद्वाज कहलथि—आब अहाँक मोनोग्राफ बचि गेल। हमरो लागल जे ठीके आब ओ छपि जायत। मीटिंगक बाद सुरेश्वर झा आ रामदेव झा इलाहाबाद जयकान्त मिश्र सँ भेंट कर' चल गेलाह—साहित्य अकादेमीक अगिला मैथिली संयोजक बनबाक पैरवी मे।

मोहन भारद्वाज पाण्डुलिपि पढ़िक' रामदेवे झाक लाइन पकड़ि लेलनि। ओहो कह' लगलाह जे मैथिली साहित्यवला खंड कने और पैघ क' दिऔ; राजकमलक यौन जीवनक ई अंश हटा दिऔ, ओ अंश हटा दिऔ आदि। राज मोहन झा आ सुकान्त केँ ओ अपना ढंगे बुझा-सुझा क' तेना तैयार क' लेलनि जे आब हुनका बदला मे यैह दुनू हमर पाण्डुलिपि केँ अयोग्य घोषित कर' लगलाह। महाप्रकाश एहि बात ल'क' सुकान्तक फज्झैतो कयलथि। पाण्डुलिपिक प्रकाशनक चिंताक कारणेँ हम ओहि मे किछु जोड़बाक आ ओकरा संपादित करबाक लेल तैयार भ' गेलहुँ। लेकिन ई जोड़-घटाव बहुत मामूली छल। पाण्डुलिपि मोहन भारद्वाज केँ घुरा देलियनि। किछु दिनक बाद ओ कह' लगलाह अहाँ जे किछु कहलिऐक अछि से निष्कर्ष रूप मे अलग सँ लिखि क' द' दिऔ। मोनोग्राफ केँ पी-एच.डी. थीसिस बना देबाक हमर कोनो इच्छा नहि छल। निष्कर्ष लेल हम एकदम तैयार नहि भेलहुँ। ताधरि ई तय भ' गेल छलैक जे साहित्य अकादेमीक अगिला मैथिली संयोजक रामदेव झा हेताह। मोहन भारद्वाज केँ परामर्श मंडलक सदस्य बनबाक रहनि आ से हुनका रामदेवे झा बना सकैत छलनि; बनाइयो देलथिन। पता चलल हमर मोनोग्राफ केँ ओ रिजेक्ट क' देलनि। कारण ई जे विनिबंध लेखक पाण्डुलिपि मे अपेक्षित संशोधन आ परिवर्तन लेल तैयार नहि भेलाह।

हमरा लेल ई बड़ पैघ आघात आ चुनौती छल। हम ओकर हिंदी अनुवाद करब आरंभ कयलहुँ। एहि प्रसंग मे हमरा केदार काननक अविस्मरणीय सहयोग भेटल। मोनोग्राफक प्रतिलिपि तैयार करबाक आ ज्ञानरंजन सँ ओकर प्रकाशन संबंधी गप्प करबाक श्रेय केदारे केँ छनि। ई मोनोग्राफ पहिने 1998 ई. मे पहल पुस्तिका रूप मे छपल आ 2001मे सारांश प्रकाशन सँ किताब रूप मे। आब ओ मैथिली मे छपि रहल अछि। एहि मैथिली रूप मे किछु एहनो चीज अछि जे हिंदी मे नहि अछि।

एहि मोनोग्राफक हिंदी मे बहुत प्रशंसा भेल। प्रकाश मनु आ लीलाधर मंडलोईक प्रशंसात्मक समीक्षा हिंदीक पैघ आ प्रतिष्ठित पत्रिका मे छपल। हमरा लग प्रशंसाक अनेक पत्र आयल। बहुत गोटय चिट्ठी लिखिक' ओकर खोज करैत रहल। बहुत गोटय राजकमलक बारे मे अपन संस्मरण लिखि क' पठौलक। मैथिली जगत मे एकरा रिजेक्ट करबाक बहुत विरोध आ आलोचना भेल। पत्रिका मे उतरा-चौरी, उकटा-पैंची आ विवाद चलल। एहि मे सर्वाधिक मुखर रमेश छलाह। मैथिली-हिंदीक रचनाकार डॉ. सुवास कमार, जे हैदराबाद विश्वविद्यालय मे हिंदीक प्रोफेसर आ अध्यक्ष आ वेस्ट इंडीज मे कैक साल भिजिटिंग प्रोफेसर छलाह, एहि मोनोग्राफक बारे मे लिखने रहथि : उलटाने लगा तो खत्म किये बिना चैन न पड़ा। पूरा पढ़ गया—जिसे कहते हैं, एक ही साँस में। बड़ा मनोयोग पूर्वक लिखा है आपने, और बड़ा ही संयत होकर। राजकमल पर इससे बेहतर कोई रचना मैंने नहीं देखी है। जानकारी और विश्लेषण दोनों ही दृष्टियों से अत्यंत उत्कृष्ट और समृद्ध है यह पुस्तिका। खुशी की बात है कि सारांश प्रकाशन से इसका पुनर्प्रकाशन होने वाला है।

सुभाषचंद्र यादव
29.11.2005

आदिकथा

एहि विनिबंध लेल राजकमलक जीवन-वृत्त लिखब सर्वाधिक कठिन काज रहल अछि। राजकमलक विविध आ व्यापक जीवनक विस्तृत वृत्त लिखब बहुत बेसी श्रम आ समयक अपेक्षा रखैत अछि। प्रस्तुत वृत्त मे राजकमलक जीवनक किछु प्रमुख घटना आ मोड़ अछि; किछु प्रेरक परिस्थिति अछि जे हुनक जीवन केँ अंतर्सूत्रित एवं अंतर्ग्रथित करैत अछि। ई हुनक जीवनक संक्षिप्त आ सार कथा अछि।

राजकमलक समस्त साहित्य एखनो पुस्तकाकार प्रकाशित नहि भ' सकल अछि। हुनक समुचित आ समग्र मूल्यांकन मे ई सभ सँ पैघ बाधा अछि। एहि विनिबंध मे राजकमल-साहित्यक शैक्षिक आ शास्त्रीय आलोचना नहि कयल गेल अछि। पाठक वर्ग केँ राजकमलक साहित्यिक दृष्टि आ हुनक कलात्मक विशिष्टता सँ मात्र परिचय कराओल गेल अछि। विषय-वस्तु संग न्याय करैत विनिबंध केँ अधिकाधिक पठनीय बनयबाक प्रयास कयल गेल अछि। एकरा जीवनीए कहब सही होयत। एहि मे राजकमलक जीवन आ साहित्यक खिस्सा अछि।

विनिबंध खातिर सहायक सामग्री प्रदान करबाक लेल हम श्री मोहन भारद्वाज एवं श्री केदार काननक आभारी छी। ई पोथी केदारक स्नेहपूर्ण सहयोगक सदैव स्मरण करबैत रहत।

सहरसा
अप्रैल 1997

सुभाष चंद्र यादव

अनुक्रम

भूमिका	VII
एहि मोनोग्राफक बारे मे	IX
आदिकथा	XIII
दंतकथाक नायक	17
जीवन	23
साहित्य	53
वाचक का प्रतिवेदन	74
'वाचक का प्रतिवेदन' के बारे में	98

दंतकथाक नायक

राजकमल चौधरी अत्यंत विवादास्पद व्यक्ति छलाह। ई विवाद हुनक जीवन आ साहित्य दुनू कें ल'क' छल। हुनका सन विवादास्पद लेखक मैथिली आ हिंदी मे दोसर भरिसके भेटत। हुनका बारे मे अनेक तरहक खिस्सा हुनक जीवन-कालहि मे पसरि गेल छल। ओ जीविते दंतकथाक नायक बनि गेल छलाह। अपना मादे पसरैत सब प्रकारक झूठ-साँच खिस्साक ने तँ ओ कहियो खंडन कयलनि, ने ओकर मंडन कयलनि, खिस्सा कें पसरय देलनि। दंतकथाक सृजन मे हुनक अपनो हाथ छलनि। अधिकांश दंतकथाक निर्माण हुनक भिन्न जीवन-शैली आ निर्भीकताक कारणें भेल। अफवाह आ अनुश्रुति द्वारा होइत लोकक मानसिक उद्वेलन मे हुनका मजा आबनि। ओ लोक कें उत्तेजित आ आंदोलित क' कए राखय चाहैत रहथि। एहि कारणें व्यावहारिक जीवन मे हुनका कतेको बेर कैक तरहक कठिनाइ भेलनि, मुदा एहि सँ ओ ने तँ कहियो विचलित भेलाह आ ने कहियो एकर परवाहि कयलनि।

एहि तरहक झूठ-साँच खिस्साक कारणें लोकक लेल ओ रहस्यमय आ विस्मयकारी व्यक्ति बनि गेल छलाह। जीवनक गोपनीय आ वर्जित विषय कें उठयबाक कारणें हुनक साहित्यो कम चौंकाबय वला नहि छल। एकर फल ई भेल जे हुनक जीवन आ साहित्य कें ल'क' लोक दू ध्रुव मे बँटि गेल। किछु लोक हुनक वैयक्तिक आ साहित्यक चरित्र कें अनिष्टकारी मानैत हुनका सँ डरय आ घृणा करय लागल, तँ किछु लोक हुनक व्यक्तित्व आ साहित्य कें युगांतरकारी बुझि हुनका मसीहा मानय लागल। जे हुनका सँ घृणा करैत रहय, ओ सभ हुनक व्यक्तिगत जीवन कें कलंकित आ मलिन करबाक चेष्टा कयलक आ हुनक साहित्य कें अश्लील एवं घटिया साबित करबाक प्रयास कयलक। जे सभ हुनका मसीहा मानय लागल छल, से सभ हुनक चारित्रिक भिन्नता कें अतिरंजित रूप दैत हुनका असाधारण एवं स्पृहणीय बनौलक आ हुनक साहित्य कें उछालि क' अनेक प्रकारक भ्रांति पसारलक। एहि दुनू तरहक लोकक रुचि आ दृष्टिक कुहेस राजकमलक जीवन आ साहित्य

केँ तेना क' तोपि देलक जे ओकर भीतर नुकायल वास्तविकताक निर्भ्रांत समझदारी एक युग धरि कठिन भ' गेल।

हुनका बारे मे कखनो ई कहल गेल जे ओ मसूरी मे जनमलाह तँ कखनो हुनका पूर्वी बंगालक विस्थापित जमींदारक उत्तराधिकारी बूझल गेल। कखनो ई छपल जे ओ 1931 मे जनमलाह तँ कखनो एहि सँ चारि साल पहिने। मनोरंजक गप्प ई छल जे ई सभ हुनक जीवन-कालहि मे भ' रहल छल, जखन ओ लेखन मे अत्यधिक सक्रिय छलाह। एहि प्रसंग मे दू टा घटना अत्यंत दिलचस्प अछि आ झूठ-सांचक खेलक रहस्योद्घाटन करैत अछि।

पहिल घटनाक उल्लेख कीर्त्तिनारायण मिश्र मैथिलीक साप्ताहिक पत्रिका 'मिथिला मिहिर'क अगस्त 1988 वला अंक मे प्रकाशित अपन संस्मरण मे कयने छथि। ओ जे किछु लिखने छथि तकर सार-संक्षेप ई अछि जे एक बेर कलकत्ता मे विद्यापति पर्वक अवसर पर काव्य-गोष्ठी आयोजित कयल गेल। आयोजकगण राजकमल चौधरी केँ बजयबाक पक्ष मे नहि छलाह, किएक तँ ओ पाइ मँगैत छलथिन। जखन कीर्त्तिनारायण मिश्र ई कहलथिन जे जँ राजकमल केँ नहि बजाओल जायत तँ हमहूँ नहि जायब, तखन आयोजकगण राजकमल केँ आमंत्रित कयलनि। कीर्त्तिनारायण मिश्रक आग्रह केँ देखैत राजकमल काव्य-गोष्ठी मे आबि तँ गेलाह, मुदा गंजी पहीरि कए आ कनहा पर तौनी रखने। ओ ओत्तहि बस टिकट पर चारि पाँतीक कविता लिखि कए सुना देलथिन। लोक बुझियो नहि सकल जे ओ कविता पढ़लनि कि कोनो आन बात बजलथिन। फेर ओ कीर्त्तिनारायण केँ संग कए राजेन्द्र छात्रावास चल गेलाह, जतय ओहि समय डॉ. सूर्यदेव शास्त्री रहैत छलाह। हुनक बिछौन खाली छलनि। ओ कतहु निकलि गेल छलाह। टेबुल पर लोटा मे पानि राखल छल। कीर्तिनारायण सुझाव देलथिन जे सूचना लेल एक टा पुरजी छोड़ि देल जाए। राजकमल कहलथिन—लोटाक पानि बिछौने पर ढारि दहुन। बिछौन तीतल देखि कए शास्त्री अपने बूझि जेताह। ओहि दिन दुपहर सँ रातिक नओ बजे धरि राजकमल आ कीर्तिनारायण संगहि छलाह। ओहि दिन ओ सभ ने तँ शराब पीने रहथि आ ने कोनो दोसर कारणेँ असामान्य छलाह। मुदा अगिला दिन ई सुनल गेल जे जँ राजकमल पीबि कए नहि अबितथि तँ समारोह आओर भव्य होइत। ओ ततेक पीने छलाह जे मंच पर बाजियो नहि भेलनि। श्रोता केँ बसक टिकट देखा कए बैसि गेलाह। ओ ततेक अनसम्हार रहथि जे कीर्त्तिनारायण पिताक डर सँ हुनका अपना ओतय नहि ल' गेलाह। राजेन्द्र छात्रावास जा कए सूर्यदेव शास्त्रीक बिछौन पर रद्द कयलनि आ समूचा कोठली केँ घिनाय देलनि। तेसर दिन जखन कीर्त्तिनारायण आ राजकमल

केँ भेंट भेलनि तँ कीर्त्तिनारायण सभ टा कथा सुनौलथिन। राजकमल हँसय लगलाह। कहलथिन—यैह तँ हम चाहैत रही। एहि बुद्धिहीन सभ केँ गप्प करबाक लेल किछु मसाला चाही। हम ई मसाला दैत रहैत छी। की ई हमर कम मैथिली सेवा थिक!

दोसर घटनाक उल्लेख अगस्त 1967क युयुत्सा मे अजित कुमार कयलनि अछि। ओ निराला आ भुवनेश्वरक नियति सँ राजकमलक नियतिक तुलना कयलनि अछि। एक बेर राजकमल अपन दोस-महिम केँ ई लिखलनि जे हुनक पलीक देहान्त भ' गेल छनि —आ नान्हि-नान्हि टा बच्चा फकसियारी कटैत अछि। मित्र सभक सांत्वना आ ढाढ़स सँ भरल पत्र पहुँचलनि तँ राजकमल पत्रक सार्वजनिक उपहास कयलनि। अजित कुमार लिखैत छथि-'राजकमल लेल ई भरिसक एक टा गंभीर मजाक छल अथवा जँ हुनक दोस-महिमक गप्प पर विश्वास कयल जाय तँ ई प्रकाशक लोकनि सँ पाइ तसीलबाक एक टा बढ़िया उपाय छल; मुदा हमरा लगैत अछि जे राजकमलक असामयिक मृत्यु हुनक एहने हँसी-मजाकक कारणेँ भेल। अपना आ अपन साहित्यक विषय मे लोकक मानस मे एक टा अत्यंत चौंकाबय वला चित्र उपस्थित करबाक लेल ओ अनेक प्रकारक करतब करैत रहैत छलाह। हुनक एक टा योजना इहो छलनि जे अपन मृत्युक असत्य कथा पसारि दी आ ई देखि क' आनन्द ली जे हिंदी वला सभ हमरा खातिर कोना कनैत अछि। एहि सभक फल यैह होइत जे भेल। ओ मरि गेलाह। जँ नहि मरितथि तँ बताह भ' जइतथि।'

ई दुनू घटना सिद्ध करैत अछि जे लोकक संग-संग राजकमलो अपना विषय मे असत्य कथा पसारलनि। लोक जे केलक, से केलक, राजकमल द्वारा एहन करब अनर्थकारी बनि गेल। हुनक आत्मवक्तव्य केँ संदेह आ अविश्वासक दृष्टिएँ देखल जाय लागल। तथापि हुनक सभ वक्तव्य असत्य आ झूठ अछि, एहन कहब ठीक नहि होयत। किछु वक्तव्य अवश्य सत्य होयत, मुदा ओकर सत्यताक दावा नहि कयल जा सकैत अछि। किछु वक्तव्य सत्य होइतो अतिरंजित भ' सकैत अछि। हुनक जीवन-परिस्थिति आ घटनाक बीच तर्कसंगत पूर्वापर संबंध स्थापित करबाक क्रम मे किछु सीमा धरि मिथ्या एवं अति रंजना केँ चीन्हल जा सकैत अछि। मुदा ई चीन्हब तर्क आ अनुमान पर आधारित होयत आ तर्क एवं अनुमान पर आधारित व्याख्या घटनाक प्रामाणिकता सिद्ध नहि क' सकैत अछि। ओकर एक टा संभव आ मान्य व्याख्या मात्र भ' सकैत अछि। राजकमलक जीवन संबंधी अनेक घटना या त' आन-आन स्रोत सँ पुष्ट होइत अछि या सर्वमान्य भ' चुकल अछि। जतय कतहु एहन नहि अछि, ततय राजकमले केँ प्रमाण मानि लेल गेल अछि। एकर बिना राजकमलक जीवन-विकास केँ रूपायित करब असंभव छल।

भूकंप, बंगाली संन्यासिन आ रासलीलाक चित्र संबंधी तीन टा घटना एहन अछि जे प्रामाणिकताक दृष्टिएँ अत्यंत विवादास्पद मानल जाइत अछि। राजकमलक आत्मवक्तव्य पर आधारित होइतो अनेक कारणेँ एहि तीनू पर गंभीर आपत्ति कयल जाइत रहल अछि। व्यक्तित्व-निर्माणक दृष्टिएँ अत्यंत महत्त्वपूर्ण आ प्रभावशाली भ' सकबाक कारणेँ एकर उल्लेख अनुपेक्षणीय अछि। मुदा एकर सत्यता अथवा मिथ्यात्वक कोनो दावा नहि कयल जा सकैत अछि। घटना पर कयल गेल टिप्पणी हमर अपन विवेकक फल थिक, जकरा मात्र संभावना आ प्रस्ताव रूप मे लेबाक चाही, कोनो आग्रह अथवा दुराग्रह रूप मे नहि।

एहि तीनू मे पहिल घटना तखन घटित भेल कहल गेल अछि, जखन राजकमल छह बरखक छलाह। 1934मे बिहार मे विनाशकारी भूकंप आयल। राजकमलक कोमल मन पर एकर गंभीर प्रभाव पड़ल आ ई घटना हुनक जीवनक अविस्मरणीय घटना बनि गेल। हुनक माय सोमवारी व्रत क' रहल छलीह। एहि व्रत मे स्त्रीगण हाथ मे पान-सुपारी ल'क' सोम देवताक एक सय आठ बेर प्रदक्षिणा करैत अछि। किछुए प्रदक्षिणा बाकी छल कि धरती कांपय लागल। आँगनक एक दिसका देबाल ढहि गेल। हुनक माय क्षण भरि बिलमि अपन पुत्र आ पति दिस तकलनि आ परिक्रमा करय लगलीह। परिक्रमा पूरा कयलाक बाद जखन ओ अल्पनाक घेरा सँ बाहर होइत छलीह कि धरती कड़कड़ायल। गोंगिआइत-कड़कड़ाइत धरती दहिना-बामा डोल' लागल। आँगन मे दरारि फाटि गेल आ पानिक पमारा फूटय लागल। राजकमलक पिता चिचिआइत पत्नी दिस दौड़लाह आ माय डर सँ अपन पति केँ भरि पाँज कए पकड़ि लेलथिन। अपन-अपन अस्तित्वरक्षाक चिंता मे हुनका दुनू केँ नेना फूल बाबूक सोह नहि रहलनि। लगे मे ठाढ़ फूल बाबू मूक भेल एहि दृश्य केँ देखैत रहलाह। जीवनक क्षणभंगुरता आ लोकक स्वार्थ सँ एहन उत्कट साक्षात्कार हुनका पहिल बेर भ' रहल छलनि। एहि घटनाक बाद ओ अपना केँ बहुत एकाकी आ निस्संग अनुभव कर' लगलाह। ई घटना प्रामाणिक नहि मानल जाइत अछि; कारण जे छह बरखक बालक द्वारा प्राकृतिक विपदाक एहन उत्कट बोध, निरीक्षण आ विश्लेषण स्वाभाविक नहि जानि पड़ैत अछि। 34क विनाशकारी भूकंप सर्वविदित अछि। विपत्तिक एहन बिंदु पर माता-पिता आ राजकमलक व्यवहार अवसरानुकूल आ उपयुक्ते कहल जा सकैत अछि। तखन ई बात अवश्य जे एहि घटना केँ राजकमल अपन जीवनक उत्तरार्द्ध मे लिपिबद्ध कयलनि आ ओहि समयक हुनक परिपक्व दृष्टि आ सोच एहि घटनाक माध्यमे व्यंजित भेल, मुदा ताहि सँ घटना केँ असत्य नहि कहल जा सकैत अछि। एहि घटना केँ प्रौढ़ावस्था मे कयल गेल अनुचिंतन एवं अनुस्मरण कहल जा सकैत

अछि। ई घटना सुनियोजित आ सुविचारित अछि कि नहि, ताहि संबंध मे किछु कहल नहि जा सकैत अछि।

भूकंपक थोड़बे दिनक बाद एक टा और अविस्मरणीय घटना घटल। एक टा बंगाली संन्यासिन हुनक घर अयलीह। एक-दू साल पहिने कोनो तीर्थ मे राजकमलक माँ सँ हुनक भेंट भेल छलनि। ओ राजकमलक माँ केँ रुद्राक्षक माला आ दक्षिणेश्वरी कालीक एक टा छोट सन चित्र देलथिन। फेर राजकमल सँ गप्प कर, लगलीह। राजकमलक दुनू हाथ पकड़ने ओ हँसैत पुछलथिन—'हमरा संग चलब ?' राजकमलक माँ भयभीत भ' गेलीह आ आशंकित होइत पुछलथिन—'कतय ल' जेबनि हिनका ? लऽ' जेबाक हो त' हमरो ल' चलू।'

तकर बाद संन्यासिन राजकमलक पिताक संग तांत्रिक साधनाक बारे मे गप्प करैत रहलीह। जखन ओ जाय लगलीह त' राजकमल हुनक पछोड़ ध' लेलथिन। माँ राजकमल केँ पकड़ि लेलथिन। हुनक पाँज सँ छूटक लेल राजकमल हाथ-पएर पटकय लगलाह। संन्यासिन पलटिक' राजकमल दिस तकलथिन आ मुस्काइत बरंडा टपि सड़क पर निकलि गेलीह। पिता राजकमल केँ बुझबैत कहलथिन—'ओ तँ आब दूर चल गेलीह। आब कत' भेटतीह ? कहियो फेर अओतीह त' चल जायब।'

मुदा राजकमल जिद पकड़ि लेलथिन। माय हुनका कोठली मे बन्न क' देलथिन। बन्न कोठली मे कनैत-कनैत ओ सूति गेलाह। राति दस बजे जखन भोजन बनि गेल तँ कोठली खुजल। थारी पर बैसल पिता खाय लेल हुनका बजौलथिन। मुदा ओ चुपचाप बाहर निकलि गेलाह। पिता हाक देलथिन। माय बजलीह—'जाय दियनु। जेताह कतय ? डर सँ घूरि अओताह।'

मुदा मायक एही विश्वास केँ खंडित करबाक लेल राजकमल निरुद्देश्य बढ़ैत गेलाह। बड़ी काल धरि घूरि क' नहि अयलाह तँ माय केँ चिंता भेलनि। तक्का-हेरी शुरू भेल। अंततः ओ स्टेशन रोडक सुनसान चौराहा लग बन्न दोकानक आगाँ राखल बेंच पर पड़ल भेटलथिन। एकरा राजकमल बचपनक घटनाक रूप मे वर्णित कयने छथि। छह-सात बरखक अल्पवयसीक संदर्भ मे ई विश्वसनीय नहि लगैत अछि। बेसी संभव जे ई घटना राजकमलक किशोरावस्था मे घटल हो। बंगाली संन्यासिन 'देहगाथा'क मदर तीर्थमयी सेहो भ' सकैत अछि।

राजकमलक व्यक्तित्व-निर्माण मे रासलीलाक निर्णायक भूमिका भ' सकैत अछि। ओ स्वयं लिखने छथि जे एक बेर नेनहि मे ककरो घर मे ओ रासलीलाक एक टा विशाल चित्र देखलथिन। चित्र हुनका बान्हि लेलकनि। ओ जहिया-जहिया ओत' जाथि, ओहि चित्र केँ बड़ी काल धरि देखैत रहि जाथि। राधा आ चौरासी

टा गोपीक संग विभिन्न मुद्रा मे चित्रित कृष्ण हुनका मोहि लेने छलनि। कृष्णक एके समय मे कोनो गोपी केँ बौंसब, कोनो गोपी सँ रूसब आ ककरो संग प्रेम करब हुनका मुग्ध क' दैत छलनि। ओ कृष्ण बनि जेबाक कल्पना करय लगैत छलाह। एक बेर अपन एकतुरिया पित्ती उपेंद्र चौधरी सँ ओ पुछनहु छलाह—'की हम एक्के समय पाँच या दस अलग-अलग आदमी बनि सकैत छी? की ई संभव अछि?'

पित्ती जवाब देलथिन—'आदमी सँ कोन चीज असंभव अछि। मुदा अहाँ एक टा फूल बाबू नहि रहि क' दस टा फूल बाबू किएक बनय चाहैत छी?'

फूल बाबू एकर कोनो जवाब नहि देलथिन। आगाँ चलि क' रासलीलाक चित्र देखबाक अनेक अवसर हुनका जीवन मे अयलनि आ हुनक मनोरचनाक अंग बनि गेलनि।

अपन व्यक्तित्व पर रासलीलाक पड़ल प्रभाव केँ अंकित करैत ओ लिखैत छथि—'कलकत्ताक ग्रैंड होटल आर्केड मे ठाढ़ भेल वा बंबइक कमला नेहरू पार्कक सामने नाज रेस्त्रा मे कॉफी पिबैत या मसूरी हिलक माल रोड पर कोनो रेलिंग पर टिकल असकरे सिगरेट पिबैत, बालिग आ बूढ़ भेलाक बादो, हम रासलीलाक ओहि चित्रक स्मरण कयने छी। हमरा इच्छा भेल अछि जे पैघ-पैघ दोकान सँ कीमती चीज किनैत प्रत्येक स्त्रीक बाँहि आ डाँड़ पर हाथ धयने अलग-अलग शरीर धारण क' घुमैत रही। एक्के समय अनेक व्यक्ति बनि जेबाक हुनक अतिप्राकृतिक इच्छा तँ उपेंद्र चौधरीक साक्ष्य द्वारा पुष्ट होइत अछि, मुदा रासलीलाक चित्र देखबाक बात राजकमले द्वारा कथित अछि। ओकर बाह्य प्रमाण ताकब निरर्थक अछि। रासलीलाक चित्र देखब ने अजगुत अछि, ने असंभाव्य। ओकर प्रभाव हुनक जीवन पर कतेक पड़लनि आ अपन अनुभवक लेल एक टा धार्मिक मिथक गढ़ि केँ ओकरा गौरव आ महिमा प्रदान करबाक इच्छा राजकमलक मोन मे रहनि कि नहि, ई निर्णय करब कठिन अछि। 'रासलीला' शीर्षक सँ हुनक एक टा कथा हिंदी मे प्रकाशित अछि। राजकमलक जीवन सँ संबंधित छोट-पैघ अनेक घटना अछि जकर सत्यासत्यक निर्णय करबाक लेल गहन छानबीन आ अनुसंधानक बेगरता अछि।

जीवन

जाहा चाइ ताहा भूल कोरे चाइ
जाहा पाइ ताहा चाइना

रवींद्रनाथ ठाकुर

जकरा प्राप्त करबाक इच्छा कयलहुँ से एक टा भ्रांत इच्छा छल, आ
जकरा प्राप्त कयल तकरा पयबाक कोनो इच्छा मोन मे नहि छल।

राजकमल चौधरी

राजकमल चौधरीक जन्म 13 दिसम्बर 1929 ई. केँ भेलनि। किछु व्यक्तिक कहब छनि जे ई राजकमलक असली जन्म-तिथि नहि अछि; ओ एही तिथि सँ दू साल पहिनहि जनमल छलाह। हुनक जन्म रामपुर हवेली नामक गाम मे भेलनि। रामपुर हवेली हुनक मातृक छलनि। ई गाम मुरलीगंज लग अछि आ आब मधेपुरा जिला (बिहार) मे पड़ैत अछि।

हुनक पैतृक गाम महिसी छलनि। ई बिहारक सहरसा जिला मे पड़ैत अछि। महिसी सहरसा रेलवे स्टेशन सँ 17 किलोमीटर पच्छिम अछि आ कोसी बाँध सँ सटले पूब बसल अछि। एहिठामक जन-जीवन पर कोसी नदीक गंभीर प्रभाव रहल अछि। प्रख्यात दार्शनिक मंडन मिश्र एही गामक छलाह।

कहल जाइत अछि जे मंडन मिश्र आ शंकराचार्यक मध्य शास्त्रार्थ महिसिए मे भेल छल। उग्रताराक शक्तिपीठ हेबाक कारणेँ धर्मस्थानक रूप मे सेहो महिसी बहुत प्रसिद्ध रहल अछि।

राजकमल नैष्ठिक ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न भेल छलाह। हुनक पूर्वज उग्रताराक उपासक रहथि। राजकमल चौधरीक दादा खुदन चौधरी संस्कृतक ज्ञाता छलाह आ समाज मे हुनक खूब प्रतिष्ठा छलनि। ओ दू टा विवाह कयने छलाह। मिथिलाक

ब्राह्मण समाज मे बहुविवाह प्रचलित छल। बहुविवाहक हाल ई छल जे वर कें इहो मोन नहि रहैत छलनि जे हुनक सासुर कोन-कोन गाम मे छनि।

राजकमलक पिता पंडित मधुसूदन चौधरी तीन टा विवाह कयलनि। कहल जाइत अछि जे मधुसूदन चौधरी ओहि परोपट्टाक पहिल ग्रैजुएट छलाह। हुनका 30-40 बीघा जमीन आ पक्काक घर रहनि। ओ गणित, साहित्य तथा संस्कृतक पंडित छलाह। ओ किछु कवितो लिखने छलाह, जे गंगा, सुधा आदि हिंदीक तत्कालीन पत्रिका मे छपल छल। असहयोग आंदोलन मे ओ किछु दिनक लेल जेलो गेल छलाह। पंडित मधुसूदन चौधरी हाइस्कूलक अध्यापक छलाह आ मधेपुरा, जयनगर, बाढ़, नवादा आदि अनेक स्थान मे रहलाह। हुनक जीवनक उत्तरार्द्ध नवादा मे बितलनि। ओ नवादा हाइस्कूलक प्रधान अध्यापक छलाह। सेवानिवृत्त भेलाक बाद ओ गाम चल अयलाह आ अंततः 10 जनवरी 1967 कें हुनक मृत्यु भ' गेलनि।

मधुसूदन चौधरीक पहिल पत्नी, परसरमावाली, निःसंतान छलथिन। तें मधुसूदन चौधरी दोसर विवाह रामपुर हवेली मे कयलनि। दोसर पत्नीक नाम छलनि त्रिवेणी देवी। पुनर्विवाहक थोड़बे दिनक पश्चात पहिल पत्नीक देहान्त भ' गेलनि। मधुसूदन चौधरी कें त्रिवेणी देवी सँ चारि टा संतान भेलनि। पहिल संतान राजकमल चौधरी छलनि, दोसर कन्या छलथिन, जे अल्पवयस मे मरि गेलथिन, तेसर धीर आ चारिम सुधीर।

राजकमल जखन दस-बारह बरखक छलाह, तखने (साकेतानंदक कथनानुसार) 1939 मे दरभंगा अस्पताल मे हुनक माताक देहांत भ' गेलनि। राजकमलक पित्ती श्री उपेंद्र चौधरीक कहब छनि जे त्रिवेणी देवीक मृत्यु 1940मे भेलनि। दोसर पत्नीक मृत्युक छबे मासक बाद मधुसूदन चौधरी तेसर विवाह जमुना देवी सँ कयलनि। विवाहक समय जमुना देवी चौदह-पन्द्रह बरखक रहल हेतीह। जमुना देवी आ राजकमलक वयस मे दुइए-तीन बरखक अंतर छल। जमुना देवी सँ मधुसूदन चौधरी कें चारि टा पुत्र आ तीन टा पुत्री भेलनि। एक टा पुत्री जीवित रहलनि, जकर नाम मदालसा अछि। राजकमल कें मदालसा सँ बड़ स्नेह छलनि। राजकमलक साहित्य मे बेर-बेर मदालसा नाम अबैत अछि। जमुना देवी एखनो जीवित छथि।

राजकमल चौधरीक असली नाम मणींद्र नारायण चौधरी छलनि। घरक लोक दुलार सँ हुनका फूल बाबू कहनि। हुनक नेनपन अपन गाम महिसी मे बितलनि। उपनयन संस्कार धरि ओ महिसिए मे रहलाह। तकर बाद मैट्रिक धरि पिताक संग-संग जयनगर, बाढ़ आ नवादा मे रहलाह। कहियो काल कोनो छुट्टी मे माता-पिता संगे गाम अबैत छलाह। हुनक माता-पिता साल मे एक-आध बेर खेत-पथार देखबा

लेल आ अन्न-पानि समेटबा लेल गाम अबैत छलाह। राजकमल अपन पिता कें लाल कका कहल करथि। राजकमल नेने सँ तेजस्वी आ चंचल स्वभावक रहथि। हुनका पढ़य मे मन नहि लगनि आ बेसी काल खेलाइत-धुपाइत रहथि। ई देखि हुनक पिता कें चिंता भेलनि। ओ एक टा उपाय सोचलनि। ओ सभ टा पाठ्य-सामग्री कें खिस्सा बना-बना राजकमल कें सुनाबय लगलाह। राजकमल कें खिस्सा सुनबाक तेहन हिस्सक पड़ि गेलनि जे ओ बड़ी-बड़ी राति धरि जागल रहि जाथि। एक राति हुनक पिता सूतल रहथिन। राजकमलक निन्न टूटि गेलनि आ ओ खिस्सा सुनाब' लेल पिता कें जगाब' लगलाह। पिता टारय चाहलनि—एखन सुतू, भोर सुनायब। राजकमल कें भेलनि जे पिता रूसल छथि। डिब्बा सँ बिस्कुट निकालि क' अनलथि आ पिता कें दैत कहलथिन—लाल कका, रूसू नहि। बिस्कुट खा लिअ आ खिस्सा सुनाउ।

राजकमलक एहि बाल-सुलभ आचरण सँ पिता विह्वल भ' गेलाह आर हुनका छाती सँ सटा लेलथिन। अपन माँक स्नेह राजकमल कें बेसी दिन नहि भेटि सकलनि। वयसक दृष्टिएँ छोटकी सतमाय आ हुनका मे कोना बेसी अंतर नहि छल। तें राजकमलक मन मे हुनक ओ स्थान नहि बनि सकल, जे जेठकी सतमाय वा अपन मायक छल। अपना सँ कनेके छोट बालकक लेल मायक भूमिका निबाहब जमुना देवीक लेल निश्चय बहुत उकड़ आ कठिन रहल हेतनि। छोटकी सतमायक प्रति राजकमलक मन मे पूर्ण श्रद्धा नहि भ' सकलनि। सदैव एक टा विरोध-भाव रहलनि। एहि विवाहक लेल ओ अपन पिता कें कहियो क्षमा नहि क' सकलाह।

तेसर विवाहक बाद पिताक बदलल दृष्टिक बारे मे राजकमल लिखैत छथि—सतमायक आगमन सँ पहिने पिताजी हमर परिचय एक टा प्रतिभाशाली बालकक रूप मे करबैत छलाह, मुदा सतमायक आगमनक बाद हुनका नजरि मे हम सभ सँ कम प्रतिभाशाली आ निरीह बनि गेलहुँ। बहुत बाद मे एक टा पत्र मे अपन छोट भाइ कें ओ जे किछु लिखलनि ताहू सँ संकेत भेटैत अछि जे सतमायक आगमनक बाद हुनक जीवन आओर अधिक दुखमय भ' गेल हेतनि। अपन अनुज सुधीर कें ओ लिखलनि—ई कलकत्ता शहर अजीब जगह अछि। पिताजी आ सतमायक घृणा बरदाश्त क' सकी तँ ओतहि रहू। जीवन सँ लड़बाक सामर्थ्य हो तँ एतय चल आउ।

मायक मृत्यु आ सतमायक आगमनक बाद राजकमल घर सँ आ पिता सँ दूर होइत गेलाह। ओ पहिनहुँ सँ पिता द्वारा उपेक्षित अनुभव करैत रहल छलाह। ओ लिखैत छथि जे पिताक ट्रांसफरक संग-संग ओ एक टा फालतू सामान जकाँ एक शहर सँ दोसर शहर बौआइत रहल छलाह।

पुनर्विवाहक बाद हुनक पिता ट्यूशन मे आ नव पत्नीक तुष्टि आ प्रसन्नता

मे लागल रहैत छलाह। राजकमल लिखैत छथि जे ओहि समय मे पिता हुनका प्रतिद्वन्द्वी जकाँ बुझ' लागल छलथिन आ हुनकर रवैया आक्रामक रहैत छलनि। एहि प्रतिद्वंद्विताक आभास हुनक 'सीताक मृत्यु: अहिल्याक जन्म' कविता मे भेटैत अछि। कविताक किछु आरंभिक पाँती अछि—

बिना कयने धरम-समाजक लोक-लाजक कोनो परवाहि
वृद्ध पितामह अनने छथि खोडषी केँ बिआहि...
पंडित सुधाकर जीक धर्मपत्नी द्वितीया, स्वकीया
आ हमर नवजात वासना परकीया
दुन्नू अछि बान्हल कुल-शील ससरफानी सँ
वैवस्वत मनुक महावाणी सँ

उपेंद्र चौधरी कहैत छथि जे मैट्रिक पास कर' सँ पहिने राजकमल अत्यंत धार्मिक प्रवृत्तिक छलाह। हुनका गीता आ दुर्गासप्तशतीक संभ टा श्लोक कंठस्थ छलनि। पिता हुनका नैष्ठिक ब्राह्मण आ आज्ञाकारी बालक बनबय चाहैत छलथिन। हुनका भिनसरबे मे उठय पड़नि। उठि क' भारतक इतिहास पढ़य पड़नि। नीरस आ निष्प्राण तिथि सभ रटय पड़नि। हुनकर पिताक विश्वास छलनि जे इतिहास आओर सभ विषय सँ बेसी जरूरी विषय अछि। जे व्यक्ति अपन परिवार, अपन गाम, अपन देशक इतिहास नहि जनैत अछि; ओहि महापुरुष सभ केँ नहि जनैत अछि जे ओकर खानदान आ ओकर देश मे जनमल, ओ अपन जीवन मे किछु नहि क' सकैत अछि। मुदा इतिहासक मुरदा तारीख रटबा मे राजकमलक रुचि नहि रहनि।

राजकमल लिखने छथि जे पारम्परिक ब्राह्मण संस्कार मे दीक्षित करबाक लेल हुनकर पिता लग कुल तीन टा उपाय छलनि—आज्ञा, उपदेश आ मारि-पीट। आठ सँ ल' क' सोलह सालक उमेर धरि हुनका पिटाइ लगैत रहलनि आ ब्रह्मचर्य, ब्राह्मणत्व, अपरिग्रह, आज्ञाकारिता आदिक विषय मे उपदेश सुनय पड़लनि। उपदेश दैत काल पिता एक टा एहन बालकक दृष्टांत दैत छलथिन जे अपन पिताक आज्ञाक कारणेँ जहाजक डेक पर अचल ठाढ़ रहि गेल आ आगि लगला पर जरि केँ सुड्डाह भ' गेल रहय। पिताक इच्छा रहनि जे राजकमल ओहने आज्ञाकारी बालक बनय। मुदा राजकमल ओहि बालक केँ मूर्ख आ घृणास्पद मानैत रहथि। ओहि पितृभक्त आज्ञाकारी बालकक आदर्श आ प्रतिमानक प्रति हुनक मन मे उपेक्षा आ अवज्ञाक भाव उत्पन्न भेल। सतमायक आगमनक बाद पिताक उपेक्षा सहैत मातृहीन राजकमल एकाकी, दुखी आ दिशाहारा बनि गेलाह। तेसर विवाह सँ मधुसूदन चौधरी केँ जे

भौतिक सुख भेटल होनि, मानसिक रूपेँ ओ अशान्त भ' गेलाह। हुनका मन मे कतहु ई बात अवश्य रहनि जे विवाह क'क' ओ नीक नहि कयलनि। विवाहक प्रति राजकमलक विरोधी मनोभावक ज्ञान सेहो हुनका छलनि। एकर अतिरिक्त ओ एहन कन्या सँ विवाह कयने छलाह जे अवस्था मे हुनका सँ बहुत छोट आ राजकमलक उमेरक रहनि। समवयस्कताक कारणेँ जमुना देवी आ राजकमलक पारस्परिक आकर्षणक संभावना हुनका निरन्तर आशंकित कयने रहैत हेतनि। मधुसूदन चौधरीक एहि जटिल आ विचित्र मन:स्थितिक प्रभाव पिता-पुत्रक सहज सामान्य संबंध पर पड़ल। दुनूक बीच जे निजता आ अपनत्व हेबाक चाही से दूरी आ कटुता मे बदलैत गेल। सखा-भाव आ मातृ-भावक द्वन्द्व सँ गुजरैत जमुना देवीक आचरण राजकमलक प्रति सहज नहि रहल हेतनि। फलत: ओ परिवार सँ कटय लगलाह। घर सँ अलग बाहरक संसार मे स्नेह आ सहानुभूति हुनका एहन लड़का सभ सँ भेटलनि, जे दिन भरि आवारागर्दी कयने फिरैत छल। राजकमल जखन कोनो कारणेँ घर सँ दुखी भ' जाथि तँ पड़ा क' ओकरा सभक संगति मे चल जाथि। ओतय हुनका उन्मुक्तता आ आनन्द भेटनि। ओकरा सभक संगे ओ कहियो ताश खेलथि, कहियो ताड़ी पीबथि, कहियो नौटंकी देखैत 'रात भर रइयो, सुबेरे चले जइयो जी'क हुल्लड़ मे संग दैत रहथि। एकबेर नौटंकीक लौंडा जकाँ ओ पैघ-पैघ जुल्फी बढ़ा लेलनि। पिता केँ जखन असहाज भ' गेलनि तँ नौआ केँ बजबा क' हुनक मूड़न करा देलथिन। घर मे अपमानित आ प्रताड़ित भेला पर जखन ओ क्रुद्ध भ' जाइत छलाह तँ सामान केँ तोड़य-फोड़य लगैत छलाह वा कोनो वस्तु चोराक' ककरो द' अबैत छलाह। एक बेर ट्रंक सँ सतमायक साड़ी चोरा क' शकुन केँ द' आयल रहथिन। शकुन हुनका ओतय नौड़ीक काज करैत छलि।

राजकमल 15-16 वर्षक वयस मे कविता लिखब शुरू कयलनि। नवादा हाइस्कूल मे कोनो शिक्षक कविता करैत छलाह। एक दिन हुनक कोनो कविता सुनैत काल हुनका लगलनि जे ओहो कविता लिखि सकैत छथि आ ओ कविता लिखब शरू क' देलनि।

राजकमल 1947 ई. मे नवादा हाइ स्कूल सँ मैट्रिकुलेशनक परीक्षा पास कयलनि। राजकमलक अनुज सुधीर लिखैत छथि जे नवादा हाइ स्कूल मे 23 जनवरी 1946 केँ नेताजीक जन्म दिवसक अवसर पर एक टा घटना घटल। स्कूलक छत पर चढ़ि क' राजकमल तिरंगा झंडा फहरौलनि आ नारा लगौलनि—इंकलाब-जिन्दाबाद। नीचाँ मैदान मे चलैत क्लास सँ जवाबी नारा लागल—तिरंगा झंडा जिन्दाबाद, फूल राजा जिन्दाबाद। स्कूलक लगे थाना छल। सिपाही सभ स्कूल केँ

घेरि लेलक। मुदा राजकमल छत सँ कूदि क' पड़ा गेलाह।

मैट्रिक पास कयलाक बाद राजकमल नवादा सँ पटना चल अयलाह आ बी.एन. कॉलेज मे आइ.ए. मे नाम लिखौलनि। उपेंद्र चौधरीक कहब छनि जे जखन ओ नवादा सँ पटना अबैत छलाह तँ पिता अभ्यासवश चारि सय बियालिस टा निषेध-मंत्र देलथिन—बाउ, एना नहि करिहह। बाउ, ई नहि खइहह। बाउ, ओतय नहि जइहह।

राजकमल पर एहि निषेध-मंत्रक कोनो प्रभाव नहि पड़ल। पटना आबि क' ओ पूर्ण स्वतंत्रताक अनुभव कयलनि।

ओ बी.एन. कॉलेजक हॉस्टल मे रहैत छलाह। जहिया सँ काव्य-रचना दिस प्रवृत्त भेल छलाह, तहिया सँ अध्ययन बढ़ि गेल रहनि। पटना अयला पर साहित्यक विशेष अध्ययन कायम रहलनि। एही काल मे हुनक झुकाव चित्रकला दिस भेलनि। ओ चित्रकला सँ सम्बन्धित पोथी पढ़लनि आ रेखांकन करब शुरू कयलनि। राजकमल मे किछु एहन गुण रहनि जे हुनका ककरो संग परिचय करय मे देर नहि लगनि। लड़की सभ हुनका प्रति सहजहि आकृष्ट भ' जाइत छलि। हुनकर हॉस्टलक बगले मे शोभना झा नामक एक टा लड़की छलीह। हुनक पिता पुरातत्व विभाग मे इंजीनियर रहथि। शोभना सँ राजकमलक परिचय भेलनि आ ओ ओहि परिवार मे घुलि-मिलि गेलाह। एक बेर पिताक अनुपस्थिति मे शोभनाक छोट भाइ दुखित पड़ि गेलथिन। राजकमल बहुत तत्परता सँ हुनक चिकित्सा करबौलथिन आ सेवा कयलथिन। शोभना आ राजकमल मे प्रगाढ़ रागात्मक संबंध भ' गेल। राजकमल शोभना केँ कहल करथि जे हम अहीं सँ विवाह करब।

मुदा शोभनाक पिताक ट्रांसफर भ' गेलनि। ओ भागलपुर चल गेलाह। शोभनाक भागलपुर चल गेलाक बाद राजकमल आइ.ए.क पढ़ाइ बीचहि मे छोड़ि देलनि। ओ लगभग एक वर्ष पटना मे रहल हेताह। पिता केँ कहलथिन हम आर्ट्स नहि पढ़ब, कॉमर्स पढ़ब आ उपेन कका संगे भागलपुर मे रहब। एकसर रहय मे मन नहि लगैत अछि। पिता केँ शोभना-प्रसंग बूझल नहि छलनि। ओ राजी भ' गेलथिन। फलत: 1948 मे ओ भागलपुर चल गेलाह आ मारवाड़ी कॉलेज मे आइ.कॉम. मे नाम लिखौलनि। राजकमल आ उपेंद्र चौधरी दुनू एक्के संग आदमपुर मोहल्ला मे रहैत छलाह। शोभना भागलपुर नया टोला मे रहैत छलीह। राजकमल आ शोभनाक बीच फेर सँ सम्पर्क भेल, मुदा एहि सम्पर्क मे पहिलुका ताप आ व्याकुलता नहि छल। आर्थिक-सामाजिक स्तर-भेद आ जीवनक व्यावहारिकताक कारणेँ दुनूक संबंध धीरे-धीरे समाप्त भ' गेलनि।

भागलपुर मे उपेंद्र चौधरीक संग रहितो राजकमलक अपन किछु भिन्न आ

स्वतंत्र जीवन रहनि, जे अज्ञात अछि। उपेंद्र चौधरी कहैत छथि जे ओ हुनका सँ चोरा क' सुन्दरवन आ आओर पता नहि कतय-कतय चल जाथि आ रम, ह्विसकी, पोर्ट हुनकर संगी होनि। साहित्य-सृजन सेहो हुनका उपेंद्र चौधरी सँ अलग करनि। एक राति ओ उपेंद्र चौधरी सँ एक टाका मँगलथिन। उपेंद्र चौधरी केँ आश्चर्य भेलनि जे एतेक राति क' हुनका कोन बेगरता भ' गेलनि आ सेहो एक टाका केर। ओ पुछलथिन—की करब ? तँ राजकमल जवाब देलथिन—मन होइए जे एगो टाका द' क' कोनो रिक्सा पर बैसि जाइ आ एहि इजोरिया राति मे रिक्सावला हमरा आदमपुर चौराहा सँ माणिक सरकार चौराहा धरि गड़कौने ल' जाय।

शोभना संगे प्रेम संबंधक विफलता, साहित्यिक वृत्ति आ अन्यान्य व्यसनक कारणेँ राजकमल कॉमर्सक पढ़ाई पर ध्यान नहि द' सकलाह। आइ.कॉम.मे फेल भेलाक बाद ओ भागलपुर छोड़ि क' गया चल गेलाह आ गया कॉलेज मे नाम लिखौलनि। साकेतानन्द लिखने छथि जे ओ बी.कॉम. मे सेहो एक बेर फेल भेलाह। प्रमाणपत्रक अनुसार बी. कॉम. कयलाक बाद 6.7.'54 केँ ओ कॉलेज छोड़ि देलनि।

जखन ओ बी.कॉम.मे प्रवेश कयने छलाह, तखने 13.7. 51 केँ हुनक विवाह चानपुरा (दरभंगा)क शशिकान्ता चौधरी सँ भ' गेलनि। विवाहक समय ओ बाइस-तेइस बरखक रहल हेताह। ई सोचि क' जे आब ओ विवाहक सर्वथा योग्य भ' गेल छथि; पिता जल्दी सँ जल्दी हुनक विवाह करा देब' चाहैत छलथिन। मुदा राजकमल एखन विवाह लेल तैयार नहि छलाह। पिता केँ होनि जे विवाहक वयस बीतल जाइत छनि। अंतत: राजकमल केँ मनयबाक लेल तार द्वारा महिसी सँ उपेंद्र चौधरी केँ नवादा बजाओल गेल। चारू दिस सँ घेरला पर आ अत्यधिक दबाव देला पर विवाहक लेल ओ राजी भेलाह। हुनका सौराठ ल' जायल गेल आ ई विवाह ओतुक्के सभा मे तय भेल। हुनक पत्नी शशिकान्ता अत्यल्प शिक्षा प्राप्त, धार्मिक संस्कारवाली, परदा कयनिहारि आ अत्यंत व्यावहारिक महिला छलीह। बी.कॉम. कयलाक बाद चारू दिस सँ हुनका पर दबाव पड़य लगलनि जे अर्थोपार्जन लेल ओ कोनो काज-धंधा शुरू करथि। फलत: रोजगारक खोज मे ओ पटना चल अयलाह। शुरू मे किछु दिन धरि ओ कोनो दैनिक अखबार मे प्रूफ रीडरक काज करैत रहलाह। फेर पटना सचिवालय मे लोअर डिवीजन क्लर्कक नोकरी पकड़ि लेलनि। एहि परिस्थितिक विडम्बना केँ ओ हितोपदेश शीर्षक कविता मे व्यक्त करैत छथि—

राति खन भोजन काल कहलनि सतमाय
बाउ, बहराउ कविताक कोहबर सँ
नौकरी-चाकरीक करू उपाय

अहाँ असकरे नइँ छी
एक टा कन्याक हाथ छिअइ धएने
नइँ चलत काज
कालिदास वाणभट्ट विद्यापति कएने
विक्रमादित्य, श्रीहर्ष, लखिमा ठकुराइन सभ
भ' जाथु स्वाहा
जाइ छी, फोलब पान-बीड़ीक दोकान दरभंगा
टावर-चौराहा

ई ठीक-ठीक ज्ञात नहि अछि जे पटना सचिवालयक शिक्षा विभाग मे नोकरी करब ओ कहिया शरू कयलनि। बेसी संभव ई लगैत अछि जे ओ 1955क आरंभ मे ई नोकरी धयलनि आ रामकृष्ण मिशन लेन मे किराया पर घर ल'क' रहय लगलाह।

ओहि समय केँ स्मरण करैत सारिका मे प्रकाशित भैरवी तंत्र मे ओ लिखैत छथि—54-55मे पत्नी-ए क चलते हमरा सचिवालय मे नोकरी करय पड़ल, रामकृष्ण मिशन लेन मे दू कोठलीवला सस्ता फ्लैट लेब' पड़ल आ मन मे अवधारि लेब' पड़ल जे जे हाल सभक होइत छै —किरानीक, मास्टरक आ छोट-छोट बाबू सभक, सएह हाल हमरो हएत : बी.ए. किया, नौकर हुए, पेंशन मिली और मर गए—अकबर इलाहाबादीक ई शेर हमरे पर लागू होमय लागल। हम ई गप्प कहियो नहि बाजल, मुदा दरभंगा जिलाक एक टा अनभोआर गामक ई अपरिचित औरत, जे कम उमेरक होइतहु लड़की नहि छलि, औरते छलि, हमरा भीतर अपना लेल घृणे-घृणा उपजौलक—शशि बहुत कनैत छलीह। हम जखन करौट फेरि क' सूति रही, दोस-महिम मे बैसि शतरंज खेलाइ, किछु पाइ जमा क'क' रूस वा फ्रांस भागि जेबाक योजना बनाबी तँ शशि बहुत कनैत छलीह।

1954 मे मैथिली जगत मे प्रकाश मे अयलाक बाद हुनक साहित्यिक सम्पर्क बढ़ि गेलनि। ललित सँ हुनक सम्पर्क विवाहक बादे भ' गेल रहनि। हुनक सासुर ललितेक गाम मे रहनि। जखन राजकमल सचिवालय मे नोकरी करैत रहथि तँ ललित प्रतियोगिता परीक्षाक चक्कर मे पटना गेला पर राजकमलेक डेरा पर टिकैत छलाह। ललित लिखैत छथि जे राजकमल अद्भुत मित्र आ आवेशी लोक रहथि। पटना-प्रवास मे अधिक काल ललित क पाइ घटि जानि। ललितक एहि अवस्था केँ कोनो अंतर्यामी जकाँ राजकमल बूझि जाथि आ टिकट, रिक्सा आ खाना सभक खर्च हुनका द' देल करथि।

राजकमल सचिवालय मे नौकरी करिते रहथि तखने मसूरीक सावित्री शर्मा संग हुनक पत्राचार शुरू भेल। सावित्रीक पत्र ओ पटनाक अपन पता पर नहि मँगा क' ललितक दरभंगावला पता पर मँगबथि। ललित एहि प्रकारक संबंधक विरोधी रहथि। तथापि सावित्री संगे राजकमलक पत्राचार बढ़ैत गेलनि आ 22 जुलाइ 1956 केँ ओ दुनू विवाह क' लेलनि। (राजकमलक जीवन संबंधित समस्त तिथि कारखानाक राजकमल पर केन्द्रित विशेषांक सँ लेल गेल अछि।) सावित्री सँ राजकमलक परिचय कोना भेलनि आ ई परिणय मे कोना परिणत भ' गेल—तकर कोनो प्रामाणिक जानकारी नहि अछि।

देहगाथा मे एहि प्रेम-प्रसंगक विशद् चित्रण भेल अछि। सावित्री शर्मा अत्यंत धनाढ्य परिवारक छलीह। राजकमलक सम्पर्क मे अयबा सँ भरिसक दू-तीन बर्ख पहिने ओ विधवा भ' गेल छलीह। हुनका कोनो संतान नहि छलनि।

सावित्री संग विवाह कयलाक बाद जखन छओ अगस्त केँ राजकमल पटना घुरल छलाह तँ हंसराज केँ ओ एक टा पत्र लिखलनि—हम आइए बीस-पच्चीस दिनक महायात्रा (हरिद्वार, ऋषिकेश, बदरीनारायण) सँ घुरल छी। एगारह दिनक बाद ओ फेर लिखैत छथि—'आ हंसराज, एहि जीवनक उद्देश्य थिक मात्र ज्ञान-प्राप्ति आ ज्ञान-वितरण। से प्राप्तिक जे माध्यम हो, विष वा विषया, पएबा मे कोनो कोताही जुनि करब।'

दस नवम्बर केँ ओ फेर चिट्ठी लिखैत छथि—'प्रिय हंसराज, गत डेढ़ मास सँ हम पटना मे नइँ छी। पुन: हिमालय-यात्रा पर गेल छलहुँ।'

ई महायात्रा आ हिमालय-यात्रा निश्चय मसूरी-यात्रा अछि। 18-19 नवम्बर केँ जखन ओ दरभंगा गेल छलाह तँ हुनका संग विदाइवला अनेक वस्तु-जात रहनि। ललित लिखैत छथि—56 मे राजकमल जखन दरभंगा आयल तँ संग मे नव वस्तु-जात रहैक, विशेष क' आंगुर मे प्लेटिनम केर अँगूठी। विदाइक वस्तु-जात। कोडक केर फोल्डिंग कैमरा। 56क दिसम्बर मे ओ फेर मसूरी चलि गेलाह। ओ ने ऑफिस मे कोनो सूचना देलथिन, ने कोनो दोस-महिम केँ कहलथिन आ सभ किछु छोड़ि क' अकस्मात चल गेलाह। एहि बेर ओ स्थायी रूप सँ ओतय रहबाक लेल गेल छलाह। मसूरी मे ओ 2 जुलाइ 57 धरि रहलाह। धर्मयुग मे प्रकाशित आत्म-कथ्य मे ओ अपन मसूरी-जीवनक बारे मे लिखैत छथि—'असल मे ओ प्रेम नहि छल, मात्र शारीरिक सौन्दर्य, सुख आ ऐश्वर्य छल।'

सावित्रीक शारीरिक आकर्षण सँ राजकमल जल्दिए उबिया गेलाह। मसूरी मे सात मासक निकटता एहि संबंधक नवीनता केँ खतम क' देलक। ओ संतोष नामक

एक टा दोसर लड़कीक प्रति आकृष्ट भ' गेलाह। बुझाइत अछि संतोष सावित्रीक भतीजी छलीह जे देहगाथा मे मिनियाक रूप मे चित्रित भेल छथि। संतोष सँ हुनका प्रगाढ़ आत्मिक लगाव भ' गेल छलनि। ई लगाव विरह-वेदनाक रूप मे हुनक मैथिली-हिंदीक अनेक कविता मे व्यक्त भेल अछि। मैथिली मे 'बसंतक प्रतीक्षा' एवं 'असमाप्त कथा : असमाप्त पत्र' एहि दृष्टि सँ उल्लेखनीय अछि। एहि प्रेम-संबंधक कारणेँ सावित्रीक परिवार मे राजकमलक स्थिति प्रतिकूल आ विकट भ' गेलनि। मसूरी मे हुनका पर नौकरी वा व्यवसाय करबाक दबाव पड़ैत रहल, मुदा ओ तँ एहि सभक लेल बनले नहि छलाह। व्यवसाय तँ हुनका सँ भइए ने सकैत रहय। नोकरियो जहिया जे कयलनि, से मजबूरिए मे कयलनि। ताबेदारी करब हुनक स्वाभिमान केँ सह्य नहि छलनि। फेर सावित्री-परिवार केँ कथूक कमी नहि छल; तखन ओ कथी लए किछु करितथि। ओ सावित्री-परिवारक वैभवक उपभोग करैत रहलाह। मुदा एहि भोग-विलास मे हुनका सदैव पराधीनताक बोध होइत रहलनि।

संतोष संगे हुनक संबंध बहुत गंभीर स्थिति मे पहुँचि गेल छलनि। संतोष हुनका संग उढ़रि जाय चाहैत छलीह। मसूरी मे राजकमल केँ शशिकान्ताक पत्र एक टा मित्रक पता पर अबैत रहैत छलनि। सावित्री-परिवार केँ एहि गुप्त पत्राचार आ शशिकान्ता संग राजकमलक संबंधक आभास भ' गेल। एहि सभ कारणेँ मसूरीक स्थिति विस्फोटक आ तनावपूर्ण भ' गेल। राजकमल घरक दमघोंटू वातावरण सँ पड़ायल फिरथि आ निशां मे मातल बहुत राति केँ घुरथि। एक दिन निशाभाग राति मे घुरलाह। ततेक पीबि लेने छलाह जे कोनो चीजक सोह नहि रहलनि। सीढ़िए लग पड़ि रहलाह। बड़ी काल बाद सावित्री देखलकनि। उतरि क' नीचाँ अयलीह आ उठा क' उपर लए जेबाक प्रयास कयलथिन। नहि ल' जा भेलनि तँ ओत्तहि छोड़ि देलथिन, मुदा आंगुर सँ प्लेटिनमक औंठी निकालि लेलथिन।

भोर मे जलखै करैत काल राजकमल कहलथिन—ओ औंठी द' दिअ'। सावित्री कहलकनि—नहि, ओहि औंठीक खातिर कहियो अहाँक जान चलि जायत।

कनी काल चुप रहलाक बाद राजकमल बजलाह—आइ हम चल जायब।

केयो किछु नहि बाजल। एक टा औनाइत चुप्पी पसरल रहल। आ गर्भवती सावित्री केँ छोड़ि राजकमल विदा भ' गेलाह। हुनका लग ओतबे पाइ रहनि, जाहि सँ ओ पटना पहुँचि सकितथि।

3 जुलाइ 57 केँ ओ सभ दिनक लेल मसूरी छोड़ि देलनि। वैभव आ ऐश्वर्यपूर्ण जीवन छूटि गेलनि। बचि गेलनि संतोषक स्मृति, जे रहि-रहि क' पीड़ित करैत रहलनि—

केहन छल ओ भूख केहन छल ओ पियास
एक जुग धरि करइत रहलहुँ स्वप्न के हम आस
खाइत रहलहुँ आत्मा के दाह
पिबइत रहलहुँ नयन-जल नोनछाह
मग्न रहलहुँ प्रणयदीक्षा मे।
अज्ञातिनी विदेशिनी अनागता अनामा प्रियाक मिलन प्रतीक्षा मे ओना
त' गप्प ई बूझल छल—
जे ई सभ थिक छलना, ओ सभ थिक छल
जे स्नेह थिक मिथ्या, प्रेम थिक प्रताड़ना, मिलन थिक अनर्थ
जे चारि पइसाक आगाँ नइँ एहि सभक किछुओ अर्थ
(वसंतक प्रतीक्षा)
कलकत्ता-प्रवास के हे संगी योगिराज
भय गेल समाप्त जे कथा पुनः कहबा के कोन काज?
केवल संतोष (की भेटि सकत पुनि हमरा?)
नइँ परोक्ष मे सभ टा वसंतसुख सिसोहि लेत कोनो नव भमरा?
(असमाप्त कथा : असमाप्त पत्र)

जुलाइ 57 मे मसूरी छोड़लाक बाद राजकमल तीन-चारि मास धरि पटना, दरभंगा आ नवादा करैत रहलाह। मसूरीक निश्चिन्त आ विलासमय जीवन आब कोनो बीतल सपना भ' गेलनि। सोझाँ मे आबि गेलनि अभाव, विपन्नता आ भविष्यक अनिश्चितता। नोकरी छुटिए गेल छलनि। आब कतय रहताह, की करताह—ई दुश्चिन्ता परेशान करय लगलनि। जीवनक जाहि दुरावस्था मे ओ प्रवेश क' गेल छलाह, जे हुनक अपने सिरजल छलनि। तेँ घर-परिवार, सर-संबंधी जकरे लग जाइत छलाह, तकरे लग विरोध आ आलोचना सुनय-सहय पड़नि। राजकमल केँ अपन पछिला जीवन लेल कहियो कोनो अपराधबोध आ पछतावा नहि भेलनि। भेलनि मात्र दुख। पटना, दरभंगा आ नवादाक चकभाउर दैत ओ निश्चय करैत रहलाह आ निर्णय कयलनि जे हुनका कलकत्ता चल जेबाक चाही। मिथिलाक लोक बहुत प्राचीन काल सँ रोजगारक खोज मे आसाम आ बंगाल जाइत रहय। हजारो-हजार मैथिलक रोजी-रोटी कलकत्ता सँ चलैत रहै। कलकत्ता मे रोजगारक अनेक अवसर आ महानगरीय आकर्षण रहै। कलकत्ता मे ओ विरोध आ आलोचना सँ दूर मनोनुकूल जीवन बिता सकैत रहथि। फलतः ओ कलकत्ता चल गेलाह। कहिया गेलाह से ठीक-

ठीक ज्ञात नहि अछि मुदा अनुमान अछि जे ओ 57क नवम्बर मे कहियो गेल हेताह।

कलकत्ता मे हुनकर अप्पन क्यो नहि छलनि। हुनक लेखन सँ परिचित अनेक मैथिल छल। कलकत्ता मे हुनक एकमात्र संबल छलनि यात्री जीक चिट्ठी, जे ओ हिंदी लेखक छेदीलाल गुप्तक नामे लिखने छलथिन—ई राजकमल अछि। कलकत्ता जा रहल अछि तोरा लग। छेदीलाल गुप्त कलकत्ताक पत्रकारिता जगत सँ जुड़ल लोक सभ सँ हुनकर परिचय करबौलथिन, जाहि सँ राजकमल अपन जीविका चला सकथि। एक टा दैनिक पत्र मे हुनक काजक व्यवस्थो भ' गेलनि मुदा ओ ओतय नहि गेलाह। पुछला पर जवाब देलथिन जे हम ओतय खपि नहि सकब। मैथिलीक प्रसिद्ध सेवक आ उन्नायक श्री बाबूसाहेब चौधरी ओहि समय मे मिथिला दर्शन नामक एक टा मासिक पत्रिकाक प्रकाशन करैत रहथि। राजकमल मिथिला दर्शन सँ जुड़ि गेलाह। मुदा मात्र एहि पत्रिका सँ हुनक जीविका नहि चलि सकैत छलनि। एहि पत्रिकाक व्यावसायिक आधार बहुत सुदृढ़ नहि छल, तेँ राजकमल केँ आरंभ मे थोड़ेक ट्यूशन करए पड़लनि। हुनका पर आर्थिक दबाव निरन्तर बनल रहलनि। 12 अप्रैल 58 केँ हंसराजक नामे लिखल एक टा चिट्ठी मे ओ लिखैत छथि—'पहिली मइ केँ दरभंगा पहुँचब असंभव अछि... जीवन मे आर्थिक व्यवस्था अनबाक सरंजाम मे व्यस्त, अतिव्यस्त छी।' पत्र सभ सँ ज्ञात होइत अछि जे ओहि काल मे ओ स्थिर रूपेँ कलकत्ता मे रहय चाहैत छलाह आ ताहि लेल एक टा सुदृढ़ आधारक खोज मे छलाह।

मिथिला दर्शन आर्थिक तंगीक कारणेँ अप्रैल मे बंद भ' गेल। एहि पत्रिका सँ हुनका जे थोड़-बहुत आर्थिक सहायता भेटैत छलनि, तकरो रास्ता नहि रहल। अप्रैल सँ सितम्बर धरि राजकमल अपन आर्थिक भविष्यक अन्वेषण हिंदी पत्रकारिताक क्षेत्र मे करैत रहलाह। रूपलेखा, नया संसार, स्वाधीनता, विनोद, शनीचर आदि विभिन्न पत्र-पत्रिका मे ओ एक संग अनेक नाम सँ धुरझार लिखय लगलाह, जाहि सँ हुनका पाइ भेटनि।

अक्तूबर 58 मे ओ भारतीय ज्ञानपीठ मे नोकरी क' लेलनि। हंसराज केँ एक टा पत्र मे ओ लिखैत छथि—8.10.58क पत्र काल्हि सायंकाल भेटल अछि। स्वरगंधा सम्बन्धित अहाँक लेख मिथिला दर्शनक नवम्बर अंक मे जा रहल अछि। पत्र गत सात मास सँ बंद छल। अक्तूबर अंक बहरायल अछि। आब बराबरि बहरायत। हम मिथिला दर्शन सँ आब कोनो तरहें सम्बन्धित-सम्पर्कित नहि छी। कारण, समय नहि अछि। हम भारतीय ज्ञानपीठ मे पुस्तकादि-संपादन कार्य कए रहल छी।

भारतीय ज्ञानपीठक नोकरी सँ हुनका एक टा निश्चित आमदनीक ठहार भ'

गेलनि। ओ एक टा मकान किराया पर ल'क' रहय लगलाह। पत्नी शशिकान्ता केँ सेहो कलकत्ता बजाय लेलथिन। फेर डेरा बदलि लेलनि। चल गेलाह पियारा बगान। पुतियारी पूर्व मे एक टा घर ठीक केलनि। भारतीय ज्ञानपीठक नोकरी सँ ओ बहुत संतुष्ट नहि छलाह। 19.11.59 केँ, जखन ज्ञानपीठ मे नोकरी करैत हुनका एक साल सँ बेसी भ' गेल छलनि, ओ हंसराज केँ एक टा पत्र मे लिखलनि—'अहाँ अनायासे उगइत छी, अनायासे डूबि जाइ छी। ई छंदहीनता कखनउँ हमरा नीक लगइए, कखनउँ अधलाह। एखनधरिक हमरो जीवन एहने रहल अछि। दरभंगा-पटना-दिल्ली-मसूरी। तकरा बाद ई कलकत्ता। पारिवारिक जीव हम—अहाँ नइँ छी। मुदा बताह-विक्षिप्तो नहि छी जे अकारण बौआइत रही—जनसागर मे भसिआइत रही। ई सत्त जे हम सभ असाधारण लोक छी। साधारण लोकक दिनचर्या-जीवनचर्या हमरा सभक लेल नइँ। तखन एक टा गप आर अछि—हमर पत्नी, अहाँक पत्नी, आ आर्थिक समस्या। स्वेच्छा सँ बिआह कयने छी, तेँ पत्नी केँ संगे राखि, अपना संगे बौआइत रहबाक उपयुक्त बनाउ। से नइँ हो, आ बौआयब अधिक जरूरी बुझना जाए तँ पत्नीक परित्याग कए भगवान बुद्ध बनि जाउ। इति उपदेश:। हम आ शशिकान्ता कलकत्ते छी। आब कतेक बर्ख धरि अहीठाम रहब। जीविकाक कोनो उपयुक्त साधन नहि अछि, मुदा एतबा उपार्जन अवश्य अछि जे भोजन-वस्त्र, गृह-व्यवस्था होइए आ पढ़बाक-लिखबाक समय भेटइए। पढ़ब-लिखब जीवनक उद्देश्य अछि। सभ दिन छल। सभ दिन रहत।'

ज्ञानपीठक नोकरी सँ आर जे किछु भेल हो वा नहि, हुनक जीवन मे एक टा व्यवस्था आबि गेलनि। एहि व्यवस्थाक बेगरता ओ बहुत दिन सँ अनुभव करैत आबि रहल छलाह। व्यवस्था नहि रहला सँ हुनक जीवन विभिन्न प्रकारक ऊहापोह मे ओझरा गेल रहनि आ ओ अपन योग्यताक पूर्ण उपयोग नहि क' पबैत छलाह। मुदा ई व्यवस्था बेसी दिन नहि चलि सकल। सेठ-साहूकारक नोकरी सँ हुनक स्वाभिमान केँ ठेस लगैत छलनि। ज्ञानपीठक नोकरी ओ दुइयो बर्ख नहि क' सकलाह।

मैथिली-हिंदीक रचनाकार कीर्त्तिनारायण मिश्र 1960क आरंभ मे किछु दिनक लेल अपन पिता लग कलकत्ता गेल छलाह। एक दिन राजकमल सँ भेंट करय ओ पूर्व पुतियारी गेलाह। दुपहरक समय छल। राजकमल सूतल छलाह। शशिकान्ता हुनका जगौलकनि। ओ कीर्त्तिनारायण केँ देखि प्रसन्न भेलाह। बजलाह—बड्ड नीक भेल जे तों आबि गेलह। एक टा महत्त्वपूर्ण निर्णय लेबाक अछि आ ओहि लेल तोहर परामर्श आ सहयोग अपेक्षित। हम पिता बनय सँ पहिनहि नोकरी छोड़य चाहैत छी। हम नहि चाहैत छी जे जन्मक बाद हमर बच्चाक नजरि गुलाम बाप पर पड़य। ओहि

समय शशिकान्ता गर्भवती छलीह। आ ठीक 60क सितम्बर मे दिव्याक जन्म सँ पहिनहि ओ ज्ञानपीठक नोकरी छोड़ि देलनि। शशिकान्ता केँ नैहर पठा देलथिन आ रागरंग बहार करय लगलाह। मुदा रागरंग सँ हुनक जीविका नहि चलि सकैत छलनि, ने चललनि। फलत: रागरंग बंद भ' गेल।

ज्ञानपीठ आ रागरंग छोड़लाक बाद एकाएक हुनका पाइ कमयबाक झोंक अयलनि। शशि कलकत्ता सँ नैहर चल गेल छलीह। राजकमल पाइक पाछाँ बताह भ' गेलाह। ओ कतेको सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कयलनि आ खूब पाइ कमौलनि। किछु दिन धरि एही कारणेँ ओ साहित्य-जगत सँ फराक रहलाह। बाद मे शशिक अयला पर स्थिति सम्हरल आ ओ फेर सँ लिखब-पढ़ब शुरू कयलनि।

असल मे ओ सोचने रहथि जे रागरंग जीवन आ साहित्य दुनू मे हुनका लेल एक टा सम्मानजनक सहारा सिद्ध हेतनि, मुदा ताहि लेल जे वणिक बुद्धि आ आचरण चाही, से हुनका सँ नहि भेलनि। रागरंग हुनक सर्वाधिक प्रिय कल्पना छलनि। ओकर असफलताक कारणेँ ओ भीतर सँ टूटि गेलाह। सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन आ चंदा एक टा हताश व्यक्तिक तात्कालिक आवेश छल, जे ज्वार जकाँ आयल आ भाटा जकाँ निकलि गेल। ओ फेर सँ लेखन मे सक्रिय भेलाह। स्वतंत्र लेखन केँ जीविकाक आधार बनौलनि। पाइ लेल बांग्ला सँ हिंदी मे अनुवाद करय लगलाह। 60क अक्तूबर मे अजमेरक प्रकाशवती केँ ओ पत्र मे लिखलनि—चाहलो पर लिखि नहि पबैत छी। पढ़बा लेल बहुत रास पोथी अछि, मुदा समय नहि भेटैत अछि। हँ, अनुवाद अवश्य करैत रहब, जाहि सँ किछु पाइ अबैत रहय आ साहित्य सँ सम्पर्क बनल रहय।

अपन छओ बर्खक कलकत्ता-प्रवास मे राजकमल बहुत तीव्र गतिएँ साहित्य-सृजन कयलनि आ ओतबे तीव्र गतिएँ अपन व्यक्तिगत जीवन बितौलनि। कलकत्ताक प्राय: प्रत्येक साँझ ओ चौरंगी मे बितबैत छलाह। एकसर रहला पर मेट्रो लग कैफे दे मोनिको मे बैसि चाय-कॉफी पिबैत नीचाक जन-प्रवाह देखैत रहैत छलाह। फेर ककरो आबि गेला पर शॉ चलि जाइत छलाह। शॉ चौरंगीक प्रसिद्ध बार अछि, जतय कलकत्ताक बुद्धिजीवी शराब पिबैत विभिन्न समस्या पर बहस करैत रहैत छथि। शॉ मे मैथिली-हिंदी-बांग्लाक अनेक लेखकक जुटान होइत छल। कहियो काल शॉक बाद ओ सभ फ्री स्कूल स्ट्रीट लग देशी शराबखाना चल जाइत छलाह। एहि भट्ठी केँ राजकमल ग्रेवयार्ड कहैत छलाह। एहिठाम आबि क' दिन मरि जाइत छल। कहियोकाल एहनो होइत रहै जे ग्रेवयार्ड सँ निकलैत-निकलैत बहुत देरी भ' जाइन। ट्राम आ बस किछु नहि भेटनि। एहन स्थिति मे जँ पाइ नहि रहनि वा कम रहनि,

तखन दस-बारह किलोमीटर पयरे चल' पड़नि। पूर्व पुतियारी पहुँचैत-पहुँचैत रातिक एक-दू बाजि जानि।

कलकत्ता मे हुनक पारिवारिक जीवन केँ स्मरण करैत सुधीर लिखैत छथि—ओ भौजी सँ बहुत प्रेम करैत छलाह। राति केँ दुइए बजे सही, मुदा ओ घर अवश्य घूरि अबैत छलाह; चाहे हुनका चौरंगी सँ बारह मील दूर पूर्व पुतियारी पयरे किए नहि चल' पड़नि। बाहर सँ खा क' किएक ने आबि गेल होथि, जाधरि भौजीक हाथक बनायल भोजन नहि करथि, ताधरि हुनका संतोष नहि होनि। खाना हम सभ संगे खाइ। आ खाइत काल खाली पारिवारिक गप्प हुअय। तय कयल जाइ जे कलकत्ताक इलिस माछ आ मिथिलाक हिलसाक स्वाद मे की अंतर अछि। निश्चय करथि जे काल्हि ऑफिस सँ घुरैत काल न्यू मार्केट सँ शशिक लेल चनाचूर जरूर आनब। निर्णय करथि जे दोकानदार तेल गड़बड़ क' देने अछि आ काल्हि ऑफिस जाइत काल घुरेबाक अछि। तय कयल जाइ जे रवि दिन हमसभ बोटेनिकल गार्डेन घूम' जायब आ घुरती मे मोकाम्बो मे खाना खायब। लेकिन भोर होइते ओ सभ किछु बिसरि जाथि। ने चनाचूर अबैक, ने हम सभ गार्डेन घूमी। हुनका कोनो ने कोनो जरूरी काज पड़ि जाइन आ ओ कोनो दोस्त संगे निकलि जाथि। राति मे देर सँ घर घुरला पर ओ रोज नव बहाना बनाबथि, नव खिस्सा गढ़थि। भौजी केँ आ हमरा खिस्सा नीक लागय। भौजीक तामस बिला जाइन आ ठोर पर मुस्की आबि जानि।

स्वतंत्र लेखनक बल पर कलकत्ता मे जीवन-यापन करब राजकमल लेल कठिन होइत गेलनि। अनुवादक प्रकाशन आ पारिश्रमिक लेल ओ कैक बेर दिल्ली गेलाह। कलकत्ताक प्रवासी मैथिल आ मैथिल संस्था सँ हुनका स्नेह-सहयोग तँ भेटैत छलनि, मुदा एक टा वर्ग एहन छल जे दारू आ सेक्स संबंधी हुनक कमजोरीक कारण हुनका सँ घृणा करैत छल। विभिन्न प्रकारक व्यसन आ आर्थिक संघर्षक कारणेँ हुनकर शरीर दुर्बल भ' गेलनि आ ओ दुखित पड़य लगलाह। हुनक पेट पर जे ढेकरी (लम्प) छलनि से कलकत्ते मे शुरू भेल रहनि। विकट जीवन-संघर्ष सँ थाकि क' ओ कलकत्ता छोड़ि देबाक निर्णय कयलनि। ओहि कालक स्थितिक बारे मे धर्मयुग मे प्रकाशित अपन आत्मकथ्य मे ओ लिखैत छथि—1963क पहली जनवरी केँ राजकमल एक टा अत्यधिक सुन्दर डायरी किनने छल। ओहि समय मे ओ कलकत्ता मे कलकत्ता मूवीटोन फिल्म स्टूडियो लग रहैत छल। नोकरी नहि छलै, काज-धंधा नहि छलै; दोस्ती, दुश्मनी, साहित्य, राजनीति किछु नहि छलै। ओ अपन डायरी मे सालक पहिल राति मे किछु प्रतिज्ञा आ किछु यथार्थ नोट कयने रहय, जकरा ओही क्रम सँ लीखि देब बेसी ठीक रहत—

(क) समाजक वर्तमान परिस्थिति मे पढ़बाक-लिखबाक कोनो अर्थ नहि रहि गेल अछि। आदमी मशीन बनि जाए वा पागल भ' जाय, तेसर कोनो रस्ता नहि छैक।

(ख) सुख-शांति सँ जीबाक लेल हमरा लग आब यैह रस्ता बचि गेल अछि जे हम हिंदी मे (वा भोजपुरी मे?) फिल्म बनाबी अथवा युद्धनिरोधक झंडा उठाक' विदेशी पूंजीपतिक कृपा-सहायता सँ संसार-यात्रा पर निकलि पड़ी अथवा आर किछु नहि भ' सकय तँ अपन गाम (हमर गाम कतय अछि?) जा क' खेती करी, पोखरिक माछ पकड़ैत रही, शतरंज खेलाइत रही आ उग्रतारा भगवतीक श्रद्धा प्रमत्त पूजा मे व्यस्त ग्रामीणक भीड़ कें अपन करेज पर सहैत रही।

(ग) हमरा पाइक ततेक दिक्कत रहैत अछि जे पछिला कतेको मास सँ हम कोनो किताब नहि किनने छी., एक्को टा मित्र की संबंधीक घर नहि गेल छी आ ने बेनीप्रसाद कन्नौजक ओहिठाम सँ मुश्के अम्बरक शीशीए किनने छी।

नितांत अनिश्चित भविष्य आ भारी मन ल'क' राजकमल कलकत्ता छोड़ि देलनि। पत्नी आ बेटी कें पिता लग राखि दिल्ली चल गेलाह। मुदा कलकत्ताक स्मृति हुनका मोहग्रस्त आ भावुक बना दैत छलनि।

एहि बीच ओ अपन घर-परिवारक कोनो खोज-खबरि नहि लेलनि। पत्नी शशिकान्ता व्याकुल आ व्यथित भ'क' मनमोहिनी कें टूटल-फूटल हिंदी मे लिखलनि—बहुत दिन से मैं सोच रही थी जो तुमको एक चिट्ठी दूँ। लेकिन नहीं दे सकी। माफ करना। देखो आज चार महीने से राजकमल जी का पत्र मैंने नहीं पाया, इसलिये बहुत चिन्तित हूँ। बहन अगर तुमको पता हो तो जरूर पत्र देना। तुमसे भीख माँग रही हूँ दया करना। इधर देखो दिव्या बहुत बीमार रहती है। सर्दी, बोखार, आँख, कान सब मिलकर तबाह किया है। मैंने कमलजी को तीन-चार पत्र दिया। एक का भी जवाब मैंने नहीं पाई। क्या करूँ मुसीबत में पड़ी हूँ। बहन भगवान को कहना है जो मनुष्य पर जब दुख पड़ती है तब हमको याद करते हैं सो मैं अभी तुमको याद करती हूँ। मैंने इतने दिन लज्जावश तुमको पत्र नहीं दे सकी। अब सहारा लेने के वास्ते लिख रही हूँ। बहन अगर पता हो तब भी अगर नही हो तब भी जरूर एक पत्र देना। आभारी रहूँगी। तुम्हारी सहायता जीवन मे नहीं भूलूँगी बहन, याद रखना।

कलकत्ता छोड़लाक लगभग तीन मास बाद जुलाइ 63मे ओ कपिल आर्य कें लिखैत छथि—हम एगारह अप्रैल कें कलकत्ता सँ चल आयल छलहुँ। नवादा अयलहुँ। शशि आ दुनू लड़की कें ओतय छोड़ि हम गया, पटना, बनारस, इलाहाबाद, आगरा मे रुकैत पहली मइ कें दिल्ली अयलहुँ। बीच मे एक हफ्ता लेल जयपुर आ एक हफ्ता लेल मसूरी गेल छलहुँ। अखन एतहि रहबाक विचार अछि, ओना, हमर कोन

ठेकान, कखन कत' चल जायब। कलकत्ताक स्मृति बहुत सतबैत अछि। चौरंगी मे असकरे घुमैत साँझ गुजारि देब, पुतियारीक हमर ओ घर, ओतुक्का लोक, ललित, छेदीलाल, परमेश, अमरजी सभ मोन पड़ैत छथि। मुदा आब कलकत्ता नहि जायब। जा क' ओतय करबो की करब? कोनो छोट आ मामूली शहर मे रहय चाहैत छी। जतय क्यो दोस्त नहि बनय। जतय कम सँ कम पाइ मे गुजारा भ' सकय। कतहु बिहारे मे रहब। हजारीबागक आसपास या राँचीक आसपास कोनो छोट कसबा मे, जतय सौ सवा सौ टाका मे हमर परिवारक खर्च चलि सकय। दू सौ टाका प्रतिमास हम खाली पत्रिका मे लीखि क' कमा लैत छी। खैर, ई सभ सपना सुनेबाक लेल ई पत्र नहि लिखल अछि।... सितम्बर मे कलकत्ता रेडियो सँ हमर प्रोग्राम अछि। संभव जे एहि लेल हम कलकत्ता जाइ। लोको सभ सँ भेंट भ' जाएत।

63क अप्रैल सँ सितम्बर धरि राजकमलक जीवन बहुत अस्थिर रहलनि। कोनो एकठाम बहुत दिन धरि नहि टिकलाह। कलकत्ता मे लेखनजीवी भ'क' ओ देखि चुकल रहथि, जे ओ मार्ग कतेक कठिन अछि। ओहि मार्ग सँ ओ थाकि आ उबिया गेल छलाह। लेखन पर निर्भर रहला सँ लेखकीय स्वतंत्रता सेहो सीमित होइत रहनि। तेँ 63क अपन डायरी मे ओ लिखलनि—

1. आइ प्रॉमिस, आइ विल नॉट, आइ विल नेवर राइट फॉर मनी और फेम।
2. फॉर मनी एंड फॉर सोशल सेक्यूरिटी आइ विल इंटर इनटू जर्नलिज्म वर्किंग फॉर सम डेली प्रेस।

(हम प्रतिज्ञा करैत छी जे पाइ या प्रसिद्धिक लेल कहियो नहि लिखब। पाइ आ सामाजिक सुरक्षा लेल हम पत्रकारिता करब। कोनो दैनिक पत्र मे काज करब।)

अक्तूबर 63 मे ओ पटना मे स्थिर भ' गेलाह। पहिने नवराष्ट्र मे काज कयलनि। फेर ओकरा छोड़ि देलनि आ भारत मेल नामक एक अर्द्ध साप्ताहिक पत्र मे काज शुरू कयलनि। पत्रक उद्देश्य मालिकक आर्थिक-राजनीतिक स्वार्थ सिद्ध करब छल। राजकमल भारत मेल कें थोड़ेक स्तरीय बनेबाक प्रयास कयलनि। एहि पत्रक प्रूफ सँ ल'क' सम्पादन धरिक काज हुनका करय पड़नि। ज्ञात नहि अछि जे भारत मेल ओ कहिया छोड़लनि। एहि पत्रक जमालपुर संवाददाताक रूप मे उमाशंकर निशेष कें नियुक्त करैत ओ जे परिचय-पत्र जारी कयलनि, ताहि पर 20 जून 1964क तारीख अछि। भारत मेल जाहि तरहक पत्र रहय, ताहि सँ लगैत अछि जे राजकमल कें बहुत पाइ नहि भेटैत हेतनि। नोकरी कहियो हुनका सोहेबो नहि कयलनि। ई काज ओ शिवचंद्र शर्माक आग्रह आ दबाव पर कयने छलाह। बुझाइत अछि अस्वस्थता बढ़ि गेला पर ओ ई नोकरी छोड़ि देने हेताह।

संभवत: 64क अंत मे नोकरी छोड़ि देलाक बाद ओ फेर सँ स्वतंत्र लेखन पर निर्भर भ' गेलाह। भिखना पहाड़ी मे एक टा डेरा लेलनि, जकर नाम रखलनि कामायनी। कामायनी ओ मृत्युपर्यन्त किराया पर रखने रहलाह। हालाँकि ओहि मे ओ अपने बहुत कम रहि सकलाह। स्वास्थ्य सुधारक लेल आ कहियो काल पैसा-कौड़ीक अभाव मे ओ गाम अथवा सासुर चल जाइत रहथि। महिसी आ चानपुरा मे किछु दिन रहैत रहथि, फेर घूरि क' पटना चल अबैत रहथि। आब हुनकर इएह जीवन चक्र भ' गेल छलनि आ एहि जीवन-चक्र सँ ओ अत्यंत मर्माहत छलाह।

65क जनवरी मे महिसी सँ जे पत्र ओ लिखने छलाह, ताहि सँ ज्ञात होइत अछि जे हुनक स्वास्थ्य नीक नहि छलनि आ ओ बहुत अभाव मे रहथि। ओ लिखैत छथि—

प्रिय शिवमंगलजी,

....हम अखनो स्वस्थ नहि छी। स्थान-परिवर्तन सँ नव कम्प्लेक्स पैदा भेल अछि। दूध आदिक पर्याप्त सुविधा अछि। तथाकथित मित्रक अभाव अछि—इएह एक टा नीक बात अछि।... शशिजी अपन बाल-बच्चा समेत सकुशल छथि। एक टा बात आओर जरूरी अछि जे हम संयम-नियम सँ रही। एक-दू टा पैघ किताब लिखबा लेल हम जीवित रहय चाहैत छी। आओर किछु तँ हमरा सँ भेल नहि। एक टा इएह काज टा भ' सकैत अछि। भरिसक भइयो जाय, किएक जे आब तँ अन्न, नोन, पान-सिगरेट धरि पीबाक इच्छा नहि होइत अछि। मैथिली मे मुहावरा अछि—अन्न नहि खाय, देवता मुँह जाय। से देवता हम जरूर बनि जायब—ओहने नपुंसक, ओहने कर्महीन। आदमी कहाँ रहि गेल छी। निवृत्ति मार्ग हमरा कहियो पसिन्न नहि पड़ल। आब बेबस भ'क' वएह करय पड़ि रहल अछि।... कोनो नोकरी क'कें निम्न मध्यवर्गक निम्नतर जीवन बिता क' मरि खपि जेबा मे कोनो मजा नहि अछि। अहूँ सएह करब तँ हमरा दुख हएत। जे काज हम नहि क' सकलहुँ—अपन पारिवारिक चक्रक कारणेँ, अपन मिथ्या मोह आ मूर्खताक कारणेँ—से अहाँ क' सकैत छी। किएक तँ अहाँ कोनो शशिजी वा दिव्या संग बान्हल नहि छी।... पाइ हो तँ धर्मयुग, इल्स वीकली, माधुरी, संडे स्टैंडर्ड आ अन्य पत्रिका बुक-पोस्ट सँ पठा देब। पत्र देब। सप्रेम, राजकमल चौधरी, 11.1.65।

राजकमल नाना प्रकारक व्याधि सँ ग्रस्त भ' गेल छलाह। एहन अवस्था मे संयम-नियम सँ रहब हुनका लेल बहुत जरूरी छलनि। एहि बातक अनुभव ओ निरन्तर क' रहल छलाह। मुदा ओ कहियो संयम सँ नहि रहि सकलाह। संयमित आ नियमित जीवन बितायब हुनक स्वभाव मे नहि रहनि। लोक कें ओ कहल करथि

जे हम आब शराब, गाँजा, सिगरेट सभ किछु छोड़ि देने छी; मुदा सभ टा झूठ, ई सब हुनका कहियो नहि छुटलनि।

महिसी-पटनाक चक्कर काटैत राजकमल अपन आर्थिक दशा सुधारबा लेल अनेक प्रकारक योजना बनौलनि। राजकमल फिल्मस, मॉडर्न इंडियन राइटिंग नामक अंग्रेजी संकलन आदि एहने योजना सभ छल, जकरा कार्यरूप देबा मे राजकमल किछु प्रारंभिक प्रयास तँ कयलनि, मुदा वित्तीय कठिनाइक कारणेँ ओकरा अंतिम रूप देबा मे असफल भ' गेलाह। हुनक आर्थिक स्थिति बहुत गंभीर आ निराशाजनक छल। प्रकाशक पाइ नहि दैत छलनि। एक दिन क्रोध आ उत्तेजना मे ओ ज्योत्स्ना कार्यालय मे तोड़-फोड़ कयलनि, आ शिवेन्द्र नारायण पर हाथ छोड़ि बैसलाह। शिवेन्द्र नारायण मोकदमा करय चाहैत छलाह। राजकमल कें मोकदमाक पता चललनि तँ कहलथिन—जँ कठघरा मे ठाढ़े हुअय पड़त तँ ओकर खूनिए बनि क' ठाढ़ होयब। आ मोकदमाक बात दबि गेल। बाद मे शंभूनाथ मिश्र कें ओ लिखलनि—हिंदीक कैक टा पैघ प्रकाशक लग हमर पाइ अछि, मगर कत्तहु सँ एको टा पैसा नहि भेटल। शिवेन्द्र नारायण पिटला पर (1965 मे एक टा यैह सार्थक काज हम कयलहुँ) केस करबाक धमकी देलक। चारि-पाँच टा पत्र लिखलहुँ, एक बेर ट्रंक पर गप्प करबाक प्रयास कयलहुँ—मगर साम्यवादी आलोचक नामवर सिंह एक टा पोस्टकार्डो देब उचित नहि बुझलनि। शरद देवड़ा बीस रानियों के बाइस्कोपक एको पाइ पारिश्रमिक नहि पठौलनि।

राजकमल अपन बीमारी कें कहियो गंभीरता सँ नहि लेलनि। स्वास्थ्यक प्रति उदासीन रहलाह। पेट मे जे लम्प छलनि, तकरा चलते दर्द रहैत छलनि। ओहि दर्द कें ओ गांजा पीबि कें दबा दैत छलाह। ओकर उचित चिकित्सा नहि करबथि। फीस आ दवाइ-दारू लेल हुनका लग पर्याप्त पैसा रहितो नहि छलनि। हुनकर डेरा कामायनी मे सिरमाक ठीक उपर एक टा ससरफाँस लटकल रहैत छल। ई फाँसीक फंदा लोक कें संत्रस्त करैत छल, किंतु राजकमल कें अपन जीवनक वीभत्सता सँ सामना करबाक लेल साहस आ बल प्रदान करैत छल।

65क अक्तूबर मे राजकमल गंभीर रूप सँ अस्वस्थ भ' गेलाह। पेटक दर्द असह्य भ' गेलनि। लम्प बेस पैघ आ सक्कत भ' गेल छलनि। किछु गोटय आयुर्वेदिक चिकित्सा करयबाक सुझाव देलकनि। ई चिकित्सा पद्धति सस्त छल आ पटना आयुर्वेदिक अस्पतालक एक टा चिकित्सक हुनक परिचितो छलनि। राजकमल आयुर्वेदिक अस्पताल मे भरती भ' गेलाह। वैद्य गोमूत्र कल्प करय कहलकनि। गायक गोंत जतेक पीबि सकथि, ततेक नीक। राजकमल निर्विकार भावेँ जतेक गोंत भेटनि,

पीबि जाथि। एक दिन ओ हंसराज केँ कहलथिन—हंसराज, हमरा जीबाक अछि आ जीबाक हेतु हम सभ किछु करैत आयल छी, करैत छी आ करब। हमरा जीबाक अछि। हम जीयब। अपन बीमारीक गंभीरता राजकमल केँ चिन्तित क' देलकनि। आयुर्वेदिक अस्पताल मे पड़ल-पड़ल ओ आत्मावलोकन करैत रहलाह। अपन चरित्रक स्वार्थ, वासना आ दुर्व्यसन केँ चिन्हलनि; अपन व्यक्तित्व मे ओकर उपस्थिति केँ स्वीकार कयलनि। ओ अनुभव कयलनि जे हुनका अपन शारीरिक सीमा केँ चिन्हबाक चाही छल। से नहि कए केँ ओ अपने अहित क' रहल छथि। मुदा ई सब रुग्णावस्थाक अभिज्ञान मात्र छल, आचरणविहीन अभिज्ञान। अपन सम्पूर्ण जीवन पर सारगर्भित आ मार्मिक टिप्पणी करैत ओ अपन डायरी मे लिखलनि—माइन हैज बिन ए लाइफ ऑफ मच शेम एंड लेस हैपीनेस (जीवन मे हमरा सुख कम आ बदनामी बेसी भेटल)।

आयुर्वेदिक अस्पताल मे राजकमल पाँचे-सात दिन रहलाह। भूपेन्द्र अबोध अपन संस्मरण मे लिखने छथि जे आयुर्वेदिक अस्पताल मे ओ भरि दिन चित्रकारी करैत रहैत छलाह। एक सँ एक भयंकर, नग्न आ वीभत्स पेंटिंग। आ एक दिन अकस्मात अस्पताल सँ पड़ा क' ओ डेरा चल अयलाह।

एहि बीमारीक मध्य शंभूनाथ मिश्र केँ ओ एक टा पत्र लिखलनि। पत्र केँ गोपनीय रखबाक हिदायत दैत ओ लिखलनि—एहि बीमारी मे शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक तीन प्रकारक भौतिक तापक चरम सीमाक अनुभव भेल अछि। बीमारी भोगि रहल छी। मुदा आब अपन शरीर सँ तटस्थ भ' गेल छी, जेना सुनल अछि जे साधु-संन्यासी सभ तटस्थ भ' जाइत अछि। ई देखब नीक लागल अछि जे हम अपन शरीर आ बीमारी सँ अलग छी। एहि सँ लाभो भेल अछि। आओर लाभ होयत। स्वस्थ भ' गेलाक बादो ई तटस्थता जीवन मे काज देत आ हमर चरित्र एवं व्यक्तित्व मे समायल दुर्गुण केँ दूर करबा मे सहायक होयत। हम नीक लोक नहि छी। छोट-छोट वस्तु लेल हम बेकल भ' जाइत छी। जरूरत पड़ला पर हम ककरो कोनो मदति नहि कयने छी। सदैव अपने स्वार्थक पूर्ति मे लागल रहल छी। भरिसक स्त्री, पैसा, सुख-मौज, यश एहि सभक लेल हम स्वयं केँ आ अपन निकटवर्ती लोक केँ ठकैत आयल छी। सत्य नहि, हम केवल मिथ्या जीवन जीबैत रहल छी। तेँ ई बीमारी हमरे हेबाक चाही छल, हमरे भेल। ई कोनो पापक फल नहि थिक—हमर अनुभवक फल थिक। हमरा शांत भ'क' एहि प्रतिफल केँ भोगबाक चाही। हम पाप-पुण्य नहि मानैत छी। हमरा कोनो तरहक नैतिकता पर आस्था नहि अछि। स्वस्थ भ' गेलो पर हमरा शराब, स्त्री, पैसा, यश, सुख-मौज सभ चीज चाही। खाली मिथ्या जीवन नहि। हम

सत्य जीवन बितबय चाहब। मुदा हमर ई सत्य की अछि? आ झूठ की अछि? यैह बात पछिला कैक दिन सँ हम सोचि रहल छी। तइयो अहाँ केँ बता नहि सकब। यैह बूझि लिअ जे अपन सीमा केँ बुझबाक चाही। जे आदमी अपन सीमा—शारीरिक आ मानसिक सीमा—नहि बूझि पबैत अछि, वैह झूठक जीवन बसर करैत अछि। हम सभ कतेक छोट छी। वैह लघुता हमरा सभक सीमा अछि। हमरा सभ केँ अपन शरीर सँ पैघ हेबाक आकांक्षा नहि करबाक चाही। आकांक्षा हम कयने रही आ यैह आकांक्षा हमर असत्य जीवन छल। हम यैह गलती कयने छलहुँ।

राजकमल किछु दिन धरि संयमपूर्वक गोमूत्र-कल्प करैत रहलाह। हुनक स्वास्थ्य सुधरि गेलनि। ओ पटनाक अव्यवस्थित आ कुसंयमित जीवन त्यागि सासुर चल गेलाह आ फरवरी 1966क मध्य धरि चानपुरे मे रहलाह। चानपुरा मे जाड़ बितबैत ओ एक पर एक श्रेष्ठ रचना करैत रहलाह। हुनका बुझेलनि जेना आब ओ ठीक भ' गेल छथि, आब हुनका किछु नहि हेतनि। एहि विश्वासक कारणेँ हुनकर सभ टा संयम-नियम टूटि गेलनि। ओ फेर सँ जीवनक पुरान ढर्रा अपना लेलनि। फल ई भेल जे फरवरी 66क अंत मे ओ पुनः गंभीर रूप सँ दुखित पड़ि गेलाह आ हुनका पटनाक राजेन्द्र सर्जिकल ब्लॉक मे भरती करा देल गेलनि। हुनका तीव्र मूत्रावरोध छलनि। पटनाक प्रसिद्ध सर्जन डा. यू.एन. साही आ डा. जितेन्द्र सहाय हुनक चिकित्सा कर' लगलथिन। रातिक दू बजे धरि हुनक ऑपरेशन चलैत रहलनि। राजकमल फरवरी 66 सँ जुलाइ 66 धरि अस्पताल मे रहलाह। एहि पाँच मास मे तीन बेर हुनक ऑपरेशन भेलनि। 5.4.66 केँ एक टा पत्र मे अपन स्थितिक चर्चा करैत ओ प्रकाश जैन केँ लिखलनि—अहाँक पठाओल 130/- भेटि गेल अछि। श्री गोपाल कृष्ण कौल (जयपुर) 60/-पठौलनि। हमरा सन दुखिताह लोक ई सभ कर्जा कोना सधाओत? आइ एक टा स्पेशलिस्ट कहलनि जे हमरा कैंसर नहि अछि, मैलिग्नेंट लिम्फो सर्कोमा भ' सकैत अछि। एकर इलाज ऑपरेशन सँ संभव अछि। ब्लाडर सँ पीज निकलब एखनो बंद नहि भेल अछि, तेँ ऑपरेशन नहि क' रहल छथि। हम ठीक छी। मजगूत छी। मोना केँ पठा दियनु। शशि केँ सहारा भेटतनि। ओ बेचारो मने मन बहुत घबड़ा गेल छथि। अहाँ नहि आयब?

छओ दिनक बाद ओ जीवकान्त केँ लिखैत छथि—प्रिय जीवकान्त, अपनहि दू आखर लीखि रहल छी। रोग बड्ड कठिन, आ बड्ड कष्टकर। मुदा, जीबाक अछि। अखन मरबाक मन नहि होइत अछि। सप्रेम, राजकमल 11.4.66।

राजकमल मे अदम्य जिजीविषा छलनि। मृत्युक कल्पना सँ ओ सिहरि जाइत छलाह। बाल-बच्चा छोट छलनि आ एखन हुनका बहुत किछु लिखबाक छलनि।

मुदा कैंसरक संदेह हुनक विश्वास कें हिला देलकनि। भेलनि जे आब ओ नहि जीताह। शशि, दिव्या, मुक्ता, नीलू ओही दिन नवादा सँ हुनक भेंट करय अयलनि। राजकमल अपन धीयापूता कें देखि विह्वल भ' गेलाह। हुनका लगलनि उग्रतारा एतेक कसाइ आ निर्दयी नहि हेतीह जे बेचारी शशि आ बेकसूर बच्चा सँ हमरा छीनि लेतीह। ई हुनक सहज विश्वास आ आन्तरिक प्रार्थना रहनि। मुदा तर्क-बुद्धि कहनि मृत्यु संभव अछि। ऊहापोहक एही अवस्था मे ओ एक टा वसीयत लिखने छलाह जे अप्राप्य अछि। कहियो एहनो होइत छल जे रोग बढ़ि जानि आ शारीरिक पीड़ा असहनीय भ' जानि, तखन इच्छा होनि जे मरि जाइ। अस्पताल डायरी 1966 मे 26 मइ कें ओ लिखलनि—प्लीज स्टॉप दि वर्ल्ड, आइ वांट टु गेट ऑफ फ्रॉम दिस अर्थ। (आब किछु नहि, बस मृत्यु चाहैत छी।)

हुनक बीमारीक समाचार दिनमान, सर्चलाइट आदि कैक टा पत्र-पत्रिका मे छपल आ सहायताक अपील कयल गेल। राजकमल सँ ईर्ष्या आ घृणा केनिहार लोक एहि अपील सँ भड़कि गेलाह आ राजकमलक विरुद्ध दुष्प्रचार शुरू कयलनि। नई कहानियाँ मे मधुकर गंगाधरक वक्तव्य छपल जे राजकमलक बीमारीक इलाज चलि रहल अछि, ओ अभाव आ उपेक्षाक बहाना कए लोक सँ पाइ ऐंठय चाहैत छथि। ओ चिट्ठी लिखि क' लहरक सम्पादक प्रकाश जैन आ मनमोहिनी कें राजकमलक विरुद्ध भड़कौलनि। राजकमल 12 जून कें अपन अस्पताल डायरी मे लिखैत छथि—मधुकर एंड लहर पीपुल्स हैभ ज्वांइड हैंड्स इन डर्टी प्रोपेगैंडा अगेंस्ट मी। दी बेस्ट इज टु कीप साइलेंस एंड टू रिप्लाइ ह्वेन दि प्रोपर टाइम कम्स (मधुकर आ लहर सँ जुड़ल लोक मिलि क' हमर खिलाफ दुष्प्रचार क' रहल अछि। एखन चुप्पे रहब नीक अछि। उचित अवसर पर जवाब देल जेतैक।)

एक दिन डॉ. चतुर्वेदी हुनका कहलकनि जे अहाँक शिश्न मे यूरेथ्रल कैंसर भ' सकैत अछि आ जँ से भेल, तखन शिश्न काटय पड़ि सकैत अछि। ई जानकारी राजकमल कें बेचैन क' देलकनि। सोचलनि जँ शिश्न कटाबहि पड़त, तखन जीबिए क' की करब; एहि सँ नीक जे आत्महत्या क' ली। ओ डायरी मे लिखैत छथि—इफ आइ हैभ टु कट माइ पेनिस, आइ विल कमिट सूसाइड। ह्वाट इज दि प्ले ऑफ लिभिंग विदाउट इट? ह्वाट इज दि यूस ऑफ लिभिंग? (जँ शिश्न कटबहि पड़त, तखन जीबाक आनन्द कोन? कथी लेल जीब?)

मुदा ई नौबत नहि अयलनि।

अस्पताल मे राजकमल कें एक बातक दुख सभ सँ बेसी छलनि। हुनक तीन-तीन भाइ पटना मे नोकरी करैत छलथिन, मुदा क्यो हुनक सहायता नहि केलकनि।

शंभूनाथ मिश्र कें पत्र लिखैत राजकमल बहुत व्यथित भ'क' एहि बातक उल्लेख करैत छथि—एहि सभ सँ बेसी दुख एहि बातक भेल जे हमर चारि भाइ पटना मे रहैत छथि। तीन भाइ नोकरी करैत छथि। मुदा एक्को भाइ कहियो एक पाइक दवाइयो अनबाक कष्ट नहि क' सकलाह।

राजकमलक आर्थिक स्थिति एहन नहि छलनि जे पटना मे परिवार राखि सकितथि। हुनक पत्नी आ धीयापूता नवादा मे रहैत छलनि आ बीच-बीच मे आबि क' देखि जाइत छलनि। अस्पताल मे हुनक सभ सँ बेसी सेवा चंद्रमौलि उपाध्याय आ हुनक पत्नी कयलकनि। हंसराज, आलोकधन्वा आदि प्रायः प्रतिदिन हुनका देखय आबथि। राजकमल चंद्रमौलि उपाध्याय कें अपन सर्वाधिक प्रिय मित्रक रूप मे स्मरण करैत छथि। हुनक पत्नी कें ओ मेमसाहेब कहैत छलाह। देहगाथा ओ हिनके दुनू कें समर्पित कयने छथि। चंद्रमौलि उपाध्याय आ हुनक पत्नी समय-समय पर राजकमलक आर्थिक सहायता सेहो करैत छलाह। उपाध्याय कविता लिखैत छलाह आ जीविकाक लेल चाहक दोकान करैत छलाह। राजकमलक मृत्युक बहुत बाद ओ दुनू पता नहि कोन कारणें आत्महत्या क' लेलनि। उपाध्याय राजकमल कें धार्मिक आ नैतिक जीवन जीबा लेल प्रेरित करैत छलनि। हुनकें कारणें राजकमल अपन जीवन कें नव ढंगे बितयबाक बात सोचैत छलाह।

तंत्र दिस राजकमलक झुकाव अस्पताले मे भेल छलनि। ओ आचार्य रमानाथ झा सँ तंत्रक दीक्षा लेब' चाहैत छलाह। मुदा रमानाथ बाबू एहि लेल तैयार नहि भेलाह। प्रणव मंत्र ओं दैत कहलथिन—अहाँ गाम जाउ। उग्रताराक सेवा करू। हमहूँ हुनक दर्शन क' आयल छी। वैह अहाँ कें त्राण करतीह।

राजकमलक स्वास्थ्य मे जखन पर्याप्त सुधार भ' गेलनि आ हुनका बुझा गेलनि जे आब ओ बचि गेलाह, तखन ओ अपन भावी जीवनक योजना बनबय लगलाह। हुनक पहिल योजना छलनि जे गामे मे रहि क' खेती-बारी करी आ परिवार राखी। दोसर योजना पटना मे प्रेस जमायब, प्रकाशन आ पोथीक दोकान शुरू करब छलनि। अंतिम योजना छलनि जे छओ मास गाम मे रहब आ छओ मास आन कोनो ठाम रहि क' किताब लिखब।

राजकमल जुलाइ 1966क अंतिम सप्ताह मे अस्पताल छोड़ि देलनि आ भिखना पहाड़ी चल अयलाह। ओ रोग सँ पूर्णतया मुक्त नहि भेल छलाह। छओ अगस्त कें जीवकान्त कें पत्र मे लिखैत छथि—अस्पताल सँ दू सप्ताह पहिने चल आयल छी। मुदा, स्वस्थ नहि छी। आब हमरा जौंडिस भ' गेल अछि, लीवर एकदम्मे काज नहि करैत अछि। दोसर बात, अंतड़ी मे ओ रोगाधिराज बैसले छथि एखनधरि...।

एहि पत्रक ठीक चौदह दिनक बाद महिसी सँ ओ दोसर पत्र लिखैत छथि—आन कोनो उपाय नहि पाबि, गाम चल आयल छी, उग्रतारा अहीठाम छथि। भरि दशमी एत्तहि रहब। चंपा रोगक प्रकोप किछु कम भेल अछि। गामक शांत-स्वच्छ परिवेश मे आनो कॉमप्लीकेशंस (शिकायत) घटल जाइत अछि।... एहि ठाम बड्ड मन लागि रहल अछि। गामक कात सँ कोसीक विराट बांध जाइत अछि। ओहि पार अपार जलराशि, एहि पार हरियर धरती। साँझ खन उग्रतारा मंदिर जाइत छी। शतरंज खेलाइत छी। भाँग पीबाक इच्छा करैत छी। (पिबैत नहि छी।) आरो कतेक की करैक इच्छा करैत छी, जेना, कोनो आन्हर, बताहि, कारी पियासलि स्त्री सँ प्रेम। एहि स्त्रीक नाम भेल उग्रतारा।

लगैत अछि ई उग्रतारा आर क्यो नहि, बनारसक अलका छलीह। राजकमल लग अलका केँ उग्रतारा आ उग्रतारा केँ अलका बनैत देरी नहि लगैत छल। अलका संगे बहुत दिन सँ हुनका पत्राचार भ' रहल छलनि। ई हुनक अंतिम प्रेम-प्रसंग छलनि। अस्पताल डायरी मे ओ लिखैत छथि—नंदा इज कमिंग नियरर डे बाइ डे। ह्वाट विल हैपेन टु दिस रिलेशन? एनी वे, आइ शुड कीप माइ हैंड्स क्लीन। माइ रिप्लाइज शुड बी क्लियर कट एंड फ्रैंक (नंदा संग हमर संबंध प्रगाढ़तर भेल जा रहल अछि। आखिर एहि संबंधक भवितव्य की अछि? जे हो, हमरा निर्मल रहबाक चाही आ अपन जवाब मे स्पष्ट आ साफ।)

डायरीक ई नंदा वास्तव मे अलका छलीह।

राजकमल नवम्बर 66क पहिल सप्ताह मे अलका सँ भेंट करय बनारस गेलाह। एखनधरि ओ दुनू एक-दोसर केँ देखने नहि रहथि। शंभूनाथ मिश्र माध्यमक काज करैत छलाह। शंभूनाथ मिश्रक ऑफिस मे बैसि क' राजकमल एहि यात्राक अनुभव केँ लिपिबद्ध कयने रहथि। रोग-जर्जर शरीरक कारणेँ राजकमल छओ घंटाक यात्रा सँ बहुत थाकि गेल छलाह। किछुए दिन पहिने ओ स्वस्थ भेल छलाह। एहन शारीरिक अवस्था मे एहि तरहक एडवेंचर सँ ओ डरि गेल छलाह।

अलका उत्तेजना आ घबड़ाहटक अनुभव क' रहल छलीह।

बनारस सँ घुरि क' राजकमल गाम चल अयलाह। अठारह नवम्बर केँ ओ जीवकान्त केँ जे पत्र लिखलनि, ताहि सँ लगैत अछि जे रोमांस आ एडवेंचरक प्रति हुनक आकर्षण एखनो कम नहि भेल छलनि। ओ लिखैत छथि—हम पटना मे नहि छी। आब पटना मे कहियो नहि रहब। किछु दिन गाम मे छी।... बेसी भाग यायावर रहब। बहता पानी निरमला—यैह यायावरी सिद्धांत थिक। बड्ड दिन एक्के पारिवारिक मोह मे, स्थान-काल-पात्रक मोह मे बैसल रहलहुँ। आब देह टूटल अछि, मुदा मोन

स्थिर नहि अछि। तेँ आब बैसब नहि दू-चारि बर्ख। अहूँ की एक्के घुड़धुन मे लागल छी। कतहु भागि जाउ, कोनो आन ठाम, अनचिन्हार देस मे। चीन्हल परिवेश मनुक्ख केँ क्लीव आ आलसी बना दैत छैक।

दिसम्बरक शुरू मे राजकमल फूसक एक टा घर बनबौलनि। खूब सुन्दर आ सुरुचिपूर्ण बंगला। मुदा हुनक मन:स्थिति नीक नहि छलनि। मोन खिनखिन करैत रहैत छलनि। मोन मे अलका आ अलका संबंधी दुविधा चक्कर कटैत रहैत छलनि। बीस दिसम्बर केँ उपाध्याय केँ ओ चिट्ठी मे लिखलनि—हर काम से मुझे अरुचि हो गई है। कुछ अच्छा नहीं लगता। लिखना-पढ़ना भी नहीं। हेनरी मिलर की नई किताब बिस्तरे के सिरहाने खुली पड़ी है। पढ़ने मे जी नहीं है। जी कहाँ है?

जी ये कहता है कि अब उसी मैखाने में
सुबह आई है, जहाँ आती थी कभी शाम
कोई बात नहीं बनती है दिले-नादां से
लरजते हाथों से क्यों छूट जाता है जाम

इच्छा नहीं होती है कि उसके पास जाएँ। मगर जाना तो मुझे होगा। जाम हाथों से छूट कर टूट-बिखर जाए, जो भी होना है, हो जाए। जो भी टूटना है सब टूट जाए।

आ ओ ठीके सभ मोह-माया केँ तोड़ि अलका लग चल गेलाह। भरिसक फरवरी 67क दोसर सप्ताह मे। अप्रैलक मध्य मे घुरलाह।

बाइस मइ 67क पत्र मे ओ अंतिम बेर अप्रत्यक्ष रूप मे अलकाक उल्लेख करैत छथि—पत्र लिखने लायक लड़की एक के सिवा दूसरी कौन रह गई है, और एक ही लड़की को कितने अरसे तक लिखते रहा जाए...।

ओहि सँ पहिने दस जनवरी 1967 केँ हुनकर पिताक देहान्त भ' गेलनि। सिमरिया घाट पर अंतिम संस्कार भेलनि। राजकमल संस्कार मे नहि गेलाह। जेठ पुत्र हेबाक कारणेँ मुखाग्नि हुनके देबाक रहनि। मुदा बहुत पहिने कोनो बात पर रुष्ट भ' क' ओ कहि देने छलथिन जे आगि नहि देब, से नहिएँ देलथिन। शेष सभ संस्कार ओ विधि-विधानक अनुसार आ निष्ठापूर्वक सम्पन्न कयलनि। श्राद्धक बाद ओ जीवकान्त केँ पत्र मे लिखलनि—एक टा दुर्घटना एहि मध्य भेल, जे हमर पिता गत 10 जनवरी केँ स्वर्गवासी भेलाह ... आब घर-परिवारक सभ टा बोझ माथ पर खसि पड़ल अछि। तीन टा अनुज कॉलेज मे पढ़ैत छथि, एक टा बहीनक विवाह आगाँ बर्ख करइए पड़त। पितृ-श्राद्ध मे दस हजार टाका खर्च कयना गेल।... मुदा,

एहि सभ समस्या सँ हम विचलित अथवा 'किं करोमि गोविन्द' नहि छी। हम अपन मुक्ति आ स्वच्छन्दता केँ सुरक्षित रखैत परिवारक प्रति अपन दाय आ दायित्व केँ सम्हारि लेब ई हमर विश्वास अछि।

एही पत्र मे ओ आगाँ लिखैत छथि—आशा अछि, अहाँ ग्राम-आनन्दः (आ, की ग्राम्य-आनन्द ?) मे तल्लीन छी। एहेन इजोरिया राति-आइये पूसी पूर्णिमा थिक—एहेन कबई माछ-एहेन जुआन जोरगर गोंढ़ि कन्या... मनुक्ख केँ मुक्तिक लेल आन किछु नहि चाही।

हमरा लेखेँ ने देस मे अकाल पड़ल अछि, आ ने हम कोनो दुखक अन्हार मे डूबल छी। उम्मेदवार एम.एल.ए., एम.पी. आदिक जीप, मोटर साइकिल प्रतिदिन दलान लग ठाढ़ होइत अछि, प्रतिदिन हम पहिने सँ बेसी स्वस्थ आ शान्त भेल जाइत छी।

गाम सँ आब अटूट लागि भ' गेल अछि। कवि राजकमल आब सभ दिन गामहि रहताह। एकबेर अहाँ हमरा गाम आउ।

1967क आम चुनावक समय राजकमल गामे मे छलाह। कांग्रेस पार्टी सँ लोकक मोहभंग भ' गेल रहै। कांग्रेसक अनेक नेता भ्रष्टाचार मे लिप्त छल। राजकमल सेहो कांग्रेसी सत्ताक विरुद्ध भ' गेल छलाह। तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री ललित नारायण मिश्र चुनाव-प्रचारक लेल महिसी आबयवला रहथि। राजकमलक दिआदी मे हुनक कुटमैती रहनि। जखन राजकमल केँ हुनक कार्यक्रमक जानकारी भेलनि तँ ओ प्रण क' लेलनि जे ललित नारायण मिश्र केँ महिसी मे प्रवेश नहि करय देबनि। ओ गामक किछु युवक केँ संगठित कयलनि आ लाउड स्पीकर पर ललित नारायण मिश्रक विरुद्ध नारा लगबैत गाम मे जुलूस निकाललनि। देआद-बाद हुनक एहि किरदानी सँ अत्यंत क्षुब्ध आ दुखी भेलाह। राजकमलक घरक ठीक सामने वाला दलान पर बैसकी शुरू भेल। ओ सभ विचार करय लगलाह जे की कयल जेबाक चाही। समस्या छल जे अपने लोक अपन कुटुम केँ गाम नहि आब' देत तँ की प्रतिष्ठा रहत। राजकमल केँ हुनका सभक अभिमत ज्ञात भेलनि तँ माइक्रोफोन उठाक' बाजय लगलाह—अहाँ सभ सुनि लिअ'। ललित नारायण मिश्र जँ कुटुम्ब रूप मे महिसी औताह तँ हम हुनकर स्वागत करबनि, छप्पन प्रकारक तरकारी खुऔबनि; मुदा जँ ओ राजनेताक रूप मे आब' चाहताह तँ हम किन्हु हुनका महिसी मे प्रवेश नहि करय देबनि। फलतः ललित नारायण मिश्र महिसी नहि अयलाह, सहरसे सँ घुरि गेलाह।

महिसिएक एक टा आओर घटना अछि। महिसी ब्लॉक मे कोनो वर्मा बी.डी.ओ.क रूप मे पदस्थापित भ' क' आयल रहय। ओ बहुत उदंड आ घमंडी रहय। एक दिन

साँझ केँ ओ जुत्ता पहिरनहि उग्रतारा मंदिरक परिसर मे टहलैत रहय। ओकर अफसराना शान देखि क' राजकमल केँ रहल नहि गेलनि। ओ जा क' ओकर कालर ध' लेलथिन आ गरजलाह—ऐ वर्मा, सुनो! सरकार ने तुम्हें इसलिए नहीं भेजा है कि तुम यहाँ की संस्कृति को जूतो तले रौंदो। तुम हमारे गाँव के मेहमान नहीं होते तो तुम्हें सबक सिखा देता। जाओ, तुम्हें माफ कर दिया। लेकिन ऐसी हरकत फिर मत करना।

स्वर्गीय रामकृष्ण झा 'किसुन' सुपौल मे पाँच आ छओ फरवरी 1967 केँ मैथिलीक नवकविता पर एक टा द्विदिवसीय सेमिनारक आयोजन कयने रहथि। एकर आतिथ्य राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला समिति कयने रहय। एहि अवसर पर एक टा कवि सम्मेलन सेहो भेल छल। राजकमल एहि मे आमंत्रित कयल गेल छलाह। रामानुग्रह झा हुनका महिसी सँ आनय गेल रहथि। जखन ओ हुनका घर पर पहुँचलाह तँ एक टा बुढ़िया मुसहरनी हुनक बंगला लेबैत रहनि। काज खतम कए जखन ओ बोनि माँगय अयलनि त कहलथिन—एखन नहि, साँझ खन अबिहें।

—से किऐक मालिक ?

—अरे, साँझ खन अयबें तँ एक बेर चुम्मो तँ देबें।

बुढ़िया राजकमलक एहि परिहास सँ लजा क' चल गेलि। अपन संस्मरण मे ओ लिखैत छथि जे सुपौल लेल जखन राजकमल विदा भेलाह तँ अपन पितिऔत हितेन्द्र केँ संग क' लेलनि आ जा क' उग्रतारा केँ गोड़ लगलनि। ओहि समय मे महिसी सँ बनगाँव धरि पैदल आबय पड़ैक। रामानुग्रह झा लिखैत छथि जे महिसी सँ बनगाँव धरि अबैत-अबैत राजकमल आ हितेन्द्र केँ पाँच बेर पात्र-प्रवृत्ति भेलनि (पाँच बेर गाँजाक चिलम पिलनि)। बनगाँव सँ सहरसा टमटम पर अयलाह। सहरसा मे तीन बोतल शराब किनलनि। स्टेशन आबि तीन टा फस्ट क्लासक टिकट लेलनि आ सुपौल पहुँचैत-पहुँचैत तीनू बोतल पीबि गेलाह।

शैलेश कुमार पाठक लिखैत छथि—राजकमलजी एक टा खुलल पुस्तक जकाँ एकदम साफ, रहस्यहीन छलाह। हुनका नेना जकाँ हम सरल, सहज आ बोहेमियन पौलियनि; ओ खूब गाँजा धुकैत रहथि आ सिगरेट पिबैत रहथि। चाह, पान आ प्रायः तमाकुलक तँ अखंड सेवन चलैत छलनि, तथापि ई सब ओ केवल भाइजी (किसुनजी) सँ बचा क' हुनका अनुपस्थितिए मे करैत छलाह। प्रायः यैह बूझि क' भाइजी बेसी काल एम्हर-ओम्हर व्यस्त भ' जाइत छलाह।

सुपौलवला एहि सेमिनारक अध्यक्षता राजकमले कयने छलाह। दोसर दिन संध्या काल मेला स्थल पर कवि-सम्मेलन भेल। कवि-सम्मेलन समाप्त भेलाक बाद राजकमल, रमानंद रेणु, कीर्त्तिनारायण मिश्र आदि मेला घुमय गेलाह। मेला मे

एहि सभ समस्या सँ हम विचलित अथवा 'किं करोमि गोविन्द' नहि छी। हम अपन मुक्ति आ स्वच्छन्दता कैँ सुरक्षित रखैत परिवारक प्रति अपन दाय आ दायित्व कैँ सम्हारि लेब ई हमर विश्वास अछि।

एही पत्र मे ओ आगाँ लिखैत छथि—आशा अछि, अहाँ ग्राम-आनन्दः (आ, की ग्राम्य-आनन्द?) मे तल्लीन छी। एहेन इजोरिया राति-आइये पूसी पूर्णिमा थिक—एहेन कबई माछ-एहेन जुआन जोरगर गोंढ़ि कन्या... मनुक्ख कैँ मुक्तिक लेल आन किछु नहि चाही।

हमरा लेखैँ ने देस मे अकाल पड़ल अछि, आ ने हम कोनो दुखक अन्हार मे डूबल छी। उम्मेदवार एम.एल.ए., एम.पी. आदिक जीप, मोटर साइकिल प्रतिदिन दलान लग ठाढ़ होइत अछि, प्रतिदिन हम पहिने सँ बेसी स्वस्थ आ शान्त भेल जाइत छी।

गाम सँ आब अटूट लागि भ' गेल अछि। कवि राजकमल आब सभ दिन गामहि रहताह। एकबेर अहाँ हमरा गाम आउ।

1967क आम चुनावक समय राजकमल गामे मे छलाह। कांग्रेस पार्टी सँ लोकक मोहभंग भ' गेल रहै। कांग्रेसक अनेक नेता भ्रष्टाचार मे लिप्त छल। राजकमल सेहो कांग्रेसी सत्ताक विरुद्ध भ' गेल छलाह। तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री ललित नारायण मिश्र चुनाव-प्रचारक लेल महिसी आबयवला रहथि। राजकमलक दिआदी मे हुनक कुटमैती रहनि। जखन राजकमल कैँ हुनक कार्यक्रमक जानकारी भेलनि तँ ओ प्रण क' लेलनि जे ललित नारायण मिश्र कैँ महिसी मे प्रवेश नहि करय देबनि। ओ गामक किछु युवक कैँ संगठित कयलनि आ लाउड स्पीकर पर ललित नारायण मिश्रक विरुद्ध नारा लगबैत गाम मे जुलूस निकाललनि। देआद-बाद हुनक एहि किरदानी सँ अत्यंत क्षुब्ध आ दुखी भेलाह। राजकमलक घरक ठीक सामने वाला दलान पर बैसकी शुरू भेल। ओ सभ विचार करय लगलाह जे की कयल जेबाक चाही। समस्या छल जे अपने लोक अपन कुटुम कैँ गाम नहि आब' देत तँ की प्रतिष्ठा रहत। राजकमल कैँ हुनका सभक अभिमत ज्ञात भेलनि तँ माइक्रोफोन उठाक' बाजय लगलाह—अहाँ सभ सुनि लिअ'। ललित नारायण मिश्र जँ कुटुम्ब रूप मे महिसी औताह तँ हम हुनकर स्वागत करबनि, छप्पन प्रकारक तरकारी खुऔबनि; मुदा जँ ओ राजनेताक रूप मे आब' चाहताह तँ हम किन्हु हुनका महिसी मे प्रवेश नहि करय देबनि। फलतः ललित नारायण मिश्र महिसी नहि अयलाह, सहरसे सँ घुरि गेलाह।

महिसिएक एक टा आओर घटना अछि। महिसी ब्लॉक मे कोनो वर्मा बी.डी.ओ.क रूप मे पदस्थापित भ' क' आयल रहय। ओ बहुत उदंड आ घमंडी रहय। एक दिन

साँझ कैँ ओ जुत्ता पहिरनहि उग्रतारा मंदिरक परिसर मे टहलैत रहय। ओकर अफसराना शान देखि क' राजकमल कैँ रहल नहि गेलनि। ओ जा क' ओकर कालर ध' लेलथिन आ गरजलाह—ऐ वर्मा, सुनो! सरकार ने तुम्हें इसलिए नहीं भेजा है कि तुम यहाँ की संस्कृति को जूतो तले रौंदो। तुम हमारे गाँव के मेहमान नहीं होते तो तुम्हें सबक सिखा देता। जाओ, तुम्हें माफ कर दिया। लेकिन ऐसी हरकत फिर मत करना।

स्वर्गीय रामकृष्ण झा 'किसुन' सुपौल मे पाँच आ छओ फरवरी 1967 कैँ मैथिलीक नवकविता पर एक टा द्विदिवसीय सेमिनारक आयोजन कयने रहथि। एकर आतिथ्य राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला समिति कयने रहय। एहि अवसर पर एक टा कवि सम्मेलन सेहो भेल छल। राजकमल एहि मे आमंत्रित कयल गेल छलाह। रामानुग्रह झा हुनका महिसी सँ आनय गेल रहथि। जखन ओ हुनका घर पर पहुँचलाह तँ एक टा बुढ़िया मुसहरनी हुनक बंगला लेबैत रहनि। काज खतम कए जखन ओ बोनि माँगय अयलनि त कहलथिन—एखन नहि, साँझ खन अबिहें।

—से किऐक मालिक?

—अरे, साँझ खन अयबें तँ एक बेर चुम्मो तँ देबेँ।

बुढ़िया राजकमलक एहि परिहास सँ लजा क' चल गेलि। अपन संस्मरण मे ओ लिखैत छथि जे सुपौल लेल जखन राजकमल विदा भेलाह तँ अपन पितिऔत हितेन्द्र कैँ संग क' लेलनि आ जा क' उग्रतारा कैँ गोड़ लगलनि। ओहि समय मे महिसी सँ बनगाँव धरि पैदल आबय पड़ैक। रामानुग्रह झा लिखैत छथि जे महिसी सँ बनगाँव धरि अबैत-अबैत राजकमल आ हितेन्द्र कैँ पाँच बेर पात्र-प्रवृत्ति भेलनि (पाँच बेर गाँजाक चिलम पिलनि)। बनगाँव सँ सहरसा टमटम पर अयलाह। सहरसा मे तीन बोतल शराब किनलनि। स्टेशन आबि तीन टा फस्ट क्लासक टिकट लेलनि आ सुपौल पहुँचैत-पहुँचैत तीनू बोतल पीबि गेलाह।

शैलेश कुमार पाठक लिखैत छथि—राजकमलजी एक टा खुलल पुस्तक जकाँ एकदम साफ, रहस्यहीन छलाह। हुनका नेना जकाँ हम सरल, सहज आ बोहेमियन पौलियनि; ओ खूब गाँजा धुकैत रहथि आ सिगरेट पिबैत रहथि। चाह, पान आ प्रायः तमाकुलक तँ अखंड सेवन चलैत छलनि, तथापि ई सब ओ केवल भाइजी (किसुनजी) सँ बचा क' हुनका अनुपस्थितिए मे करैत छलाह। प्रायः यैह बूझि क' भाइजी बेसी काल एम्हर-ओम्हर व्यस्त भ' जाइत छलाह।

सुपौलवला एहि सेमिनारक अध्यक्षता राजकमले कयने छलाह। दोसर दिन संध्या काल मेला स्थल पर कवि-सम्मेलन भेल। कवि-सम्मेलन समाप्त भेलाक बाद राजकमल, रमानंद रेणु, कीर्त्तिनारायण मिश्र आदि मेला घुमय गेलाह। मेला मे

नौटंकी चलैत रहै। राजकमल ककरो सँ पुछलथिन—नौटंकी मे छौंड़ियोसब छैक? जवाब भेटल—चारि-पाँच टा। राजकमल कहलथिन—की हौ कीर्ति, कने काल नौटंकी नहि देखबह? एखन किसुनजी सेहो नहि छथि। निर्णय पक्ष मे भेल आ ओ सभ नौटंकी दिस बढ़ि गेलाह। नौटंकीक मैनेजर कवि छल आ सम्मेलन मे काव्यपाठ कयने छल। हिनका सभ कें देखि लग आयल तँ राजकमल कहलथिन—इस लड़की का डांस देखना चाहते हैं और दो-एक गाना सुनना चाहते हैं।

मैनेजर हिनका सभ कें गेट पर ल' गेल। गेटकी कें कहलक—ये कवि लोग हैं। इन्हें भीतर जाने दो।

गेटकी बाजल—लेकिन अंदर तो एक्को कुर्सी खाली नहीं है।

कविलोकनि मे सँ क्यो बजलाह—हमलोग बैठेंगे नहीं। खड़े-खड़े देख-सुन लेंगे। ताहि पर मैनेजर बाजल—ठीक है, कविजी के लिए कुर्सी की जरूरत नहीं है। ये लोग कुछ देर खड़े-खड़े ही देख लेंगे। ई सुनिते राजकमल तामसेँ बताह भ' गेलाह। बिहाड़ि जकाँ निकललाह आ गेट पर आबि क' गरजय लगलाह—क्या कविजी ऐसा निरीह होता है कि उसे कुर्सी की जरूरत नहीं होती? क्या समझ रखा है तुमलोगों ने कवियों को? देखो, अब मैं कवि राजकमल नहीं हूँ। तुम मुझे मुफ्त में देखने वाला समझते हो? चोट्टा, बेईमान। अभी तुम्हारी नौटंकी में हंगामा करा देंगे। सारे परदों में आग लगा देंगे। मैं अब कवि नहीं, केवल राजकमल चौधरी हूँ, राजकमल चौधरी।

हंगामा भ' गेल। मेलाक सचिव आनन्द मोहन दास (मदन बाबू) मैनेजर कें बजा क' डँटलथिन, मुदा राजकमलक क्रोध शांत नहि भेलनि। फेर किसुनजी बुझौलथिन। नौटंकी मे कुर्सी लगाओल गेल। राजकमल चारि-पाँच मिनट देखलनि आ निकलि गेलाह। शांत आ प्रसन्न। मैनेजरक पीठ थपथपबैत कहलथिन—एक्ट्रेस सब खूब बढ़िया है। आप बुरा तो नहीं मान गए? भई, अपन तो कभी-कभी यों ही बिगड़ जाते हैं। असल में मैं अपमान कतई बर्दाश्त नहीं कर सकता। जाइए, जो हो गया हो गया। अच्छा, अलविदा!

राजकमल सपौल सँ घुरलाह तँ जीवकान्त, धीरेन्द्र आ रेणु हुनका संगे महिसी अयलाह। रेणु, राजकमलक बनाओल बंगलाक आकर्षक वर्णन कयने छथि—जहिना भगवती उग्रतारा दर्शनीय एवं पूजनीय, ओहिना कवि-कुटीर-फूसक निर्मित, पूर्ण कलाकारिता सँ भरल-पुरल आ गाम भरिक लोकक उल्लास मध्य अवस्थित ओ रम्यगृह। कैक हजार टाकाक व्यय सँ निर्मित छल ओ कुटी। लेखन-कक्ष, विश्राम-कक्ष आ मनोरंजन-कक्ष मे बँटल।

राजकमल अपन जीवन-काल मे यैह टा घर बनबा सकल छलाह।

राजकमल अभ्यागत कवि सभक लेल मनोरंजनक आयोजन कयलनि—बंगट झाक कीर्तन। दरी-जाजिम बिछाओल गेल। रोशनीक प्रबंध भेल। किंतु बंगट झाक कतहु पता नहि। रातिक दस बाजल, एगारह बाजल, बारह बाजल। बंगटक कोनो पता नहि। खोजी सभ निराश धूरि आयल। तामसेँ लहलह करैत राजकमल बेंत ल'क' निकललाह—आइ बंगटक खाल खींचि लेब। मुदा बंगट निपत्ता। भोर मे बंगट अचानक मंदिर लग प्रकट भेल। राजकमल क्रोध सँ कँपैत मंदिर पर पहुँचलाह। बंगट कें पकड़ि क' हुनका समक्ष आनल गेल। बंगट कें अभ्यागत कवि सभक समक्ष घुमाओल गेल—यैह छथि बंगट। मुदा बंगट चुप। मुँह सूखल। राजकमल बंगट कें दोकान पर ल' गेलाह। भरि पेट चूड़ा-दही खुऔलथिन। बजलाह—जाउ बंगट, अहाँ कें यैह दंड।

अप्रैल 1967क मध्य मे राजकमल बनारस सँ घुरि क' पटना चल अयलाह। छब्बीस अप्रैल कें तत्कालीन शिक्षा मंत्री कर्पूरी ठाकुर कें अपन पोथी मुक्तिप्रसंगक सरकारी खरीद लेल एक टा आवेदन पत्र देलथिन, जकर जवाब हुनका मृत्युपर्यन्त नहि भेटलनि। अलकाक स्मृति एखन ताजा छलनि। मोन मे बेर-बेर विद्यापतिक एक टा पद गूँजैत रहैत छलनि। सत्ताइस अप्रैल कें ओ जीवकान्त कें लिखलनि—आइ-काल्हि विद्यापतिक एक टा पंक्ति बेसी काल मोन पड़ैत अछि—कत न वेदन मोहि देसि मदना। अहाँ कें सौंसे पद मोन अछि? मोन हो, तँ लीखब।

मुदा एहि सभ सँ ओ किछु सीमा धरि थाकि सेहो गेल रहथि। आसक्ति आ विरक्ति, स्वेच्छाचरिता आ अनुशासन संबंधी परस्पर विरोधी विचार हुनक मन कें मथैत रहैत छलनि। एही पत्र मे ओ लिखैत छथि—आब गाम घुरि जायब। आब शहर-बजार, मेडअप स्त्रीगण, रेस्त्रां, पुरान बंधु, किछु नीक नहि लगैत अछि। नीक लगैत अछि कोनो झमटगर स्त्री-गाछक छाहरि मे बैसल, आन सभ किछु बिसरि जायब। मुदा गाम अबिते जेना ओ फेर जीवन-रस सँ परिपूर्ण भ' जाइत छथि। जीवकान्त कें लिखैत छथि—गाम मे आबि हमर वयस कतेक कमि गेल अछि। जीवकान्तक निराशाजनक स्वरक विरुद्ध लिखैत छथि—मुदा ई आशाहीन स्वर किएक? प्रतीक्षा रहबाक चाही—आन कोनो वस्तुक नहिओ तँ कोनो मदिराक, कोनो स्त्रीक, कोनो रेलगाड़ीक, कोनो सखा-संतानक, कोनो रोगक, कोनो शोक-भोगक प्रतीक्षा।

प्रतीक्षा माने परीक्षा, आ परीक्षा माने प्रयत्न।

सत्रह मइ 67 कें पटना मे हुनका एक टा रेडियो प्रोग्राम रहनि। ओ पटना गेलाह। किंतु ओतय पहुँचिते दुखित पड़ि गेलाह। बोखार आ पेट दर्द। बाइस मइ कें कनेक

स्वस्थ भेला पर महिसी विदा भ' गेलाह। उपाध्याय हुनका असकर नहि आबय दैत रहनि। मुदा ओ जिद ठानि लेलनि आ असकरे चलि गेलाह। बरौनी मे भोरका गाड़ीक प्रतीक्षा करैत ओ शंभूनाथ मिश्र केँ एक टा पत्र लिखलनि—पटना, महिसी, बरौनी, सहरसा—अब मेरी जिन्दगी कितनी छोटी और कितनी बेमानी हो गई है। चाहता था, मतलबों की दुनिया में कोई बड़े मतलब—न्यूयार्क, मस्कवा, फ्रांसीसी रिवेरिया—में अपनी जिन्दगी मैं भी कायम करता। मगर उम्र, सेहत और यह मजबूरी कि कहीं एक कमरा एक ग्लास दारू और एक स्त्री हमारे लिए, सिर्फ हमारे लिए जरूर हो—दूसरे मतलबों को तोड़ देती है।

तेइस मइ केँ सहरसा पहुँचला पर ओ चंद्रमौलि उपाध्याय केँ एक टा पहुँचनामा लिखलनि—सकुशल सहरसा पहुँचि गेल छी। अहाँ सँ टाका लेने बिना काज नहि चलि सकल। सौ टाका हम जमा कयने रही। एखन एतहि चाउर आ कोयला बेसाहि गाम चल जायब। जूनक पहिल सप्ताह मे कोनो दिन भेंट होयत।

एहि बेर गाम अयलो पर हुनक स्वास्थ्य मे कोनो सुधार नहि भेलनि। आठ दिनक बाद दू जून केँ ओ जीवकान्त केँ पत्र देलनि—17.5.केँ पटना मे मोन पुन: खराप भ' गेल। ओही हालत मे 22.5 केँ गाम चल अयलहुँ। एखनहुँ अवस्था नीक नहि। सदिखन 101°-102° रहैत अछि। टाका-पइसा से हाथ पर नहि।

राजकमलक हालत दिनोदिन बिगड़ैत गेलनि। आठ जून केँ हुनका सहरसा अस्पताल मे भरती कराओल गेल। मुदा कोनो फर्क नहि। हुनक स्थिति गंभीर होइत गेलनि। अंतत: हुनका पटना ल' जायल गेलनि। सोलह जून केँ ओ पटना अस्पताल मे भरती भ' गेलाह। वैह सर्जिकल ब्लॉक। मुदा होनी किछु आओर छल। उपाध्याय सँ भेंट भेला पर राजकमल कहलथिन—इस बार नहीं बचूँगा, दोस्त। माँ नाराज हो गई है।

आ ठीके, ओ नहि बचलाह। उन्नैस जून 1967 केँ सदाक लेल चल गेलाह।

एखन ओ चालीसो बर्खक नहि भेल छलाह कि कॉरोनरी ऑक्ल्यूजन सँ मारल गेलाह।

साहित्य

नव बाटक खोज मे निकलल लोकक पएर छिलाइते छैक। लोक क्राइस्ट केँ सूली पर चढ़बौलक आ मन नहि भरलै तँ ओकरा पर थूको फेकलक।

—राजकमल चौधरी

दुखद बचपन लोक केँ लेखक बना दैत छैक। राजकमलक बचपन तँ बहुत बेसी दुखद छलनि। आठे-दस बरखक उमर मे माय मरि गेलनि। पिता तेसर विवाह क' लेलकनि। सतमाय आबि गेलनि। राजकमल उपेक्षित आ अपमानित होमय लगलाह। पिताक क्रोध आ घृणा, मारि आ गंजन सहय पड़लनि। राजकमलक किशोरावस्था अत्यंत दुखमय भ' गेलनि। दुखी भेला पर ओ घर सँ पड़ाय जाथि। संगी-तुरिया सँ स्नेह आ सहानुभूति प्राप्त करबाक लेल लालायित रहल करथि। बेर-बेर रूसि जाथि, किछु खाथि नहि। क्रोध मे आबि क' कोनो अनर्गल काज क' बैसथि, ताहू लेल मारि खाय पड़नि। प्रताड़ना सहय पड़नि। प्रतिशोध लेबाक लेल ओ चुनि-चुनिक' ओहने काज करथि, जाहि सँ हुनक पिता आ सतमाय केँ क्लेश पहुँचनि। पिताक कठोर अनुशासनक विरोध मे ओ उग्र आ स्वच्छन्द प्रवृत्तिक होइत गेलाह।

राजकमलक व्यक्तित्व मे समायल अथाह करुणा हुनका अनायास साहित्य दिस ल' गेलनि। पिता मधुसूदन चौधरीक किछु कविता हिंदीक तत्कालीन प्रतिष्ठित पत्रिका गंगा, सुधा आदि मे छपल छलनि। एहि क्षीण काव्यात्मक पृष्ठभूमिक अतिरिक्त ओहि समय भारत मे स्वतंत्रता-संग्राम संबंधी ओजस्वी कविता सम्पूर्ण जनमानस केँ आन्दोलित आ काव्यमय बनौने रहय। नवादा हाइ स्कूल मे, जतय राजकमल पढ़ैत छलाह, कैक टा शिक्षक तुकबन्दी करैत छलाह। एक दिन एहिना एक टा शिक्षकक तुकबन्दी सुनैत राजकमल केँ आभास भेलनि, जेना ओहो कविता क' सकैत छथि। बस ओही क्षण हुनक अंतर मे काव्यक प्रथम स्फुरण भेलनि। तकर

बाद तँ खाली श्रम आ अभ्यासक बेगरता छल।

राजकमल केँ अपन पहिल कविताक प्रति विशेष प्रेम आ मोह रहनि। ओहि कविता केँ कतेक वर्ष धरि ओ अपन डायरी अथवा नोट बुकक प्रथम पृष्ठ पर अंकित करैत रहलाह। राजकमल ओकर शीर्षक देने रहथि—अतीत सँ एक टा प्रेम वा भविष्यक एक टा निश्चितता। एहि कविताक भाव आ भाषा दुनू समृद्ध आ परिपक्व अछि। बुझाइत नहि अछि जे ई हाइ स्कूलक कोनो नवसिक्खू छात्र-कविक रचना हो। किंतु राजकमल एकरे अपन पहिल कविताक रूप मे प्रचारित करैत छलाह। भ' सकैत अछि जे एहि सँ पहिने ओ आओर कविता लिखने हेताह मुदा अपरिपक्व बूझि नष्ट क' देने हेताह। इहो कविता कतहु प्रकाशित नहि भेल। कविता अछि—

चान सन सज्जित धरा पर
कय रहल प्रियतमा अभिनय।
बूड़ि भोर मन टुभुकि उठलै
अहीं सँ हम करब परिणय।।

एहि कविता सँ राजकमलक साहित्यिक व्यक्तित्वक बारे मे दू-तीन टा संकेत भेटैत अछि। राजकमल केँ रत्यात्मक विषय प्रिय छनि, छंद आ लयक प्रति झुकाव छनि आ हुनकर अपन विशिष्ट दृष्टि छनि। राजकमल सब सँ पहिने मैथिली मे सृजन प्रारंभ कयलनि आ प्रकाशितो पहिने मैथिली-ए मे भेलाह। मैथिली मे सब सँ पहिने हुनक कथा अपराजिता प्रकाशित भेल। ई कथा अक्तूबर 1954 मे वैदेही मे छपल। अगिला साल हुनक पहिल मैथिली कविता प्रकाशित भेल—'पटनियाँ टट्टूक प्रति।' ई कविता फरवरी 1955 मे वैदेही मे छपल। हिंदी मे सर्वप्रथम हुनक कविता 'बरसात रात प्रभात' सितम्बर 1956 मे छपल। हुनक पहिल हिंदी कथा 'सती धनुकाइन' छल, जे मार्च 1958 मे कहानी मे छपल। ई कथा मूल हिंदी मे नहि लिखल गेल छल, अपितु मैथिलीक अनुवाद छल।

58 मे जखन हिंदी मे राजकमलक एक-आध टा रचना छपब शुरू भेलनि, ताधरि मैथिली मे प्रचुर मात्रा मे हुनक रचना छपि गेल छल आ मैथिली मे ओ एक टा अत्यंत प्रतिभाशाली लेखकक रूप मे प्रतिष्ठित भ' चुकल छलाह। मैथिली मे ओ तेरह वर्ष धरि लिखैत रहलाह आ हिंदी मे एगारह साल धरि। एहि तेरह बर्ख मे मैथिली-हिंदी मिलाक' ओ विपुल साहित्यक निर्माण कयलनि। हिंदी लेखनावधि कम रहितो मैथिलीक अपेक्षा हिंदी मे ओ बहुत बेसी रचना कयलनि। मैथिलीक

तुलना मे हिंदी मे प्रकाशनक अवसर, पाइ आ प्रसार बेसी छल। यैह कारण अछि जे ओ हिंदी मे बेसी लिखलनि। हुनक लेखन क्रम कहियो भंग नहि भेलनि। ओ निरन्तर लिखैत गेलाह। श्रम आ अभ्यास सँ हुनक कला निखरैत गेलनि आ स्मरणीय बनि गेलनि।

मैथिली

मैथिली मे राजकमल चौधरी लगभग एक सय कविता, तीन टा उपन्यास, सैंतीस टा कथा, तीन टा एकांकी आ चारि टा आलोचनात्मक निबन्ध लिखलनि। राजकमलक जीवन-काल मे मैथिली मे हुनक जे पहिल पोथी छपलनि, से छलनि कविता-संग्रह स्वरगंधा। स्वरगंधा 1958 मे कलकत्ता सँ छपल। राजकमल ओहि समय कलकत्ते मे छलाह। स्वरगंधाक बाद अनेक बर्ख धरि राजकमलक कोनो कविता पोथी नहि आयल। 1981 मे मोहन भारद्वाजक सम्पादन मे कविता राजकमलक आयल, जाहि मे ओहि समय धरि उपलब्ध हुनक 89 टा कविता संकलित भेल। हुनक रचना सभ अनेक गोटय लग छिड़िआयल अछि आ समय-समय पर पत्र-पत्रिका मे अचानक प्रकट भ' जाइत अछि।

1957क नवम्बर मे विद्यापति जयंतीक अवसर पर कलकत्ता मे एक टा कवि-सम्मेलन आयोजित कयल गेल रहय। सम्मेलन मे यात्री जी सेहो उपस्थित रहथि। मैथिली मे अधिकांशतः परम्परावादी लेखनक निरन्तरता केँ देखि कय यात्रीजी बहुत निराश रहथि। ओ बजलाह—मैथिली मे एखनहुँ पचास बर्ख पूर्वहि जकाँ कविता लिखल जा रहल अछि।

स्वरगंधाक प्रकाशन यात्रीजीक एहि निराशाजनक विचार केँ खंडित करबाक उद्देश्य सँ कयल गेल छल। यद्यपि यात्रीजी स्वयं पारम्परिक लेखन सँ अलग हँटि कय नव तरहक रचना क' रहल छलाह आ हुनक चित्रा नाम सँ एक टा संग्रहो प्रकाशित भ' चुकल छलनि, तथापि नव कविता कम्मे लिखल जाइत छल आ ओकरा व्यापक स्वीकृति नहि भेटल छलै। समाज मे तखनो परम्परावादी काव्य प्रतिष्ठित छल। तेँ जखन स्वरगंधा प्रकाशित भेल तँ परम्परावादी कवि-समाज दुर्गंधा कहि ओकर उपहास कयलक। नव कविताक स्वीकृति लेल राजकमलक संग-संग रामकृष्ण झा 'किसुन' आदि केँ तीव्र विचारधारात्मक संघर्ष करय पड़लनि।

स्वरगंधा मे नवम्बर 57 सँ अप्रैल 58 धरिक राजकमलक कलकत्ता प्रवास मे लिखल गेल कविता संकलित भेल। भूमिका मे ओ लिखलनि—हमर अधिकांश कविता कोनो क्षण-विशेष, अनुभव-विशेषक अभिव्यक्ति-चित्र अछि। किछु कविता

भावुक प्रेम, समाप्त भ' गेल प्रेमकथाक स्मृति, भावुक स्मृति कें चित्रित-अंकित करैत अछि, जे ई सभ वस्तु क्षणिक थिक... किएक तँ एहि प्रेमक उद्‌गम आ स्मृति कोनो व्यक्ति विशेष सँ सम्बन्धित अछि।

छंद, अलंकार, लय आदि कें राजकमल कविता लेल आवश्यक नहि मानैत छथि। एकर अर्थ ई नहि जे एकरा ओ कविताक क्षेत्र सँ बहिष्कृत करय चाहैत छथि। स्वरगंधाक कविता मे छंद आ लयक प्रभावकारी भूमिका अछि। कविताक लेल ओ मात्र शब्द कें आवश्यक मानैत छलाह। शब्दक बिना कविता करब असंभव अछि। ओ लिखैत छथि—कविता गद्य नहि थिक जे शब्दक अतिरिक्त आन कोनो विधान मानि कें चलत। गद्यक लेल व्याकरण-सम्मत एक टा सुनिश्चित स्वरूप आ मार्ग बना लेल गेल अछि... कविता मे एहन कोनो नियम-उपनियम नहि अछि। ...कविता हमरा लेल जीवन थिक, जीवनक नीक परिधान थिक।

कविता कें जीवन कहबाक पाछाँ राजकमलक अभिप्राय ई अछि जे कविता मे जीवनानुभवे प्रमुख वस्तु होइत अछि आ अपना लेल ओ अपन शब्द ताकि लैत अछि। जीवनक तीव्र आवेग-संवेग मे शब्द तपैत आ आकार ग्रहण करैत अछि आ स्वयं जीवन बनि जाइत अछि। स्वरगंधाक कविता एहने अछि। जीवनक ताप आ उष्मा सँ भरल। पति-पत्नी कथा मे हुनक अनुभूतिक उत्कटता कें बानगी रूप मे देखल जा सकैत अछि—

स्त्री अपन सखा-संतान, भानस-बासन
सुख-सेहंता, पीठक
हरियर-पीयर दर्द, आ उधार-लहनाक
कथा
कहैत अछि,
कहैत रहि जाइत अछि भोर सँ साँझ धरि
बाड़ीक कोनटा सँ
आँगनक माँझ धरि
कहैत रहि जाइत अछि साँझ धरि
पुरुष ओहि स्त्री, आ ओहि स्त्रीक सखा-संतान
भानस-बासन, सुख-सेहन्ता पीठक
कथा
सुनैत अछि

सुनैत रहि जाइत अछि साँझ सँ भोर धरि
ठोरक मंद-मंद मुस्की सँ
आँखिक नोर धरि
सुनैत रहि जाइत अछि भोर धरि

'हमरा लोकनिक युग आ आधुनिक मैथिली कविता' नामक अपन लेख मे राजकमल लिखलनि जे यात्रीजी अर्वाचीन होइतो आधुनिक नहि छथि, किएक तँ ओ मनुक्खक शारीरिक, सामाजिक अपराध आ पीड़ाक अनुभव तँ करैत छथि, मुदा ओकर अंतरंग, ओकर आत्मदमन, ओकर आत्म श्रृंगार हुनका बूझल नहि छनि। स्वरगंधा मे राजकमल यात्रीजीक एहि सीमाक अतिक्रमण करैत व्यक्तिक आन्तरिक जीवनक राग-विराग कें अभिव्यक्ति देलनि। हुनक शब्द, हुनक कविता आत्मभोगक प्रखर ताप मे सिद्ध भ'क' निकलैत अछि, तें बहुत तेजोमय आ प्रभावकारी होइत अछि। हुनक समस्त साहित्य निश्छल वैयक्तिकताक उदाहरण अछि। कविता कें ओ आत्माभिव्यक्तिक माध्यम मानैत छलाह। स्वरगंधाक बाद ओ अनेक श्रेष्ठ कविता लिखलनि, जाहि मे 'महावन', 'प्रेत-पीड़ित प्राण जीबथु आब ककरा हेतु,' 'गामक नाम थिक पुरबा बसात पछबा बसात', 'एहि जंगल सँ ओहि जंगल मे बताह महादेव जकाँ' आदि प्रमुख अछि। कलकत्ता मे ज्ञानपीठ मे सेठक नोकरी करैत राजकमल बहुत गंभीरता सँ एहि बातक अनुभव क' रहल छलाह जे भारत मे स्वतंत्रता सामान्य जनक लेल नहि आयल, सत्ताधारी वणिक सम्प्रदाय आ राजनेताक लेल आयल अछि। सामान्य जनक जीवन असफलता आ दुखक इतिहास अछि। ओ लिखलनि—मानव जीवनक सब सँ पैघ सफलता थिक, मिनिस्टरी दलक एम.एल.ए. बनि जायब। कविता आ साहित्य थिक जीवनक सभ सँ पैघ असफलता आ मृत्यु!!

राजकमल अपन कविता द्वारा एहि असफलता आ मृत्यु सँ लड़य चाहैत छलाह। मुदा कविता विजय नहि दिआ सकलनि। भेटलनि मात्र व्यथा आ निराशा।

हमरा दुख अछि
कविता हमर काँचे रहि गेल
एहि जारनि सँ उड़ल कहाँ धधरा
व्यथा कहब ककरा
कथा कहब ककरा?

मैथिली मे राजकमल तीन टा उपन्यास लिखलनि—आंदोलन, पाथर फूल आ आदिकथा। आंदोलन 57क अंत मे लिखायल, पाथर फूल 58क शुरू मे आ आदिकथा 58क मध्य मे। सभ सँ पहिने पाथर फूल प्रकाशित भेल—58क फरवरी वा मार्च मे। पाथर फूल पल्लवक सम्पादक दीपक जीक सहयोग सँ छपल छल, मुदा ककरो ई कहला पर जे उपन्यासक अश्लीलताक चलते प्रकाशक केँ जेल भ' जेतनि, प्रकाशित सामग्री केँ प्रकाशक नष्ट करबा देलनि। ओकर मात्र दुइए-तीन टा प्रति लोकक हाथ मे पहुँचल। तहिया सँ ओहो दू-तीन टा प्रति स्वार्थवश दबल अछि आ अनुपलब्ध अछि।

सभ सँ पहिने आ 1957 मे लिखाइयो केँ आंदोलन अगिला दस बर्ख धरि प्रकाशित नहि भ' सकल। यद्यपि ई मात्र पचास पृष्ठक लघु उपन्यास छल। राजकमल एहि उपन्यासक कहियो कोनो चर्चा नहि कयलनि। संभव अछि पहिल औपन्यासिक रचना हेबाक कारणेँ राजकमल ओकरा कमजोर मानि चर्चा-योग्य नहि बुझैत हेताह। मुदा ई मात्र संभावना अछि। असल ज्ञात कारण ई अछि जे एकरा क्यो छापय लेल तैयार नहि रहय। एहि उपन्यास मे राजकमल मैथिली भाषा संबंधी आंदोलनक पाछाँ नुकायल स्वार्थ केँ देखार कयने रहथि। मैथिली सँ सम्बद्ध संस्था, उन्नायक, आंदोलनकर्ता आ कलकत्ताक मैथिल समाज—एहि सभ केँ ई उपन्यास नांगट करैत रहय। एकरा प्रकाशित करब अपमानजनक आ आत्मघाती सिद्ध होइत, तेँ क्यो तैयार नहि भेल। कीर्त्तिनारायण मिश्र, जे दस बर्खक बाद एकरा छापलनि, लिखैत छथि—एकरा प्रकाशित देखबाक लालसा सँ स्वयं राजकमल केँ पोथी केँ समर्पित करबाक आश्वासन कतेक व्यक्ति केँ देब' पड़लनि आ कोना समर्पण लेल एक व्यक्तिक नाम काटि दोसर-तेसर-चारिम व्यक्तिक नाम लिखय पड़लनि, एकर इतिहास आ रहस्य बड़ रोमांचक आ कष्टदायक अछि। अंततः आंदोलन केँ राजकमल सौराठ सभा-स्थलक वृद्ध इनार केँ समर्पित कयलनि।

दस बर्खक बाद जखन कीर्त्तिनारायण मिश्र केँ पाण्डुलिपि भेटलनि तँ ओ अत्यंत जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे छल। जँ ओहि समय पाण्डुलिपि हुनका नहि भेटल रहितनि तँ ओ नष्ट भ' गेल रहैत आ आइ ओकर कोनो चेन्ह नहि रहैत। आंदोलन पहिने 1967 मे आखर मे धारावाही रूप मे छपल आ अप्रैल 1968 मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल।

राजकमल प्रश्नाकुल व्यक्ति छलाह। हुनका नाना प्रकारक प्रश्नाकुलता घेरने रहैत छलनि। हुनक अधिकांश रचनाक अंत प्रश्नाकुलता मे होइत अछि।

जीवन की थिक? हम किएक जिबैत छी? एहि तरहक जिज्ञासा युवावस्थे

सँ राजकमलक मानस केँ मथैत रहैत छलनि। हुनका कहियो एकर कोनो संतोषजनक अंतिम उत्तर नहि भेटलनि। जीवनक अंतिम समय मे अस्पताल डायरी मे ओ लिखलनि—दि क्वेश्चन आइ सफर्ड सो फार, वाज-ह्वाइ आइ लिभ? नाउ आइ एम ए चेंज्ड मैन। आइ डोंट सफर एनी क्वेश्चन। आइ लिभ-एंड दिस इज दि राइट रिप्लाइ टु ऑल दि क्वेश्चनिंग साइंस। आइ लिभ एंड दैट इज एनफ! (हम किएक जीबैत छी? ई प्रश्न हमरा सदैव व्याकुल करैत रहल अछि। मुदा आब हम बदलि गेल छी। आब कोनो प्रश्न हमरा पीड़ित नहि करैत अछि। हम जीबैत छी, बस। सभ प्रश्नक हमर यैह जवाब अछि।)

पहिल प्रश्नक उत्तर हुनका अनेक ठाम अनेक प्रकार सँ भेटलनि। आंदोलन मे ओ जीवन केँ क्षुधा, आत्मरक्षा आ यौन-पिपासाक रूप मे परिभाषित करैत छथि। मानव-जीवनक यैह मूल प्रवृत्ति थिक। मनुक्ख एहि परिधि मे चक्कर कटैत रहैत अछि। जीवन एहि सँ उत्पन्न होइत अछि आ एही मे खतम भ' जाइत अछि। यैह जीवनक अर्थ आ ओकर सार-तत्व थिक।

अपन वक्तव्य मे ओ लिखैत छथि—आंदोलन मैथिलीक प्रथम उपन्यास अथवा राजनीतिक पर्यवस्थिति मे लिखल गेल प्रथम वृत्तान्तक कथा थिक... उपन्यासक सम्पूर्ण संज्ञा देब, हम अनुकूल नइँ बुझइ छी।

आजुक मनुक्ख मे तीन प्रवृत्ति मुख्यतः देखल जाइए—क्षुधा, आत्मरक्षा आ यौन-पिपासा। एहन तीन प्रवृत्तिक चित्रांकन लेखकक प्रधान प्रयत्न रहल अछि।

आत्मरक्षाक अधिकारक भावनाक कारणेँ देश मे आर्थिक, राजनीतिक आंदोलन उठि रहल अछि। कलकत्ताक चालीस हजार मैथिल एहि मे प्रगतिशील छथि। कथा-वस्तु पर एकर स्पष्ट प्रभाव अछि।

आंदोलन मे एक टा मैथिल युवकक जीवन-संघर्ष आ मैथिली आंदोलनक स्वरूप अंकित भेल अछि।

आंदोलन मे राजकमलक कलकत्ता जीवनक आरंभिक स्थिति केँ देखल जा सकैत अछि। राजकमल व्यक्ति राजकमल आ लेखक राजकमल मे कोनो भेद नहि मानैत छलाह। तेँ साहित्य मे हुनक व्यक्तिगत जीवन प्रचुर मात्रा मे आयल अछि। ओ समकालीन जीवनक महत्त्वपूर्ण सवाल सँ टकराइत रहैत छथि; मनुक्खक संघर्ष आ मुक्ति केँ सम्पूर्ण संवेदनशीलता संगे वाणी प्रदान करैत छथि। मुदा ई सभ राजकमलक साहित्य मे कोनो सशक्त धाराक रूप मे नहि चलैत अछि, बीच-बीच मे बिजली जकाँ चमकि उठैत अछि। प्रबल आ सशक्त अंतर्धाराक रूप मे चलैत रहैत अछि लोकक यौन-पिपासाक अंतहीन कथा।

1957 मे वैदेही मे प्रकाशित लिली रेक कथा रंगीन परदा पढ़ि केँ हंसराज केँ ओ लिखने रहथि—फ्रेंच उपन्यासकार एमाइल जोलाक उपन्यास लज्जा स्मरण भ' गेल। परपुरुष-रति सभ युग ओ सभ देशक कथाक मुख्य विषय थिक। पर-रति सुन्नरि ओ सौभाग्यवती नारीक आभूषण थिक। सौंसे भारतीय धर्म आ साहित्य विदग्धा राधा-रानीक पर-रति कथा सँ भरल अछि... मुनि कन्या अहिल्या, स्पार्टाक महारानी हेलेन, इजिप्टक महासुन्दरी क्लियोपेट्रा, तोल्सतोयक महानायिका अन्ना केरेनिना, फ्लाबेयरक आकांक्षामयी मादाम बावेरी, शरतचंद्रक मालती...।

राजकमल अनुभव क' रहल छलाह जे रति-भाव साहित्यक मूलाकर्षण थिक आ अपन साहित्य मे एहि भावक विनियोग ओ प्रचुर मात्रा मे कयलनि। ई विनियोग निष्प्राण आ कृत्रिम नहि छल, निजी अनुभवक प्राण-रस सँ सिंचित छल। छेदीलाल गुप्त लिखैत छथि—बहुत दिनक बाद एक बेर भेंट भेल तँ ओ फाटाफट कैक टा आश्चर्यजनक घटना सुना गेलाह। ओ श्मशान गेल छलाह। ओहिठाम ओ देखलनि जे एक टा स्त्रीक लावारिश लहास पड़ल अछि आ ओकर चारूकात एक टा स्वस्थ व्यक्ति चक्कर काटि रहल अछि। ओ ओहि व्यक्ति सँ भेंट कयलनि। हुनका ज्ञात भेलनि जे ओ व्यक्ति ओहि मृत स्त्री संग संभोग करबाक फिराक मे अछि।

हम ई कहय चाहैत छी जे कथा लिखबा सँ पहिने हुनका अपन सोचल कथा केँ यथार्थ बनयबाक बेगरता होइत छलनि।

व्यक्ति राजकमल आ लेखक राजकमल मे कोनो फर्क नहि अछि—ई कहबाक अर्थ ई नहि जे ओ अपन व्यक्तिगत जीवनक अविकल साहित्यिक अनुवाद कयलनि, अपितु ई जे साहित्यिक सामग्रीक लेल, प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करबाक लेल ओ सायास नाना प्रकारक तीव्र आ वेगमय जीवन बितौलनि।

आदिकथा मे ओ अपना केँ कुपथगामी मानैत छथि। एहि स्वीकृति मे कोनो कुंठा नहि अछि। ई उपन्यास ओ मधुकर गंगाधर केँ समर्पित कयने छथि, जे ओहि समय हुनक अंतरंग मित्र रहनि, किंतु आगाँ चलि क' विरोधी भ' गेलनि।

आदिकथा दिसम्बर 1958 मे कलकत्ता सँ प्रकाशित भेल। आदिकथा बड़ हड़बड़ी मे लिखल गेल छल—मात्र चारि दिन मे। जतेक लिखाइत छल, ततेक रोज छपि जाइत छल। ओहि समय मैथिली मे लेखन-शैली मे एकरूपता नहि छल। भाषा केँ लिपिबद्ध करबाक अनेक ढंग प्रचलित छल। एहि उपन्यासक माध्यम सँ राजकमल मैथिली लेखन-शैली केँ वैज्ञानिकता प्रदान करबाक प्रयास कयलनि। मैथिली जेना बाजल जाइत छल, तहिना लिखबाक ओ प्रतिमान उपस्थित कयलनि। ओ एहि बात केँ रेखांकित कयलनि जे भारतीय भाषा आ लिपिक ई विशेषता थिक जे जएह

लिखल जाइए, सएह पढ़ल जाइए, सएह बाजल जाइए। आन भाषा आ लिपि मे सामान्यतः ई योग्यता नहि पाओल जाइछ। भाषा आ लिपिक एहि अनुरूपता केँ लेखन-शैली मे स्थान देब राजकमल केँ बेसी वैज्ञानिक आ श्रेयष्कर बुझयलनि।

आदिकथा मामी आ भागिनक पारस्परिक यौन-आकर्षणक खिस्सा कहैत अछि। लोक प्रेम करइए, प्रेम-पात्रक लेल बेकल रहइए, मुदा संस्कारक ससरफानी तोड़ि नइँ पबइए। इएह आदि-आदि सँ चल अबइत कथा थिक, आदिकथा थिक।

सुशीला आ देवकान्त धार्मिक-नैतिक संस्कारक द्वन्द्व मे फँसल रहि जाइत अछि आ जीवन केँ त्रासद बना लैत अछि। सामाजिक वर्जना एहि त्रासदी केँ ओहि दुनूक नियति बना दैत छैक। ओ दुनू एहि सामाजिक जकड़न केँ तोड़ि नहि पबैत अछि। अंत मे जा क' जँ देवकान्त तोड़बाक प्रयास करितो अछि तँ सुशीला जड़ (फ्रिजिड) भ' जाइत अछि। राजकमल लिखैत छथि—सहरसा-पूर्णिया इलाकाक जन-जीवनक पर्यवस्थिति मे लिखल गेल ई सामाजिक उपाख्यान समाजक बदलैत धार्मिक-नैतिक मान्यतादिक एहि संक्रांति काल मे कॉमेडी नहि बनि सकल, मात्र एक अपूर्ण ट्रेजेडी रहि गेल। इएह समकालिक यथार्थ थिक।

जीवन केँ त्रासद बनबय बला धार्मिक-नैतिक संस्कारक प्रति राजकमलक मोन मे विरोधक भाव रहनि आ ओहि सँ ओ दुखी छलाह। भूमिकाक रूप मे जे पत्र ओ बाबूसाहेब चौधरी केँ सम्बोधित करैत लिखलनि, ताहि सँ हुनक ई मनोभाव स्पष्ट अछि—

> चौधरीजी,
>
> हमरा लेखकक प्रति अहाँक जे विश्वास अछि, तकर रक्षाक प्रयत्न थिक आदिकथा।
>
> सोना मामीक प्रति देवकान्तक प्रेम बड्ड आदर्श थिक। आ एही आदर्श रक्षाक कारणेँ देवक जीवन स्वाहा भए गेल छनि।
>
> आब अहीं कहू; जे भस्म करए, आगि लेसने रहए, से आदर्श कोना, अनुकरणीय कोन तरहें? हम सामाजिक मर्यादाक पूजा करइ छी, आ, (अयथार्थ) आदर्शवादिताक घोर विरोध!
>
> एहि विरोधक प्रति की अहाँक मोन मे एक्को रत्ती सिनेह—सहानुभूति नइँए?
>
> राजकमल

एहू उपन्यास मे आत्मकथात्मक स्पर्श अछि। एकर स्थल (लोकेशन)

राजकमलक मातृक अछि। मुरलीगंज सँ पच्छिम एक टा छोट सन स्टेशन अछि दीनापट्टी। दीनापट्टी सँ सटले अछि राजकमलक मातृक रामपुर। आदिकथा रामपुरेक कथा थिक। स्त्री-पुरुषक प्रकृत आकर्षण केँ राजकमल संस्थागत अंकुश आ दमन सँ मुक्त करए चाहैत छलाह। हुनक ई दृष्टि मैथिली साहित्य-जगत लेल अनभोआर छल। एहि उपन्यास द्वारा ओ वैवाहिक संस्थाक यंत्रणादायी स्वरूप केँ देखार कयलनि।

जीवकान्त लिखैत छथि—आदिकथा मे हमरा खराप लगैत अछि शरच्चंद्रीय करुणा, अवसाद आ आत्मबलिदान-आत्मपीड़नक भावना। सोना मामी मैथिल बुझाइतो बंगाली भ' गेल छथि जेना।... तथापि, हम ई मानैत छी जे परम्परा आ अतीतक रुग्णता दिस संकेत करएवला, आ सत्य केँ चीन्हि ओकरा वाणी देबय वला ई उपन्यास मैथिली मे उपन्यासक भीड़-भाड़ मे एक टा विशिष्ट वस्तु अछि।

राजकमलक पत्र सँ ज्ञात होइत अछि जे 1960क जनवरी मे ओ बटगमनी नामक एक टा एहन मैथिली उपन्यास लिखबाक नेआर कयने रहथि, जाहि मे एक टा युवती भरि जिनगी विभिन्न लोकक संगे पड़ाएल घुरइए।

मैथिली मे राजकमलक सैंतीस टा कथा उपलब्ध अछि। गाम मे राति राति मे गाम तँ 1995क अंत मे प्रकाश मे आयल अछि, सेहो मूल मैथिली मे नहि, हिंदी अनुवादक रूप मे। अपन कथा संग्रह छपल देखबाक राजकमल केँ बड़ इच्छा छलनि। विभिन्न पत्र-पत्रिका सँ कथा सभ केँ ताकि एक टा पाण्डुलिपि तैयार कए देबाक लेल ओ हंसराज सँ एकबेर अनुरोधो कयने रहथिन। अव्यवस्थित जीवनक कारणेँ हुनका लग किछु नहि रहनि। पाण्डुलिपि रहने ओकरा ओ कतहु कहुना प्रकाशित करेबाक प्रयास करितथि। मुदा हुनक ई इच्छा पूरा नहि भेलनि। जीवन-काल मे एक्को टा कथा-संग्रह प्रकाशित नहि भ' सकलनि। मैथिली कथा सभक मात्र एक टा संकलन, कथा-पराग संपादित क' सकलाह।

मृत्युक लगभग एक साल बाद अप्रैल 1968मे बी.आइ.टी. सिन्दरीक किछु उत्साही छात्र लोकनिक सहयोग सँ हुनक पहिल कथा संग्रह ललका पाग प्रकाशित भेलनि। एहि मे सात टा कथा संग्रहीत कयल गेल। एहि संग्रहक बाद ए.सी. दीपकक मैथिली पॉकेट बुक्स सीरीज मे निर्मोही बालम हमर आ एक अनार एक रोगाह बहरायल। ई दुनू आब दुष्प्राप्य अछि। एक अनार एक रोगाह हिंदीक लघु उपन्यासक मैथिलीक अनुवाद छल। तेसर संग्रह आनन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाजक सम्पादन मे फरवरी 1980 मे मैथिली अकादमी छपलक। एहि मे तेरह टा कथा आ एक टा उपन्यास संकलित भेल। एहि तेरह मे छओ टा कथा पूर्व मे ललका पाग मे आबि चुकल छल। एहि संग्रहक नाम अछि—कृति राजकमलक। ललका पाग आ कृति

राजकमलक मे राजकमलक विवादरहित कथा सभ छापल गेल। ललका पाग मे मात्र एक टा कथा विवादग्रस्त छल, जकर शीर्षक छल ललका पाग। एही कथाक नाम पर एहि संग्रहक नाम राखल गेल छल। ई कथा मैथिल ब्राह्मणक बहु-विवाह प्रथा पर बड़ करगर चोट कयने रहय आ मैथिल ब्राह्मण केँ तिलमिला देने रहय।

राजकमलक पाँचम कथा संग्रह एक टा चम्पा-कली एक टा विषधर अप्रैल 1983मे तारानंद वियोगीक सम्पादन मे बहरायल। एहि मे राजकमलक तेरह टा विवादग्रस्त कथा केँ लेल गेल अछि। एखनो राजकमलक अनेक कथा संकलित-प्रकाशित हेबाक प्रतीक्षा क' रहल अछि।

चाहे साहित्य हो वा आलोचना-अध्ययन क्रम मे आब'वला प्रत्येक वस्तुक प्रति राजकमल तीव्र आ गंभीर प्रतिक्रिया करैत छलाह। फुलपरासवाली कथा एहने प्रतिक्रियाक उपज अछि। ललित मुक्ति नामक एक टा कथा लिखलनि जाहि मे ओ देखौलनि जे एक टा स्त्री एक टा स्वस्थ-आकर्षक पुरुष संगे पड़ाय जाइत अछि। राजकमल केँ ई यथार्थक प्रतिकूल लगलनि आ ओ फुलपरासवाली लिखि क' बतौलनि जे सामान्य मैथिल स्त्री एखनो एहि तरहक साहसिक डेग उठयबाक, एडवेंचर करबाक सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति मे नहि अछि।

1955 मे जखन वैदेही मे राजकमलक कथा ललका पाग छपल तँ मैथिली जगत सन्न रहि गेल। एक टा वर्ग कथानायिका तिरुक त्याग सँ चमत्कृत रहय तँ दोसर वर्ग बहु विवाहक निन्दनीय स्वरूपक दर्शन सँ आहत भ' गेल रहय। पहिल वर्ग राजकमल केँ विस्मय सँ देखलक आ दोसर वर्ग घृणा सँ। राजकमल एखन धरि मैथिली मे मणीन्द्र राजकमलक नाम सँ लिखैत छलाह। ललका पागक संग ओ राजकमल चौधरी भ' गेलाह। ललका पागक बाद राजकमलक अनेक एक पर एक विवादास्पद कथा आयल। सुरमा सगुन विचारे ना, माहुर, ननदि भाउज आदि तँ सर्वाधिक विवादग्रस्त रहल। राजकमलक अधिकांश कथा यौन-जीवन सँ सम्बन्धित छल आ सभ कथा मे कोनो ने कोनो रूप मे समाजक रूढ़ि, जड़ता आ मानव-विरोधी रवैयाक आलोचना कयल गेल छल। अपन कथा सभ मे राजकमल स्त्रीक सामाजिक आ यौन संबंधी उत्पीड़न केँ सभ सँ बेसी मुखर कयलनि।

सुरमा सगुन विचारै ना छपल तँ हल्ला मचि गेल जे राजकमल सहोदर भाइ-बहिन मे यौन संबंध देखा क' समाज केँ पतित क' रहल छथि। मैथिल समाज मे हुनका प्रति अपार घृणा देखबा मे आओल। एखन धरिक हुनक प्रशंसको एहि रचना केँ निन्दनीय बुझलक। मैथिल स्त्रीगण जे एहि मामला मे सामान्यतया लाजेँ कठौत भ' जाइत अछि, सेहो एकर विरोध कयलक। विरोध ततेक प्रबल छल जे

'कथा समाप्तिक विघटन आ समस्या' नामक एक टा लेख लिखि क' राजकमल केँ एकर प्रत्याख्यान करय पड़लनि। जवाब मे राजकमल लिखलनि—इनसेस्ट अथवा अधार्मिक शरीर-सम्पर्क केँ अंकित करब कोनो तरहें सुरमा सगुन विचारै ना कथा मे हमर उद्देश्य अथवा घटना माध्यम नहि अछि। कथा नायक (मामाजी) जीवनक गतिहीनता सँ थाकि गेल छथि, तेँ जगन्नाथपुरी जा रहल छथि, आन कोनो उचित अथवा अनर्गल कारणेँ नहि। गायत्री छोट बहिन छथिन, विधवा छथिन, अपन अग्रजक आश्रय मे छथिन तेँ मामाजी तीर्थाटनक लेल हुनको संग लेने जा रहल छथिन। मामीक मृत्यु सँ चारूकात अन्हार भ' गेल अछि, एहन शान्त सुखी परिवार मे अव्यवस्था आ अशांतिक जंगल पसरल जा रहल अछि।

आजुक समय मे परिवार कोना टूटि-भसिया रहल अछि, कोना लोक पीड़ा, परिताप आ अतीतक पुण्य-स्मरण मे जीवन बिता रहल अछि, एतबे अंकित करब, एहि कथा मे हमर उद्देश्य छल। एहि सँ बेसी नहि। भाँग पीने प्रमत्त भेल मामाजी केँ अन्हार मे इनार पर परलोकगत पत्नीक संशय होइत छनि। मात्र संशय होइत छनि। ओ कोनो दिन ई नहि बूझि सकलाह, जे ओ विभा (हुनक पत्नी) नहि छलीह, गायत्री (हुनक विधवा बहिन) छलीह। अस्तु, हम अपन कथा मे कोनो ठाम एहि प्रकारक संकेत नहि कयने छी, जे गायत्री आ मामा जी मे स्वाभाविकक अतिरिक्त कोनो अस्वाभाविक असामाजिक आकर्षण छलनि। एहन स्थिति मे, श्रीमती सुधारानी झाक ई मिथ्या आ प्रवंचक आरोप हमरा किछु कष्ट दैत अछि, संतोष नहि।

राजकमलक ई दीर्घ वक्तव्य विवाद केँ कहुना तत्काल शांत क' देबाक उद्देश्य सँ लिखल गेल छल। कथा मे सगोत्र रतिक अस्पष्ट संकेत भेटैत अछि। माहुर कथाक संबंध मे एक टा रोचक प्रसंग अछि। एक दिन राजकमल मैथिलीक साप्ताहिक पत्रिका मिथिला मिहिरक कार्यालय गेलाह। मिथिला मिहिरक उप सम्पादक उपेंद्र ठाकुर 'मोहन' हुनका पुछलकनि—राजकमल जी! हमरा एक टा जिज्ञासा अछि। माहुर मे भावहु आ भैंसुरक बीच अनुचित संबंध छैक की? राजकमल जीह कुचैत जवाब देलथिन—नारायण-नारायण! हमरा एहन पापी जुनि बुझू। कार्यालय सँ बाहर निकलला पर जखन हंसराज हुनका पुछलथिन जे अहाँ मोहनजी केँ एहन असत्य कथा किएक कहलियनि तँ राजकमल जवाब देलथिन—तों नहि जनैत छह। ओ बूढ़ लोक छथि। हुनका दुख होइतनि। तेँ एना कहलियनि।

ननदि भाउज तँ विवाद केँ पराकाष्ठा पर पहुँचा देलक। एहि मे पदुमा सँपकट्टी मे मरल बंगट संगे संभोग करैत अछि। रमानाथ झा एहि कथाक बारे मे लिखलनि जे ओना तँ राजकमलक सभ कथा असाधारण होइत अछि, मुदा ई कथा तँ असाधारणतो

मे विचित्र अछि। मैथिलीक पुरान आ परम्परावादी लेखक राजकमल केँ बताह कुकूर बुझय लगलाह, हुनका प्रति घृणा आ आतंक पसारय लगलाह। प्रतिक्रिया मे राजकमल एहन पुरातनपंथी लेखकक प्रति व्यवहार मे उग्र आ आक्रामक भ' जाइत छलाह। वीभत्सता, अनैतिकता, मर्यादाहीनता, उच्छृंखलता आदिक आरोप राजकमल पर निरन्तर लगाओल जाइत रहल आ ओ अन्हार घर साँपे साँप; तथाकथित परम्परावादीक प्रति आदि लिखि केँ एहि तरहक आरोप आ लांछन केँ खंडित करबाक प्रयास करैत रहलाह।

राजकमलक दुर्भाग्य ई छल जे हुनक अपनहि रचना आ वक्तव्य केँ हुनक विरोधक हथियार बना लेल गेल। हुनक कविता पाँती हमर मोनक आन्हर बताह कुकूर सँ पैंच ल'क' हुनका बताह कुकूर कहल गेल। पत्र मे व्यक्त असंयमित जीवनक आधार पर हुनक समस्त रचना केँ त्याज्य आ असफल घोषित क' देल गेल। ई खाली मैथिलीए मे नहि, हिन्दियो मे एहिना भेल।

1966मे अस्पताल सँ निकललाक बाद राजकमल रमानाथ झा केँ एक टा पत्र लिखलथिन—'शरीरक स्थिति नहि कहब, मुदा मोन आब निरोग अछि। तापहीन संयमित जीवन बितेबाक इच्छा भेल अछि। ताराक सिनेह आ अपनेक आशीर्वाद भेटैत रहत तँ हमर मनुष्य जीवन सार्थक हैत। वयसक छत्तीस वर्ष धरि अन्हारहि मे उबडुब करैत रहि गेलहुँ।' मार्च 1967 मे ओ दोसर पत्र मे हुनका लिखलथिन—साधना-मार्ग मे हम त्रिशंकु जकाँ टांगल छी। रास्ता नहि भेटइत अछि। मोन एकाग्र नहि होइत अछि। कुंडलिनीक गिरह सब कोना टूटत? हम बड्ड पतित छी, उद्धार होयब संभव नहि लगैत अछि। चमत्कार शक्ति प्राप्त करबाक इच्छा नहि अछि, केवल मोन केँ एकठाम बान्हि लेबाक अभिलाषा रखैत छी। से कोनो तरहें नहि होइत अछि।'

जीवनक कोनो क्षण मे अनुभूत राजकमलक एहि भावना केँ हुनक सम्पूर्ण जीवन आ साहित्यक मूल्यांकनक आधार बना लेल गेल। राजकमलेक अनुभव केँ राजकमल पर अंतिम टिप्पणी बना देल गेल। ललका पागक भूमिका मे एहि दुनू पत्रक शब्दावली उधार लैत मानसिक निश्चेष्टताक संग रमानाथ झा लिखैत छथि—एही एकाग्रताक अभाव मे राजकमलक कृति मे कोनहु विषय मे आस्था, विचारक दृढ़ता, कलाक परिपक्वता अथवा साहित्यिक रचना मे एकतानता नहि भ' सकल। इजोत केँ ओ दूर सँ चीन्हल, इजोत मे जएबाक कामना हृदय मे प्रबल भेल, मुदा संकल्पक शिथिलता, मनक चंचल आवेग, वासनाक लौल्य हुनका ओहि दिस बढ़ए नहि देलक। हुनक काव्य-सर्जन मे जीवनक मौलिक स्पन्दन तँ अछि, मुदा आलोकमय

नहि, भाव संवेदनक तीव्र बौद्धिक विपथगामिता सँ ऊपर नहि उठि सकलाह। ओ केवल जड़गत रूढ़िक विरुद्ध विद्रोह करैत छथि, मुदा लोकजीवन मे मंगलक भावना हुनक काव्य मे नहि आयल। अन्हारहि मे बौआइत क्षणिक भोगक तरंग मे उबडुब करैत ओ जीवन शेष कए देल। वस्तुतः राजकमलक अवसान मानवताक अपूरणीय क्षति मानल जाएत। एहन प्रतिभाक ई अंत जीवन मे संयम आ नैतिकताक महत्त्व सिद्ध करैत अछि। हुनक अपने शब्द मे 'तापहीन संयमित' जीवन मे राजकमलक प्रतिभाक नैसर्गिक रूप स्फुट भ' सकैत।

वस्तुतः रमानाथ झा राजकमलक प्रति न्याय आ विवेक नहि क' सकलाह। चेतनाप्रवाही आ मनोविश्लेषणात्मक शैलीक कारणेँ ओ राजकमल साहित्यक सम्पूर्ण शिल्प केँ कृत्रिम घोषित क' दैत छथि। वस्तुतः रमानाथ झा परम्परावादी चिन्तन आ दृष्टिक प्रतिनिधित्व करैत बुझाइत छथि।

आभिजात्य आ सामंतवादी संस्कार सँ पोषित परम्परावादी लोकनि राजकमलक साहित्य केँ पतितोपाख्यान कहि क' ओकर खिल्ली उड़ौलनि। हुनका सभक नजरि राजकमलक यौन संबंधी विषय पर तँ गेलनि, हुनक दृष्टि पर नहि गेलनि। राजकमलक उद्देश्य पाठकक कामुकता केँ भड़कायब कथमपि नहि रहल, अपितु मध्यवर्गीय आ निम्नमध्यवर्गीय मैथिल स्त्रीगण केँ विभिन्न प्रकारक शोषण आ यंत्रणा सँ मुक्ति देआयब छल। राजकमल धर्म आ नैतिकता केँ एक वर्गक मनुक्ख द्वारा दोसर वर्गक मनुक्खक शोषण करबाक हथियार बुझैत छलाह। यैह कारण छल जे ओ यौन-जीवन सनक गोपनीय विषय केँ सार्वजनिक बना, ओहि माध्यम सँ धर्म आ नैतिकताक मानव-विरोधी आ वीभत्स स्वरूप केँ उजागर कयलनि। राजकमल लिखैत छथि—धर्म, नैतिकता, देव-देवतादि समाजक हाथक साधारण हथियार थिक। आन किछु नहि मात्र व्यक्ति केँ बध करबाक हेतु समाज धर्मक गीत गबइए, नैतिकताक माला जपइए, देवी-देवता पर पुष्पहार सजबैए।

बीमारीक पहिल गंभीर दौराक बाद 1966क आरंभ मे अपन सासुर चानपुरा मे स्वास्थ्य-लाभ करैत राजकमल अनेक श्रेष्ठ रचना कयलनि। कथा साँझक गाछ आ कविता महावन ओही कालक रचना अछि। साँझक गाछ विश्वदर्शी (पैनोरैमिक), तात्विक (फिलॉसोफिकल) आ त्रासदी सँ पूर्ण रचना अछि।

एहि कथाक प्रस्तुत अंश मे राजकमलक वैयक्तिक जीवनक विरोधाभास आ विडम्बना प्रकट भेल अछि—''हमर एतेक पैघ आ वैविध्यपूर्ण जीवन मे हमरा मात्र दुइए तरहक स्त्रीगण सँ भेंट भेल अछि—पहिल तरहक हमर स्त्री आ हमर भौजी आ दोसर तरहक ओ सभ स्त्रीगण जे शहर-बाजार मे घुमैत अछि, एक दोकान

मे कोनो वस्तु कीनि, दोसर दोकान मे कोनो आन वस्तु बेचैत् अछि। जे थियेटर-नौटंकी मे काज करैत अछि, जे ओ काज करैत अछि जे एहि विशाल संसार मे कयल जाइत छैक। पहिल तरहक स्त्री सँ हम पचहत्तरि योजन दूर भागि क' भरि जीवन बौआइत रहल छी, पहिले तरहक स्त्रीक सम्पर्क पयबाक हेतु, आ अपन गाम सँ भागि क', हम सभ ठाम अपने गाम ताकि रहल छी...।

इएह थिक हमर जीवनक विरोधाभास—एहन विरोधाभास, जे अपन स्वामी केँ शरीर सँ रुग्ण-रोगग्रस्त, मोन सँ जर्जर आ जीवनक प्रत्येक क्षेत्र मे असफल बना दैत अछि।''

राजकमल एक टा एहन युगक देन छलाह जे भारतीय स्वतंत्रता-संग्रामक साक्षी छल आ नव स्वतंत्र भारत मे अपन अनेक आशा-आकांक्षाक पूर्तिक स्वप्न देखैत छल। ओहि समय भारतीय बुद्धिजीवीक एक टा वर्ग एहन छल जे एक दिस पूँजीवादक विरोधी तँ दोसर दिस वैयक्तिक स्वतंत्रताक हनन ल'क' मार्क्सवादक कटु आलोचक छल। ई वर्ग एक टा एहन समाजवादी व्यवस्था चाहैत छल, जाहि मे पूँजीवादी आ मार्क्सवादी व्यवस्थाक दोष नहि हो। मुदा एहि वर्ग लग ओकर बहुत स्पष्ट परिकल्पना नहि छल। एहि वर्ग मे जनताक प्रति अपार सहानुभूति आ राजनीतिक व्यवस्थाक प्रति विरोधक भाव छल। राजकमल केँ भारतीय बुद्धिजीवीक एहने वर्ग मे राखल जा सकैत अछि।

राजकमलक समय मे एहि नव समाजवादी दृष्टिक संग-संग कला एवं साहित्यक क्षेत्र मे पूँजीवादी तथा मार्क्सवादी दृष्टि सेहो प्रतिफलित भ' रहल छल। मैथिली तथा हिंदी मे एहि तीनू प्रवृत्तिक प्रतिनिधित्व विभिन्न रचनाकार द्वारा भिन्न-भिन्न ढंग सँ भ' रहल छल।

मैथिली कविताक क्षेत्र मे सुरेन्द्र झा 'सुमन' पूँजीवादी भावधारा आ पारंपरिक रचना-पद्धतिक प्रतिनिधित्व क' रहल छलाह, तँ वैद्यनाथ मिश्र यात्री मार्क्सवादी भावधारा आ लोकशिल्पक प्रतिनिधित्व क' रहल छलाह। मैथिली मे चल अबैत लोकोन्मुखी काव्य परंपरा केँ यात्री उत्कर्ष प्रदान कयलनि। ओ जीवन-यथार्थ केँ देखबाक एक टा नव दृष्टि आ ओकरा अभिव्यक्त करबाक एक टा नव पद्धति विकसित कयलनि। राजकमल एहि काव्य-परंपरा सँ अपना केँ जोड़लनि अवश्य, मुदा ओकर मतवाद सँ स्वयं केँ पृथक क' लेलनि। यात्रीक रास्ता जतय समाज सँ व्यक्ति दिस जाइत छल, ततय राजकमलक रास्ता व्यक्ति सँ समाज दिस। यात्रीए जकाँ राजकमलो कविता केँ शास्त्रीय बंधन सँ मुक्त कयलनि आ काव्य-भाषा केँ लोक-भाषाक निकट अनलनि। मुदा यात्रीक सामाजिकता आ राजकमलक

वैयक्तितताक कारणेँ दुनूक शब्दावली, मोहावरा, बिंब आ प्रतीक भिन्न भ' गेल।

राजकमलक कविता व्यक्तिक राग-विरागक ग्राफ अछि। ओहि मे निजता आ अपनत्व अछि। राजकमलक काव्यानुभूति ततेक तीव्र आ निष्कपट अछि जे ओ अनायास आकृष्ट तथा अभिभूत क' लैत अछि। अभिनव दृष्टि आ अनुभव-सिद्ध संवेदना हुनक काव्य केँ विशिष्ट आ शक्तिशाली बनबैत अछि। व्यक्तिपरक होइतहु ऐतिहासिक तथा पौराणिक प्रतीक एवं बिंब-निर्माणक कारणेँ हुनक काव्य-संदर्भ विस्तृत आ व्यापक भ' जाइत अछि।

राजकमलक समय मे मायानंद मिश्रक अभिव्यंजनावाद, सोमदेवक सहजतावाद आ कीर्तिनारायण मिश्रक अकवितावाद चर्चाक विषय बनि क' रहि गेल; कोनो काव्यांदोलन ठाढ़ नहि क' सकल। एहि सभ केँ समाहित करैत नवकविता अस्तित्व मे आयल, जे तत्कालीन नव काव्य-दृष्टि आ नवीन अभिव्यक्ति-पद्धतिक परिचायक भ' गेल। नवकविता अनुभूत यथार्थ आ ओकर अकृत्रिम अभिव्यक्ति पर जोर देलक। राजकमल एहि नवकविताक सब सँ समर्थ प्रतिनिधि छलाह। मैथिलीक कथो साहित्य मे अनेक प्रवृत्ति आ रुझान प्रकट भ' रहल छल। एक दिस जँ भाववादी रोमांटिकता सँ युक्त मायानंद मिश्र सनक कथाकार छलाह तँ दोसर दिस मार्क्सवादी विचारधारा सँ प्रभावित ललित छलाह। ललित नव स्वतंत्र भारतक मूलभूत सामाजिक आर्थिक परिवर्तन केँ रेखांकित कयलनि। एहि परिवर्तन केँ राजकमलोक कथा मे लक्षित कयल जा सकैत अछि, मुदा ललित मे जे विविधता आ व्यापकता भेटैत अछि, से राजकमल मे नहि। ललितक झुकाव प्रातिनिधिक चरित्र-निर्माण दिस बेसी छनि; राजकमल मे एहन झुकाव नहि अछि। राजकमल मुख्यतः स्त्रीक शोषण आ उत्पीड़न केँ अपन कथा-साहित्यक विषय बनौलनि, जखन कि ललितक संसार विस्तृत आ बहुरंगी अछि। राज मोहन झा लिखैत छथि—''कथ्यक विविधता, दृष्टिक विस्तार तथा अनुभूतिक गांभीर्य जे ललित मे भेटैत अछि से राजकमल आ मायानंद मे नहि। राजकमल आ मायानंदक भावभूमि सघन बेसी अछि, विस्तृत कम।''

मैथिली-हिंदी कथा-साहित्य मे राजकमलक शैली सर्वाधिक विशिष्ट वस्तु अछि। ओ कथाक पारंपरिक वर्णनात्मकता एवं लम्बवत विकासवला ढाँचा केँ तोड़ि देलनि। हुनक शिल्प मे कथा एवं कविता दुनूक वैशिष्ट्य समाहित अछि।

राजकमलक मैथिली साहित्य अधिकांशतः ग्रामीण जीवन सँ जुड़ल अछि। हुनक व्यक्तित्व मैथिल संस्कृति सँ निर्मित आ संस्कारित छल। मैथिल संस्कृति मूलतः कृषि-संस्कृति अछि। यैह कारण अछि जे हुनक मैथिली साहित्य ग्राम्य-जीवन पर केन्द्रित अछि। मैथिली मे हुनक स्वाभाविक, सहज-सरल आ अकृत्रिम रूप प्रकट

होइत अछि, तेँ हुनक मैथिली साहित्य नैसर्गिक आभा सँ युक्त आ जीवन्त अछि।

हिंदी साहित्य मे राजकमल शहरी जीवनक चित्रण कयलनि। शहरी जीवनक कृत्रिमता आ अविशिष्टता सँ हुनक मैथिली साहित्य बचल अछि तेँ बेसी मानवीय, भव्य आ मोहक लगैत अछि।

राजकमलक कलाक बारे मे जीवकान्त सार्थक आ सटीक टिप्पणी करैत लिखैत छथि—ओ लेखने टा नहि, गपोशप मे शब्दक विलक्षण ढंगे प्रयोग करैत छलाह। शब्द पर राजकमलक निजत्वक छाप रहैत छलनि। शब्द केँ ओ बड़ तपस्या सँ सिद्ध कयने छलाह, अपन वश मे कयने छलाह। यैह कारण अछि जे मैथिली मे हुनक शब्दक, हुनक मोहावराक एक टा विशिष्ट आकर्षण आ स्वाद छल। कविता आ गद्यक भाषा जे ओ अपना लेल विकसित कयलनि, से बड़ टटका, बड़ मोहक आ बड़ विस्मयकारी छल। हिन्दियो मे ओ एहने भाषा, निजत्वपूर्ण भाषा विकसित कयने छलाह, जकर आकर्षण मे हुनक विरोधियो फँसि जाइत छल आ ओहि सटीक आ महत्त्वपूर्ण भाषाक लोहा मानि लैत छल।

हिंदी

राजकमल चौधरी हिंदी मे आठ उपन्यास, दू-अढ़ाय सय कविता, बेरानबे टा कथा, पचपन टा निबंध, तीन टा नाटक आ पाँच टा नियमित स्तम्भ-लेखन कयलनि। निबन्ध, नाटक आ स्तम्भ-लेखन एखन धरि पुस्तकाकार प्रकाशित नहि भ' सकल अछि। हिंदी मे तीन टा कथा संग्रह अयलो पर हुनक अनेक कथा एखनो असंकलित अछि। सामुद्रिक और अन्य कहानियाँ आ मछली जाल ई दुनू कथा संग्रह दुष्प्राप्य अछि। एक टा संग्रह 1995मे आयल अछि सुरेश शर्मा आ शोभाकात मिश्रक सम्पादन मे। हुनक कविता संकलन इस अकाल वेला मे 1988मे छपल, जाहि मे हुनक कंकावती आ मुक्तिप्रसंग समेत दू सय पन्द्रह टा कविता संकलित भेल अछि। हिंदी मे ओ किछु बांग्ला उपन्यासक अनुवादो कयलनि। राजकमल अंग्रेजियो मे किछु कविता लिखलनि। हुनक 10-12 टा अंग्रेजी कविता उपलब्ध अछि। हुनक बिलीफ शीर्षक कविता अमरीकी पत्रिका पॉटपॉरीक ग्रीष्म अंक मे छपल छल। हिंदी मे राजकमल 1956 सँ छपय लगलाह। पहिल रचना जे सितम्बर 56मे नई धारा मे छपलनि, से छलनि 'बरसात : रात : प्रभात' नामक कविता। तकर बाद डेढ़ साल धरि कतहु कोनो कविता नहि छपलनि। 1958 मे मात्र दू टा कविता छपलनि। 56 सँ 58 धरि तीन साल मे हुनक मात्र तीन टा हिंदी कविता छपलनि। 1957क अंत मे ओ कलकत्ता चल गेल छलाह आ ओतय जीबाक लेल तीव्र संघर्ष क' रहल

छलाह। कविता मे पाइ नहि छलै, पाइ छलै गद्य मे। आ जीबाक लेल हुनका पाइक बड्ड बेगरता छलनि तेँ ओ कविता कम, गद्य बेसी लिखलनि। 1957-58 मे ओ मैथिली मे तीन टा उपन्यास, अनेक कथा आ कविता लिखलनि। हिंदीक लेल हुनका समयो नहि छलनि। 1958क उत्तरार्द्ध मे ज्ञानपीठ मे नोकरी शुरू कयलाक बाद ओ हिंदी दिस झुकि गेलाह। हिंदी मे बेसी रचना करय लगलाह। 1960 मे नोकरी छोड़ि देलाक बाद तँ ओ पूर्णतया हिंदी केँ समर्पित भ' गेलाह। 1961-62 मे पाँच-सात टा छोट-छोट कविताक अतिरिक्त ओ मैथिली मे किछु नहि लिखलनि। एहि अवधि मे ओ बहुत तीव्र गतिएँ हिंदी मे प्रचुर रचना कयलनि। जीविका लेल लेखन पर निर्भर रहबाक कारणेँ दोसर कोनो उपायो नहि रहनि। पाइ हिन्दिए मे रहै, मैथिली मे नहि। पाइए लेल ओ कैक टा बांग्ला उपन्यासक हिंदी अनुवाद कयलनि, जाहि मे सभ सँ बेसी शंकरक चौरंगी प्रसिद्ध भेल। कलकत्ता मे रहैत ओ बांग्ला सीखि गेल छलाह। सम्पर्क आ अध्ययनक बलेँ हुनका बांग्ला भाषा पर अधिकार भ' गेल छलनि। अप्रैल 1963 मे कलकत्ता छोड़बा धरि ओ खाली हिन्दिए मे लिखैत रहलाह। 1960 सँ 1967 धरि, सात साल, ओ हिंदी मे धुरझार लिखलनि। ओना हिंदी मे लिखब ओ बहुत पहिनहि शुरू कयने छलाह 1948-49 मे, मुदा छपब शुरू कयलनि 1956 सँ।

मैथिली आ हिंदी मे राजकमल अनेक नाम सँ लिखलनि—शशि चौधरी, अनामिका चौधरी, वनलता सिंह, कमल चौधरी, फूलचंद, मासूम अजीमाबादी आदि। 1956क जमाना मे राजकमल मासूम अजीमाबादीक नाम सँ उर्दू शेरो शायरीक तर्ज पर किछु रचना कयने छलाह। ओहि समय ओ पटना सचिवालय मे किरानी छलाह आ अपन जीवन सँ असंतुष्ट रहबाक कारणेँ व्यवस्थाक प्रति हुनका मोन मे विद्रोहक भाव छलनि। विद्रोहक ई भाव हुनक उर्दू ढाँचावला रचना मे सेहो प्रकट भेल।

हुनक ई विद्रोही मनोभाव कलकत्ताक जीवन-संघर्षक कारणेँ आओर तीव्र आ गहन भ' गेलनि। एक दिन ओ छेदी लाल गुप्त केँ कहने छलथिन जे हम कम्युनिस्ट छी आ हमरा कम्युनिस्ट पार्टीक काज करबाक चाही। एही कारणेँ किछु दिन धरि ओ कम्युनिस्ट पार्टीक पत्र स्वाधीनता जाइत रहलाह। कम्युनिस्ट ओ रहल होथि वा नहि, मुदा हुनक जीवन-परिस्थिति जेहन छलनि, जे ओ मार्क्सवादी विचारधाराक प्रति आत्मीयता आ सहानुभूति अवश्य अनुभव करैत रहल हेताह। छेदीलाल गुप्त लिखैत छथि—मुझसे वह जब-जब मिला है, तब-तब उसके चेहरे पर आदमी की जहालत के झेलने का तनाव मिला है और आक्रोश में कहते-कहते चुप हो जाने के बाद सहसा अब चला कह कर वह चला गया है।

कलकत्ताक हुनक आरंभिक जीवन कष्ट आ अपमानक जीवन छलनि। अभावपूर्ण जीवन हुनका मिथिला दर्शन आ स्वाधीनता सँ दूर ल' गेलनि। ओ ज्ञानपीठ सँ सम्बद्ध भ' गेलाह। हुनक एहि यात्राक व्याख्या करैत छेदीलाल गुप्त लिखैत छथि—स्वाधीनता से ज्ञानोदय तक की उसकी यात्रा न केवल एक काम करने वाले आदमी की यात्रा थी, बल्कि एक सूझ-बूझ वाले आदमी के स्वाभाविक विकास की यात्रा थी। उसके विचारों में भी परिवर्तन आया था और उसने ज्ञानोदय के दफ्तर में ही बैठकर मार्क्सवाद को कोसा था और प्रगतिवाद को पुराना करार देते हुए वह सब अस्वीकार गया था, जिन स्वीकारोक्तियों के आधार पर वह नौकरी ढूँढ़ने का काम मुझ पर सौंपे था। इस परिवर्तन से मुझे जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ था, क्योंकि कलकत्ते में हजार हाथ की काली की कराल प्रतिमा है, चौरंगी है, बार हैं, होटल हैं और एक ऐसा वर्ग व्यामोह है जो सहज में आदमी को आकर्षित करता है, लालसाओं की चटखार के लिए उकसाता है, क्योंकि यहाँ आए दिन की जरूरतें निर्णायक परिस्थिति बनाती हैं...।

छेदीलाल गुप्त सँ एक दिन अचानक भेंट भेला पर राजकमल कहलथिन—नीक बूझी अथवा बेजाय, हम तँ आब वैह लिखब जे लिखने पाइ देब'वला अखबार पाइ दैत अछि।

राजकमलक एहि कथनक अर्थ ई नहि लगाओल जयबाक चाही जे एहि सँ पूर्व ओ क्रांतिकारी साहित्यक सृजन करैत छलाह आ आब प्रतिक्रियावादी भ' गेलाह। विद्रोह राजकमल साहित्यक स्थायी चरित्र अछि, ठीक ओहिना जेना सेक्स; राजकमलक विद्रोह वैयक्तिक दुखभोग आ पीड़ा सँ जन्म लैत अछि तेँ ओहि मे प्रभूत ओज आ करुणा भेटैत अछि, आगाँ चलि क' जे छूटि जाइत अछि से अछि युवा राजकमलक राजनीतिक प्रतिबद्धता। आब ओ अपन निजी इच्छा-आकांक्षा, अनुभव आ ज्ञान सँ परिचालित होमय लगैत छथि।

मुदा राजकमल मे ई परिवर्तन अचानक नहि भेल। प्रखर राजनीतिक चेतना सँ सम्पन्न आ जुझारू महानगर कलकत्ता मे जीवन बितबैत ओ आधुनिक सभ्यताक मारूख चरित्र केँ चिन्हलनि आ ओकरा अपन पहिल हिंदी उपन्यास 'नदी बहती थी' मे व्यक्त कयलनि—बड़े-बड़े पुस्तकालय, और म्यूजियम, और घास के लम्बे मैदान, और पार्क, और विश्वविद्यालय, और शेयर मार्केट, और सरकारी दफ्तर सारे के सारे अफीम हैं। हम सभी अफीम के नशे में कैद हैं। हमें पता नहीं चल रहा है कि वक्त हमें किन चक्कियों में पीस रहा है। हम अपना खून उगल रहे हैं, और अपने इर्द-गिर्द के लोगों का खून पी रहे हैं।... हम लूट लिए जाते हैं, लेकिन

हमें मालूम नहीं होता कि लुटेरा कौन है। अब लूट का तरीका बदल गया है, लुटेरे हमारी दौलत, ताकत, इज्जत या ईमान लूटते नहीं, बस खरीद लेते हैं। हम बिक जाते हैं, अपना सम्पूर्ण अस्तित्व उन्हें सौंपकर हम मर जाते हैं। हमारा घर-परिवार, हमारी सुख-शांति, हमारी दुनिया मर जाती है और उनकी दुनिया बनती जाती है।

हुनका विश्वास भ' गेल छलनि जे एहि खरीद-बिक्री सँ एहि मृत्यु सँ कोनो राजनीतिक विचारधारा वा दल छुटकारा नहि देआ सकैत अछि। आरंभ मे जाहि मार्क्सवादी विचारधारा पर हुनका आस्था रहनि, तकरो सँ मोहभंग भ' जाइत छनि। 'नदी बहती थी'क पात्र रंजीत कहैत अछि—मार्क्स-एंगेल्स से ही क्या मिला? हुनक ई निराशा कलकत्ता प्रवास सँ ल' कए जीवनक अंत धरि बनल रहलनि। 1967क आम चुनावक बाद अपन वक्तव्य मे ओ लिखैत छथि—जनता परिवर्तन चाहती है, जबकि परिवर्तन के स्वरूप की उसे कल्पना नहीं है, और न ही किसी भी वामपंथी राजनीतिक दल के सिद्धान्तों और योजनाओं को जनता ने स्वीकार ही किया है। जनता नहीं जानती है कि आर्थिक स्वाधीनता का अर्थ क्या होता है और इसे कैसे प्राप्त किया जाता है। ऐसी परिस्थिति में बुद्धिजीवियों का—खासकर लेखकों और कवियों का यह सामाजिक कर्तव्य होता है कि वे जनता को सही जानकारी दें—उसकी स्थिति के विषय में और उसकी मुक्ति के विषय में।

सही जानकारी देबाक लेल आ मुक्ति देआबए लेल राजकमल जनता लग वापस चल जाए चाहैत छथि। राजकमल जनताक दुख सँ व्यथित छथि आ अपन दायित्व-चेतना हुनक पीछा करैत रहैत छनि, मुदा मुक्तिक उपायक बारे मे हुनका बूझल नहि छनि, तेँ मुक्तिप्रसंग मे ओ लोकतंत्री संसार सँ अलग भ'क' साधु, भिखमंगा आ रंडीक दुनिया मे आ मसान मे चल जेबाक आह्वान करैत छथिन। एहि अनास्थावादी, अराजकतावादी, आत्मघाती आह्वानक लेल राजकमलक बहुत तीव्र आ व्यापक आलोचना भेल। मुदा ई आह्वान हुनक तात्कालिक तांत्रिक मनोदशा मात्र केँ इंगित करैत अछि। मुक्ति प्रसंगक एहि तथाकथित अराजक स्वरक बाद जखन हुनक ई वक्तव्य आयल जे आब ओ जनता लग वापस चल जेताह तँ हिंदी जगत चैनक साँस लेलक आ एहि वक्तव्य केँ आधार बना हुनक तथाकथित साहित्यिक बुराइ लेल क्षमा-याचना करैत हुनक प्रतिभाक मंगलकारी प्रस्फुटन लेल एक टा आशावादक स्थापना कयलक।

किंतु राजकमल तँ राजकमल छलाह वैयक्तिकता आ सामाजिकताक द्वन्द्व सँ निर्मित। जँ जीवित रहितथि तँ कोनो दिन कहि सकैत छलाह—हम जनता लग नहि जायब, हमर की क' लेब? जेना ओ अज्ञेयक प्रसंग मे कयने छलाह। राजकमल

मुक्ति प्रसंग अज्ञेय केँ समर्पित कयने छलाह, अज्ञेय के पत्रक संग। पत्र मे अज्ञेय लिखने छलथिन जे मृत्यु केँ स्वीकार कए जीवन जियल जा सकैत अछि। एहि पत्र पर अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत शिवचंद्र शर्मा केँ राजकमल कहने रहथिन—ओहुना कोनो स्वीकार्य हमरा लेल सदैव अस्वीकार्ये रहल अछि। आ मृत्यु! डेरबुक आ लोक केँ फुसियाब'वला निरीह शब्द। अंतिम साँस धरि हमरा जीवने स्वीकार्य होयत।

राजकमल कोनो तरहक मतवाद केँ साहित्य लेल घातक बुझैत छलाह। हमरा लोकनिक युग आ आधुनिक मैथिली नामक अपन निबंध मे ओ लिखैत छथि—कविता जखन वादक ससरफानी सँ बान्हल जाइत अछि, तखने कविताक अर्थ, रस, संदर्भ आ प्राणवत्ता समाप्त भ' जाइत छैक। कविताक लेल वाद होइत अछि खेतक ऊँच आरि जकाँ, जे एहि खेतक पानि ओहि खेत मे जाय नहि देत। साहित्यिक संदर्भ मे सभ प्रकारक मतवादक विरोधी होइतो राजकमल लेखकीय जीवन-दर्शन केँ नीक साहित्यक लेल अनिवार्य बुझैत छलाह। ओ लिखैत छथि—लेखक जाधरि अपन जीवन-दर्शनक अनुसार जीवन व्यतीत करैत अछि आ संघर्ष मे सम्मिलित रहैत अछि, ताधरि ओकर रचना नहि टुटैत छैक आ ओ अपनो नहि टुटैत अछि। अर्थात् लेखक केँ सम्मिलित रहब आवश्यक छैक आ आवश्यक छैक जे ओकरा अपन एक टा जीवन-दर्शन हो।

राजकमल अपन वैयक्तिक मान्यता आ विचारक आधार पर जीवन बितबैत सामाजिक संघर्ष करय चाहैत छलाह। हुनक विश्वास छलनि जे कोनो बाह्य मतवाद वा जीवन-दर्शन रचनाकारक व्यक्ति-जीवन आ लेखकीय-जीवनक निजता आ स्वतंत्रताक अपहरण क' लैत अछि। एहन स्थिति मे रचनाकारक व्यक्तिगत जीवन क्लीव आ ओकर साहित्य निष्प्राण भ' जाइत अछि।

राजकमल अपना लेल एक टा जीवन-दर्शन गढ़लनि। हुनक जीवन-दर्शन व्यवस्थित आ सुसंगत नहि अछि आ ओहि मे बहुत अंतर्विरोध अछि। ओ प्रकटतः अत्यंत व्यक्तिवादी लगैत अछि मुदा सारतः व्यक्ति आ समाजक पारस्परिक द्वन्द्व पर आधारित अछि।

राजकमल मे जे व्यक्तिवाद, विद्रोह आ सेक्स भेटैत अछि, ताहि आधार पर हुनका अमेरिकाक बीट पीढ़ी, बांग्लाक भूखी पीढ़ी आ हिंदीक अकविता आंदोलन सँ जोड़ल जाइत रहल अछि। किछु गोटय तँ हुनक जीवन-शैली आ समस्त साहित्य केँ बीट आ भूखी पीढ़ीक अनुकरण आ नकल मानैत अछि। एहन आरोप तथ्य सँ दूर आ असत्य अछि।

अमेरिका मे बीट पीढ़ी जखन 1954-55 मे जन्म ल' रहल छल आ अपन प्रतिष्ठा आ प्रचार लेल संघर्ष क' रहल छल; राजकमल तखन मैथिली मे खूब छपि रहल छलाह आ हुनक व्यक्तिवाद, विद्रोह आ सेक्स हुनक साहित्य मे तखनो उपस्थित छल। बीट पीढ़ीक गंध भारत कें 1960-61मे लागल आ ओकर प्रचार तखन भेल, जखन 1962मे एलेन गिन्सबर्ग भारत अयलाह।

समृद्ध अमेरिका आ पिछड़ल भारतक आर्थिक-सांस्कृतिक स्थिति मे धरती-आकाशक अंतर छल। बीट पीढ़ी जकाँ राजकमल ने तँ मादक द्रव्य पर सँ प्रतिबंध हटयबाक माँग कयलनि, ने समलैंगिक यौन संबंधक ओकालति कयलनि। राजकमल बिटनिक जकाँ ने कविता कें एहि रूप मे कहियो परिभाषित कयलनि जे ओ व्यक्तिक गोपन आत्माक झाँकी होइत अछि, ने ओ यौन-संबंध मे अविश्वसनीय माधुर्यक खोज कयलनि। राजकमलक साहित्य बीट पीढ़ीक नकल अथवा ओकर उत्पाद (ब्राइप्रोडक्ट) नहि अछि। बीट, भूखी पीढ़ी आ राजकमलक आपसी समानता पूंजीवादी समाजक सामान्य चरित्र कें प्रतिबिंबित करैत अछि। अपन साहित्य मे राजकमल बीट पीढ़ी आ गिन्सबर्गक उल्लेख करैत छथि, किंतु ई उल्लेख अपन जीवन-शैली आ साहित्य कें मान्यता आ प्रतिष्ठा देअयबाक उद्देश्य सँ होइत अछि। भूखी पीढ़ी आ अकविता-आंदोलन संगे अपन सहानुभूति आ निकटता प्रदर्शित करबाक काज राजकमल अपन विरोधी कें कमजोर करबाक उद्देश्य सँ करैत छथि। ई सर्वविदित अछि जे वामपंथी लेखक आ आलोचक हुनक प्रबल विरोधी छल।

राजकमल कें बंगालक भूखी पीढ़ीक हिंदी प्रवक्ता बूझल जाइत छल। लहर आ धर्मयुग मे भूखी पीढ़ी पर लेख लिखि कए राजकमल ओकर प्रचार-प्रसार मे सहायक भेल छलाह। 1965क शुरू मे कंचन कुमार संगे बनारस सँ प्रकाशित पत्रिका मरालक बांग्ला नवलेखन विशेषांकक ओ संपादनो कयने छलाह। ई विशेषांक भूखी पीढ़ी पर केन्द्रित छल। शिवचंद्र शर्मा हुनका पर आरोप लगौलनि जे राजकमल हिंदी पाठक कें भूखी पीढ़ीक असली चेहरा एहि खातिर नहि देखौलनि जे ई कयला सँ हुनक अपन पर्दाफाश भ' जइतनि। शिवचंद्र शर्मा कें लगैत रहनि जे राजकमल भूखी पीढ़ीक नकल करैत छथि।

शिवचंद्र शर्मा लिखैत छथि—भूखी पीढ़ीक मलयराय चौधरी (एक प्रकार सँ) पटनेक छथि। राजकमल, रेणु, शिवमंगलजी आदि सँ हुनका बरोबरि भेंट होइत रहैत छलनि। राजकमल आ मलयराय बहुत घनिष्ठ छलाह। दुनू स्वयं मे छोट-मोट दैनिक सर्कुलेशन छलाह। हिंदीक छोट-छोट पत्रिका मे भूखी पीढ़ी आबि चुकल छल। बाद मे लहर आ धर्मयुग मे राजकमल ओहि पर परिचयात्मक लेख लिखलनि।

मुदा ओहि मे ओकर ओहन उद्धरण (सोद्देश्य) नहि देल गेल, जाहि लेल ई पीढ़ी ख्यात अथवा कुख्यात छल।

ई सत्य अछि जे राजकमलक परिचयात्मक लेख मे भूखी पीढ़ीक मूलभूत स्थापना नहि आबि सकल। शास्त्रीय विवेचनाक ढंग सँ भिन्न राजकमलक अपन नाटकीय उपस्थापन शैली रहनि। एकर अर्थ ई नहि जे राजकमल अपन अनुकरण कें नुकयबाक लेल भूखी पीढ़ीक मान्यता कें विरूपित क' देलनि।

भूखी पीढ़ीक जन्मदाता मलयराय चौधरी अपन जेठ भाइ समीरराय चौधरीक माध्यमे गिन्सबर्गक सम्पर्क मे आयल छलाह। मलयराय चौधरीक पढ़ाइ-लिखाइ पटने मे भेल छलनि आ पटने मे ओ स्टेट बैंक मे नोकरी करैत छलाह। गिन्सवर्ग पटना मे मलयराय चौधरीक घर पर गेल रहथि। मलय गिन्सबर्गक विचार आ जीवन-शैली सँ बहुत प्रभावित भेल छलाह। एहि सँ किछु पहिनहि मलय कें स्पैंगलरक सांस्कृतिक अपक्षय संबंधी धारणा आकृष्ट कयने छलनि। ओ अंग्रेज कवि चौसरक In the soure hungry tyme पंक्ति सँ हंग्री शब्द ल'क' ओकरा स्पैंगलरक दार्शनिक भित्ति प्रदान कयलनि। गिन्सवर्ग सँ भेंट हुनक धारणा कें बल प्रदान कयलकनि आ नव आयाम देलकनि। मलय अपन धारणाक संबंध मे शक्ति चट्टोपाध्याय सँ गप्प कयलनि। शक्ति 'क्षुत-कातर आक्रमण' शीर्षक सँ एक टा लेख लिखलनि, जाहि मे मलयराय चौधरीक परिकल्पना कें व्याख्यायित कयल गेल छल। अप्रैल 1962 मे मलय हंग्री जेनरेशन नामक एक पृष्ठक बुलेटिन कलकत्ता सँ प्रकाशित करबौलनि। भूखी पीढ़ी एही बुलेटिन सँ प्रारंभ होइत अछि। एहि बुलेटिन मे स्रष्टाक रूप मे मलयराय चौधरी, नेतृत्व मे शक्ति चट्टोपाध्याय आ सम्पादन मे देवी रायक नाम छपल छल। हंग्री जेनरेशनक ई पहिल बुलेटिन भूखी पीढ़ीक सैद्धान्तिक स्थापनाक दृष्टि सँ महत्त्वपूर्ण अछि।

मलयराय चौधरीक सम्पूर्ण वक्तव्य मे यौन विषयक अथवा मादक द्रव्यक संबंध मे कोनो स्थापना नहि अछि। ओ कविता सँ अंतरात्मा एवं बहिरात्माक क्षुधा शांत करबाक काज लेबय चाहैत छथि। अंतरात्माक क्षुधा-शांति पर हुनक जोर बेसी छनि। हंग्री जेनरेशनक दोसर बुलेटिन मे शक्ति चट्टोपाध्यायक कविता छपल। कविताक अंत मे ओ भात पर अर्थात् बहिरात्माक क्षुधा-शांति पर जोर देलनि। हंग्री जेनरेशनक चारिम, पाँचम आ छठम बुलेटिन अंग्रेजी मे छपल, जाहि मे आलोचनाक कर्तव्य निर्धारित कयल गेल।

आगाँ चलि क' मलयराय चौधरी भूखी पीढ़ीक उद्देश्य कें आओर स्पष्ट करबाक लेल चौदह टा सूत्र उपस्थित कयलनि, जकर मूल मे अहं आ परम्परा सँ

विद्रोह मुख्य अछि। भूखी पीढ़ीक रचनाकार केँ एहि बातक रोष रहनि जे प्रतिष्ठित पत्रिका हुनका सभक रचना नहि छपैत अछि। एक बेर ओ सभ एक टा पत्रिकाक ऑफिस मे ढूकि गेलाह आ सादा कागतक ताव दैत कहलथिन—ई कथा देने जाइत छी, एकरा छापय पड़त। दोसर बेर ओ सभ पुस्तक समालोचना स्तम्भक अंतर्गत समीक्षा करबाक लेल सम्पादक केँ जूताक खाली डिब्बा पठौने छलाह।

एक दिन ओ सभ भाड़ा पर एक टा स्त्री केँ आनि ओकर स्तनक प्रदर्शनी लगबौलनि। एहि तरहक वक्तव्य आ क्रिया-कलापक उद्देश्य निश्चित रूप सँ लोकक ध्यान आकृष्ट करब आ प्रचार पायब छल। भूखी पीढ़ी तत्कालीन बांग्ला जगत मे ख्यातिक संग-संग घृणा आ विरोध सेहो अर्जित कयलक। 2 सितम्बर 1964 केँ कलकत्ताक पुलिस भूखी पीढ़ीक एगारह टा रचनाकार पर हंग्री जेनरेशन सन अश्लील पत्रिका प्रकाशित करबाक कारणे ँ मोकदमा दायर कयलक। ओही दिन कलकत्ता मे सुभाष घोष आ शैलेश्वर घोष केँ गिरफ्तार क' लेल गेल। 4 सितम्बर 1964 केँ पटना मे मलयराय चौधरीक घरक तीन घंटा धरि तलाशी लेल गेल आ मलय गिरफ्तार भ' गेलाह। तकर बाद चाइबासा सँ समीरराय चौधरी, त्रिपुरा सँ प्रदीप चौधरी आ हावड़ा सँ देवी राय केँ गिरफ्तार क' लेल गेल। ई सभ बाद मे जमानत पर छुटलाह। आगाँ चलि क' मोकदमा मात्र मलय पर चलल। हंग्री जेनरेशनक आठम अंक मे मलयराय चौधरीक कविता छपल छल प्रचंड वैद्युतिक छुतार। एही कविताक आधार पर पुलिस हंग्री जेनरेशन केँ अश्लील आ अवैध घोषित क' देने छल। एलेन गिन्सवर्ग केँ पता लगलनि तँ ओ न्यूयार्क सँ अनेक व्यक्ति केँ पत्र लिखि कए सहायता देबाक अपील कयलनि।

ई कविता प्रचलित काव्य-संस्कार सँ भिन्न छल। एहि मे उच्छवास आ प्रचण्ड भावावेग अछि। ई कविता मलय केर धारणाक अनुरूप विराम चिह्न रहित आ छंदहीन अछि। भाषा बोलचालक अनुरूप अछि।

कलकत्ताक निचला अदालत मलय केँ दू सय टाका जुरमाना अथवा एक मासक कारावासक सजा सुनौलक, किंतु हाइकोर्ट 26 जुलाइ 1967 केँ हुनका बरी क' देलक। एहि सभ सँ भूखी पीढ़ी छिड़िया गेल। बरी भ' गेला पर मलय हंग्री जेनरेशनक दू अंक निकाललनि नवम आ दसम। 1968 मे दसम अंक मे मोकदमाक रिपोर्टिंग संगे हंग्री जेनरेशन सभ दिनक लेल बंद भ' गेल आ मलय साहित्य-जगत सँ आत्मनिर्वासित भ' गेलाह।

भूखी पीढ़ीक उपर्युक्त इतिवृत्त केँ देखि क' लगैत अछि जे राजकमल कलकत्ता-प्रवास मे हंग्री जेनरेशनक अंक देखनहु हेताह तँ एक्के आध टा। एहि पत्रिकाक

वितरण-स्थल कलकत्ताक कॉफी हाउस छल, जतय राजकमल जाइत छलाह। भूखी पीढ़ी केँ एखन एक्के साल भेल रहय कि राजकमल कलकत्ता छोड़ि देलनि। पटना अयलाक लगभग एक साल बाद ओ भूखी पीढ़ी पर लहर मे एक टा लेख लिखलनि। एहि सँ लगैत अछि जे मलयराय चौधरी सँ हुनक सम्पर्क पटना अयलाक बाद भेल हेतनि। राजकमलक अनुभव आ संवेदना केँ भूखी पीढ़ी सँ परिप्रेक्ष्य भेटल हेतै, एहि तरहक कल्पनो करब हास्यास्पद अछि। विस्तारित अहं; शिल्प आ परम्परा सँ विद्रोह आदि समानता रहितहु राजकमलक काव्य-संस्कार भिन्न अछि आ हुनक अपन अनुभव-जगतक देन अछि।

अकविता-आंदोलन व्यक्ति सत्ता, अनुभूत सत्य आ वैयक्तिक चेतना पर जोर दैत छल। ओ कैक दृष्टिएँ बीट आ भूखी पीढ़ीक मेल मे अछि। अकविता आंदोलन 1966 मे अकविता नामक पत्रिकाक प्रकाशन संगे शुरू भेल, मुदा एकर पेनी 1963 मे छानल गेल जखन जगदीश चतुर्वेदी प्रारंभ नामक एक टा संकलन बहार कयने छलाह। एहि संकलन मे राजकमलोक कविता संकलित अछि। अकविता पत्रिका मे सेहो राजकमलक कविता छपल। राजकमल प्रचुर मात्रा मे रचना करैत छलाह आ मुक्त भाव सँ प्रकाशन लेल द' दैत छलाह। हुनक एहि प्रवृत्ति पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करैत शिवचंद्र शर्मा लिखैत छथि—राजकमल नई से नई पीढ़ी मे इसलिए प्रचारित-परिचित हो जाते थे कि, छुटभैये भी, अगर दस-पाँच पेज की भी, कोई अपनी मैग्जिन (लिट्ल मैग्जिन) निकालते थे, तो राजकमल सहर्ष, कभी-कभी अयाचित रूप में भी, उनमें होते थे। बयार को पीठ देने में राजकमल उस्ताद थे।

बीट, हंग्री आ अकविता संगे राजकमलक संबंध कतहु बयार केँ पीठ देब नहि छल। इब्बार रब्बी जे इन्टरव्यू हुनका सँ लेने रहनि, ताहि मे बीट, हंग्री आ अकविता संगे अपन संबंध केँ स्पष्ट करैत ओ कहने रहथिन—अमेरिका मे बरोज, गिन्सबर्ग, करुआकक नेतृत्व मे नव पीढ़ीक कवि आ बुद्धिजीवी प्रभुसत्ता (एसटेब्लिशमेंट)क विरुद्ध आंदोलन आरंभ कयलक। बंगाल मे यैह काज अपन सीमा संग मलयराय चौधरी आ हुनक संगी आरंभ कयने छथि। हिंदीक अकविता कवि नागरिक द्वारा अथवा नागरिक कवि द्वारा काव्य विषय आ काव्याभिव्यक्तिक नव माध्यम आ प्रवाह केँ अपन कविता मे प्राप्त करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। हम राजकमल चौधरी, बहुत बात मे बहुत दूर धरि हिनका सभक संग रहितो हिनका सभ मे नहि छी। हमर अपन शारीरिक सीमा अछि जे हमरा कोनो वाद, विवाद, भीड़, जुलूस, गोष्ठी, आंदोलन एवं संस्था-सम्मेलन मे सम्मिलित हेबा मे तँ बाधक नहि होइत अछि, मुदा बिना सदस्य भेनहुँ हम ई मानैत छी जे अमेरिका मे एखन

एलेन गिन्सबर्ग सभ सँ पैघ कवि छथि आ भूखी पीढ़ी बांग्ला साहित्यक सम्पूर्ण व्यावसायिक स्वरूप केँ तोड़ि-फोड़ि देने अछि आ अकविता निश्चित रूप सँ नवकविता सँ आगाँ बढ़ि जयबाक कवि-चेष्टा अछि।

राजकमलक विचार आ मान्यता अंतर्विरोध सँ भरल अछि। ओ एक दिस कविता केँ आत्माभिव्यक्ति मानैत ओकर व्यक्तिवादिता स्पष्ट करैत छथि, तँ दोसर दिस कविताक ताकत पर विश्वास रखैत ओकर सामाजिकता केँ रेखांकित करैत छथि। एक दिस जँ ओ ई कहैत छथि जे हमर लेखक आ हमर व्यक्ति एक्के स्तर पर, एक्के शरीर सँ, एक्के कारण सँ, एक्के जीवन जीबैत अछि तँ दोसर दिस नदी बहती थी मे ई कहैत छथि जे एहि दीर्घ कथा मे हम कतहु नहि छी। देहगाथा केँ ओ अपन प्रारब्ध नहि मानि क' प्रारंभ तँ मानैत छथि, किंतु व्यक्तिगत नहि। एक दिस जीवनक लेल ओ सामाजिक संस्था केँ अनिवार्य बुझैत छथि तँ दोसर दिस एहि सँ अलग भ' कए जीवन बिताबय चाहैत छथि। एतबे नहि, ओ अनेक ठाम एक्के वक्तव्य मे परस्पर विरोधी बात कहैत छथि—हम मुक्ति चाहैत छी। ई मुक्ति वास्तविक जीवन मे असंभव अछि, आ संभव अछि। हम शरीर मे रहितो शरीर मुक्त, आ समाज मे रहितो समाज-मुक्त छी। फेर ओ कहैत छथि—मुक्त भ' जायब कविता सँ पहिने आ मृत्यु सँ पहिने मुक्त भ' जायब असंभव अछि।

एक दिस शरीर केँ ओ अपन दास मानैत छथि, तँ दोसर दिस ई कहैत छथि जे शरीर पर आघात भेला सँ मन आघातित होइत अछि। एक दिस ओ कहैत छथि जे—हम मात्र अपन आ अपन कविताक वर्तमान मे जीबैत छी तँ दोसर दिस कहैत छथि—परम्पराक संग व्यक्तिक जे संबंध होइत अछि, एहि परम्परा सँ हमर ओहने संबंध अछि।

ओ अपना पर ककरो अधिकार, कोनो बंधन स्वीकार नहि करैत छलाह, मुदा रामनरेश पाठक केँ लिखलथिन जे बंधन नहि रहला सँ लोक भटकि जाइत अछि। सारिका मे प्रकाशित भैरवी तंत्र नामक अपन आत्मकथ्य मे ओ लिखलनि जे—हम अपन शरीर पर ककरो कोनो अधिकार नहि मानैत छी। शशियोक अधिकार नहि। मुदा शिवमंगल केँ ओ पत्र मे लिखलनि—जे काज हम नहि क' सकलहुँ, अपन पारिवारिक चक्रक कारणेँ, अपन मिथ्या मोह आ मूर्खताक कारणेँ—ओ काज अहाँ क' सकैत छी। किएक तँ अहाँ कोनो शशिजी अथवा दिव्याक संग बन्हायल नहि छी।

राजकमल पर नंदकिशोर नवलक ई टिप्पणी सटीक लगैत अछि जे—इसी विरोध और खींचतान में, जिसमें एक ओर वे स्वयं थे और दूसरी ओर उनका समाज,

एक ओर सेक्स था और दूसरी ओर देश-विदेश की राजनीति, एक ओर मूल्यहीनता थी और दूसरी ओर मूल्यों की खोज एवं उनकी स्थापना, एक ओर अबाध स्वतंत्रता थी और दूसरी ओर जनता से प्रतिबद्धता, एक ओर बहिर्गमन था और दूसरी ओर प्रत्यागमन, एक ओर निष्क्रियता थी और दूसरी ओर उत्कट जिजीविषा, उनका जीवन और साहित्य चलते रहे।

हिंदी मे राजकमलक पहिल कविता 1956 मे प्रकाशित भेल, मुदा पहिल संग्रह कंकावती आठ साल बाद 1964 मे आयल। कंकावतीक मात्र पचास टा प्रति छपल छल आ सभ पर राजकमलक दस्तखत रहय। योगिराज लिखैत छथि जे—पटना-प्रवास मे हिंदी कविता संकलन कंकावती सेहो एहिना बहार भेल। चीना कोठी मे शिवचंद्र शर्माक सहयोग सँ कम्पोजिंग सेट अनौने छल ओ। तखन भारत मेल अर्द्ध साप्ताहिक मे काज करैत छल। ओही कम्पोजिंग सेट पर कम्पोज करबा क' संभवत: स्पार्क प्रेस मे फुलस्केप कागज पर छपा कंकावती बहार कयलक—मात्र 50 प्रतिक संस्करण।

श्रीकान्त वर्मा कंकावती पर आरोप लगौलनि जे ओ पोर्नोग्राफी अछि। राजकमल स्वयं एहि संग्रहक भावभूमि केँ मानवीकृत करैत लिखने छलाह जे कंकावती जनवरी सँ मई 1964 धरि पटना मे हमर बनि क' रहलीह अछि। भूमिका मे संभोग शब्दक ओ अनेक बेर प्रयोग कयने छलाह आ एहि संग्रहक अधिकांश अनुभव केँ आत्मस्वीकृति घोषित कयने छलाह।

कंकावती मे अधिकांशत: शहरी मध्यवर्गीय जीवनक विडम्बना चित्रित भेल अछि। अर्थ-व्यवस्थाक चक्की मे पिसाइत भग्न, टूटल आ विषण्ण मध्यवर्गीय जीवनक अनेक चित्र कंकावती मे अछि, जाहि सँ खिन्नता, उदासी आ अवसादक सृजन होइत अछि। चाय के प्याले में, चाय सुबह की, मान लिया गया, नवदम्पत्ति कथा, गतिरोध, सुबह का अखबार आदि मध्यवर्गीय विवशता आ घुटन केँ व्यक्त करैत अछि। किछु कविता मे देह-व्यापार करैत स्त्रीक रुग्णकारी चित्र अछि।

कंकावतीक अनेक कविता मोनताज टेकनीक मे लिखल गेल अछि आ ओकर ढांचा गद्यात्मक अछि। कंकावतीक तीन टा कविता पर बहुत विवाद आ चर्चा भेल—कवि-कर्म, भाषा आ सरस्वती वन्दना। परम्परावादी आ विशुद्धतावादी लेखक-आलोचक एहि तीनू कविता सँ बहुत क्षुब्ध भेलाह। आधुनिक सभ्यता वर्तमान जीवन केँ सांस्कृतिक दृष्टि सँ कतेक विपन्न आ शून्य बना देलक अछि, कवि-कर्म मे तकरे चित्र अछि। कविता अछि—

वेश्याओं के ऊँचे पलंग हैं, या जली हुई
लकड़ियाँ। कहीं जगह खाली नहीं है गज-
भर, जहाँ बैठकर लिखी जा सके गीता, या
गीतांजलि। ऊँचे पलंग हैं, या रसोई घर
की जली हुई लकड़ियाँ हैं।

भाषा कविता मे राजकमल सामाजिक मूल्यहीनताक कारणेँ उत्पन्न भाषाक सम्प्रेषणीयता संबंधी समस्या केँ व्यक्त कयलनि—

भाषा अब वेश्या है। सबकी बाँहों में
समाई हुई सबके ओठों पर बसी रहती
है। उसके विवस्त्र अंगों में अब कोई अर्थ नहीं।

एहि कविताक कारणेँ राजकमलक ई कहि क' आलोचना कयल गेल जे भाषा केँ भ्रष्ट बना कए राजकमल अनर्गल प्रलाप क' रहल छथि।

राजकमल कंकावती मे व्यक्त दमघोंटू जीवन केँ बदलए चाहैत छथि। हुनक ई इच्छा एक प्रश्न हजार उत्तर कविता मे प्रकट भेल अछि—

मैंने सूरज से पूछा—धरती कब आग का
गोला बन जाएगी? मुझसे सूरज ने पूछा,
—तुम बरफ-घर मे सोये रहोगे कब तक?

चाय के प्याले में कविता मे ओ कहैत छथि—

हजार छोटे
दंगे फसाद होते हैं, इतिहास और आर्थिक
सभ्यता को उजागर करने के लिए—एक
बड़ी लड़ाई नहीं होती। आदमी केले खरीदने
में व्यस्त रहता है...।

राजकमल मे वैयक्तिकता आ सामाजिकताक बीच मे द्वन्द्व चलैत रहैत अछि, से सदैव एकान्तिक नहि रहैत अछि। वैयक्तिकता समाजिकता मे रूपान्तरित भ' जाइत अछि। राजकमलक अनेक कविता इकाई आ समूह, समूह आ इकाईक बीच दोलायमान रहैत अछि। व्यक्ति आ समाजक बीच ई लयात्मक दोलन शव-यात्रा

का मृत संगीत, दास कविता आ मुक्ति प्रसंग मे सर्वाधिक अछि। ई तीनू कविता दीर्घ अछि आ मिजाज मे एक अछि। कलात्मक दृष्टि सँ मुक्ति प्रसंग, शव-यात्रा का मृत संगीत आ दास कविताक स्वाभाविक विकास लगैत अछि। शव-यात्रा का मृत संगीतक रचना-काल 1962, दास कविताक 1965 आ मुक्ति प्रसंगक 1966 अछि।

शव-यात्रा का मृत संगीत महाप्राण निराला केँ समर्पित कयल गेल अछि—

समूचा नगर पेट्रोल की गंध में डूबा हुआ...
आग लगती है। धड़ाके से ग्लोब फट जाता है,
आग लगती है।
कहीं कोई सायरन नहीं बजता...
मैं पेट्रोल में
आग में
ग्लोब में
अपने अकेलेपन में
तुम्हारी मृत्यु के अपराध में, कैद हूँ।
...और, हमारे कंधों पर तुम्हारा अ-मृत शव है
और पेट्रोल की गंध में डूबा हुआ है समूचा नगर
और, आग लगती है
और, धड़ाके से फट जाता है ग्लोब
कविताएँ
कल्पनाएँ
शब्द
अर्थ
ध्वनियाँ, शीशे के टुकड़ों की तरह
बिखर जाती हैं....
मगर कहीं कोई सायरन नहीं बजता है।
कहीं कोई अरथी नहीं सजती है
कहीं कोई शोक-गीत गूँजता नहीं है
कहीं कुछ नहीं होता।

दास कविता राजकमलक महत्त्वपूर्ण कविता बूझल जाइत अछि। ई कविता

अपूर्ण अछि आ अनुपलब्धताक कारणेँ जहिया लिखल गेल, तकर बाइस साल बाद प्रकाशित भ' सकल। दास कविता मानव-दासताक विरोध मे लिखल गेल अछि। मानव-दासताक प्रबल विरोधी मार्क्स एहि कविताक प्रेरणा-स्रोत रहल छथि। कविताक शीर्षक मार्क्सक ग्रंथ दास कैपिटल सँ जुड़ल अछि। कविताक अंत एहि प्रकारक करुणा आ आह्वान मे होइत अछि—

अगली दुनिया के अन्वेषको!
हमारी दुनिया तो यही है—
प्रभुता से नियंत्रित, दासता से अभिशप्त,
बर्बर, अमानवीय ताकतों से अनुशासित;
अनियामक जनता की दुनिया, इसे तोड़ो—
जो शोषित रहकर भी
शास्ता और शासक के अटूट संबंध की
मूलभूत चक्राकार अवस्थिति को
चाहे-अनचाहे, जाने-अनजाने
पोसती और पालती है।

मुक्ति प्रसंग राजकमलक सर्वाधिक चर्चित आ सर्वश्रेष्ठ कविता अछि। ई फरवरी सँ ल'क' जुलाइ 1966क बीच लिखल गेल छल, जखन राजकमल पटना अस्पतालक सर्जिकल ब्लॉक मे भरती छलाह। अस्पताल मे ओ डायरी लिखैत छलाह। डायरी-लेखन नियमित नहि छल, जहिया कोनो उल्लेखनीय घटना होइत छल अथवा कोनो महत्त्वपूर्ण विचार हुनका दिमाग मे अबैत छलनि, तकरा ओ लिपिबद्ध क' लैत छलाह। मुक्ति प्रसंगक संदर्भ मे डायरीक दू टा अंश उल्लेखनीय अछि। एहि दुनू अंश सँ मुक्ति प्रसंगक रचना-कालक हुनक मन:स्थिति आ रचना-शिल्प पर रोशनी पड़ैत अछि।

डायरीक पहिल पृष्ठ पर बर्ख 1966क वैचारिक सार केँ ओ एहि रूप मे अंकित करैत छथि—

थॉट फॉर दि ईयर
माइ थम्ब एंड माइ
हेडेक, इज मोर ऑथेंटिक
इंपोर्टेंट, सीरियस, एंड इंगेजिंग
दैन एनी ग्रेट पीस ऑफ आर्ट।

(हमर औंठा आ हमर मथदुक्खी कोनो महान कलाकृति सँ बेसी प्रामाणिक, महत्त्वपूर्ण, गंभीर आ रमणीय अछि।)

दोसर अंश मे ओ लिखैत छथि—

ह्वाइल राइटिंग पोयेम्स : (1) चूज योर ओन सिम्बल्स एंड इमेजेज (2) गिभ ए फ्रेस एंड डेमेजिंग कंटेंट (3) बी ग्राफिक (4) अरेंज टेकनिक्स ऑफ कलर फोटोग्राफी इन इट।

(कविता लिखैत काल निजी बिंब आ प्रतीकक चयन करबाक चाही; अंतर्वस्तु टटका, विध्वंसक एवं सुचित्रित हो आ ओहि मे रंगीन छाया चित्रक खूबी हेबाक चाही।)

पहिल अंश मे हुनक प्रचंड वैयक्तिकता ध्वनित होइत अछि, जे ओज संगे मुक्ति प्रसंग मे व्यक्त भेल। ई भिन्न गप्प अछि जे हुनक वैयक्तिकता बेर-बेर सामाजिकताक रूप लैत रहैत अछि। दोसर अंश मे ओ मौलिक बिंब आ प्रतीक पर जोर दैत छथि। राजकमल आरंभे सँ अपन रचना लेल पौराणिक बिंब आ प्रतीकक प्रयोग करैत आबि रहल छलाह। मुक्ति प्रसंगक पौराणिक बिंब आ प्रतीक तत्कालीन हिंदी कविता सँ एकदम अलग, बेछप आ मौलिक अछि। नव आ आक्रामक अंतर्वस्तुक रूप मे राजकमल मुक्ति प्रसंग मे एक टा बीमार व्यक्तिक प्रलापक माध्यम सँ ओहि व्यक्तिक पीड़ा, क्षोभ, आक्रोश आ ओकर अंतर्बाह्य संघर्ष केँ चित्रित कयलनि। एहि संघर्षक विकास चक्करदार होइतहु सुसंगत, स्पष्ट आ ऊर्ध्वमुखी अछि। ओहि मे भावक अनुरूप रंगदर्शी संवेदना अछि।

मुक्ति प्रसंगक भूमिका मे राजकमल लिखैत छथि जे—सती-वर्तमान के अग्निजर्जर शव को अपने कंधों पर मैं शिव की तरह, धारण करता हूँ। मैं इस शव के गर्भ में हूँ, और यह शव मेरे कंधों पर है। इसकी विकृति, वीभत्सता और दुर्गन्धियों में मुझे जीवित रहना ही पड़ेगा। जीवित ही नहीं, मुक्त और स्वाधीन भी रहना होगा। यही मन:स्थिति इस कविता का प्रसंग है।

वर्तमान जीवन अतीतक देन अछि। वर्तमान कुरूप आ दुर्वह अछि जकरा उघब मनुक्खक नियति बनि गेल अछि। मनुक्ख केँ एहि नारकीय भोग सँ छुटकारा पयबाक इच्छा आ प्रयत्न करबाक चाही। वर्तमान जीवनक स्थिति दारुण अछि—

केवल वर्तमान में जीते हैं अब समस्त प्रजाजन
मर जाते हैं अतीत में और भविष्य में मर जाते हैं
भीड़ जुलूस लाठीचार्ज जन-आंदोलन आम सभाओं

श्रोता वक्ता भोक्ता
गेहूँ के सिवा कोई बात नहीं कहते

मुक्ति प्रसंग जानि-बूझि कए पन्द्रह अगस्त 1966 कें जारी कयल गेल छल, जाहि सँ भारतक जनतांत्रिक स्वतंत्रता कें कविताक अयना मे ओकर अपन असली चेहरा देखायल जा सकए—

जठराग्नि... दावानल...
सब बुझ गए अचानक पहले अगस्त की
पहली रात के बाद
अब राख ही राख बच गया है पीला मवाद
ग्यारह बजकर उनसठ मिनट पर हर रात
शहीद स्मारक के नीचे नंगी
होती है
पागल काली एक मरी हुई स्त्री
उजाड़ आसमान में दोनों बाँहें फैलाकर रोने
के लिए
रोते हुए सो जाने के लिए पानी और अनाज
के देवताओं से भीख माँगती है
तिरंगा फहराने के अपराध में मार डाले गए
1942 के छात्रों के नाम पर

अपन इंटरव्यू मे राजकमल रामानुग्रह झा कें कहने छलथिन जे सब रचनाकार अपन सर्वोत्तम प्रयास सँ भाषा मे चरम तत्वक उपलब्धि करय चाहैत अछि। एहि चरम तत्व कें स्पष्ट करैत ओ कहने छलथिन—हमरा शब्द सँ अधिक ध्वनि प्रिय अछि। हम अपन रचना-प्रक्रिया मे शब्दक एही मूल नादक खोज करैत छी, प्रकृतिक सहस्त्रमुखी धारा-ध्वनि कें एक-एक तार पर झंकृत सुनय चाहैत छी, हम तय करय चाहैत छी ओ गोमुख की थिक, हमर प्राण-कुंड मे, हमरा अंतर मे की अछि अथवा एहि शरीरक बाहर कतहु कोनो अंधगुफा मे ध्यानावस्थित बुद्ध जकाँ समाधिलीन के अछि? हम तय करय चाहैत छी जे शब्दक मूल तंत्र की थिक आ कोन श्रीचक्र पर शब्दक पार्थिव प्रतिमा स्थापित भेल अछि। आ इएह तय करब हमरा लेल संत्रास आ यातनाक स्थिति भ' जाइत अछि।

मुक्ति प्रसंग मे शब्दक एहि मूल नादक महत्त्वपूर्ण भूमिका अछि। ध्वनिक आरोह-अवरोह, लघुता-दीर्घता, कर्कशता-मृदुलता, उष्णता-शीतलता, घर्षण-चिकनाहट आदि संवेदना आ भावक मूल आत्माक अनुरूप बदलैत रहैत अछि आ कविता संगीतक निर्बाध गति आ वेग जकाँ हृदय मे झंकृत होइत रहैत अछि। स्थितिक अनुसार बदलैत ध्वनि-रूप कें एहि अंश मे देखल जा सकैत अछि—

इस प्रकार स्थान-पात्रों में घुलमिल जाता था
संगीत
बन जाता था जुलूस भूख-मार्च हाहाकार
रंग में अल्कोहल भाषा में केवल बीते हुए
गलित व्रण केवल चीत्कार

मुक्ति प्रसंगक संबंध मे नन्दकिशोर नवल लिखैत छथि—इनवॉल्वमेंट राम की शक्ति पूजा और अन्धेरे में भी है, लेकिन मुक्ति प्रसंग में तो वह हद से ज्यादा है। एक तरफ इस कविता की परिधि अत्यधिक व्यापक है, दूसरी तरफ यह एक अत्यधिक आत्मपरक कविता है। उसकी शक्ति का स्रोत संभवत: इन दो अतिवादी बिन्दुओं का मिलन और संघर्ष ही है।

डॉ. श्यामसुन्दर घोष राजकमलक कवितापर समग्र रूप मे टिप्पणी करैत लिखैत छथि—राजकमल की कविता हिंदी कविता-क्षेत्र से आसानी से खारिज नहीं की जा सकेगी। उसमें एक बेचैन आत्मा का संघर्ष पूरी सिद्दत और प्रामाणिकता के साथ मौजूद है। उसके अपने विकास के ग्राफ हैं, अपना कशमकश है। हम उससे गुजर कर कुछ पा सकते हैं।

हिंदी मे राजकमलक पहिल कथा 1958 मे छपलनि, जखन ओ कलकत्ता मे रहैत छलाह। आर्थिक तंगी राजकमल कें अधिकाधिक गद्य लिखबा लेल बाध्य कयलकनि। अपन हिंदी कथा मे राजकमल शहरी-जीवन कें चित्रित कयलनि। मैथिली कथा मे शहरी जीवन विरल अछि। उच्च, मध्य आ निम्न-मध्यवर्गक सभ स्तर कें ओ अपन कथाक विषय बनौलनि। किछु कथा ओ सर्वहारा वर्ग पर सेहो लिखलनि। राजकमलक हिन्दियो कथा मे सेक्स अबैत अछि, मुदा आरोपित ढंग सँ नहि, जीवनक अंग बनिक'। शराब आ स्त्री राजकमलक व्यक्तिगत जीवनक कमजोरी रहलनि। एकरा ओ नुकबितो नहि छलाह। इएह कारण अछि जे हुनक जीवन आ साहित्य दुनू मे सेक्स संबंधी कोनो कुंठा नहि अछि। मातृहीन राजकमलक अतृप्त मानस जीवन भरि ओहि मातृ-प्रेमक खोज करैत रहल, जाहि मे प्रेमक समस्त

रूप समाहित रहैत अछि तथा जे विशाल आ पूर्ण होइत अछि। स्त्री विषयक प्रस्ताव मे ओ लिखैत छथि—स्त्री केवल संभोग के मुहूर्त में साथ नहीं रहती है। ऐसी और भी स्थितियाँ हैं, जब वह अशरीर भी साथ रहती है और मेरी इच्छाओं का दिशा निर्धारण करती है।

राजकमलक साहित्य मे चित्रित सेक्स शारीरिक आ मानसिक उत्तेजना नहि पैदा करैत अछि। एकर एक टा प्रत्यक्ष कारण तँ ई अछि जे राजकमलक सेक्स मे गोपन तत्वक अभाव अछि, ओहि मे झाँप-तोप नहि अछि। दोसर कारण ई अछि जे राजकमल सेक्सक प्रति ओहि पूंजीवादी-भोगवादी अभिरुचि आ दृष्टि कें रूपायित करैत छथि, जे विकृत आ कुरूप अछि आ तें ओ पाठक कें उत्तेजित करबाक बदला मे विकर्षित करैत अछि। पिरामिड, चलचित्र चंचरी, मदालसा सुन्दरम, पत्थरों के नीचे दबा हुआ हाथ, वेणी संहार आ एहि तरहक हुनक अनेक कथा उदाहरण रूप मे देखल जा सकैत अछि। पिरामिडक कुम्मी मे सेक्स नहि अछि, व्यवसाय अछि। मुनियो मे वएह व्यावसायिक हाव-भाव अछि। रसिक लाल द्वारा हाथ दबौला पर कुम्मी उत्तेजित नहि होइत अछि। ओहिना रसिक लालक बिठुआ सँ मुनिया उत्तेजित नहि होइत अछि। कुम्मी रसिक लाल सँ कहैत अछि—मुझे जल्दी फुरसत दे दीजिए। 'एक आदमी गुस्से में' कथाक नायक एहि खातिर नाराज अछि जे नायिका देहक व्यापार करए लागल अछि। स्विचक सेक्स कें राजकमल जीवनक कालिमाक रूप मे चित्रित करैत छथि। राजकमलक कथा सेक्सक रोचक वर्णनक बदला मध्यवर्गीय जीवनक विडम्बना कें मुखर करैत अछि।

राजकमलक मान्यता छलनि जे कविता व्यक्ति-सत्य कें आ कथा समाज-सत्य कें प्रकट करैत अछि। हुनक कथा मे आधुनिक समाजक सत्य प्रचुर मात्रा मे भेटैत अछि। अपन आरंभिक हिंदी कथा मे राजकमल कलकत्ता-प्रवासक जीवनानुभ कें अभिव्यक्ति देलनि। 'जीभ पर बूटों के निशान' कलकत्ताक परिवेश पर लिखल गेल अछि। ई कथा मनुक्खक स्वार्थ आ लोभक विकट रूप कें चित्रित करैत अछि। आर्थिक दबाव पात्रक बीच सभ तरहक मानवीयता आ अपनत्व कें नष्ट क' देलक अछि। ओ सभ एक-दोसर सँ ओतबे मतलब रखैत अछि जतबा सँ स्वार्थ सिद्ध भ' सकय।

सामुद्रिक राजकमलक बहुचर्चित कथा रहल अछि। सेक्स अहू मे अछि, किंतु कथा मे मध्यवर्गीय मानसिकता मुख्य अछि। दीघाक समुद्री कछेरक परिवेश मे दू टा स्त्री-पात्रक बीचक द्वन्द्व, अलगाव, असहायता आदिक एहि कथा मे प्रभावकारी चित्रण भेल अछि। राजकमलक कथा मे भावुकता आ तरल रोमांस नहि अछि,

वास्तविकताक कठोरता अछि। गांजा मिलानी मोनताज शैली मे लिखल कथा अछि। राजकमल शिल्पक स्तर पर अपन कथा मे निरन्तर प्रयोग करैत रहलाह। वृत्त, रिपोर्ताज, मोनताज, पूर्वदीप्ति, चेतना-प्रवाह आदि अनेक शैली राजकमल मे भेटैत अछि। कथ्य आ अभिव्यक्ति दुनू दृष्टि सँ राजकमल अपन समकालीन कथाकार सँ भिन्न छथि।

राजकमलक कथा पर टिप्पणी करैत सुरेन्द्र चौधरी लिखैत छथि—राजकमल का कहानी-साहित्य उस भीषण दुःस्वप्न की तरह है, जिसमें दृश्य तेजी से बदलते रहते हैं और अपने बदलते हुए परिदृश्य की भयानकता, विचित्रता से हमें कहीं उत्तेजित, कहीं अतिक्रांत और कहीं अभिभूत कर लेते हैं।

कथे जकाँ राजकमलक सभ हिंदी उपन्यास मे शहरी जीवन चित्रित भेल अछि। हुनक अधिकांश उपन्यास कलकत्ता पर केन्द्रित अछि। देहगाथा मे मसूरीक परिवेश, बीस रानियों के बाइस्कोप में बम्बइक परिवेश आ शहर था शहर नहीं था मे पटनाक परिवेश आयल अछि। विषय-वस्तु, मिजाज, गठन आ प्रभाव मे देहगाथा सभ सँ भिन्न आ विशिष्ट अछि। कलकत्ता-जीवन पर केन्द्रित उपन्यास सभ मे राजनीतिक व्यंजनाक कारणें हुनक पहिल उपन्यास नदी बहती थी विशिष्ट अछि। ई उपन्यास पहिने विनोद नामक पत्रिका मे धारावाही रूप मे छपल; फेर 1961 मे कलकत्ते सँ पुस्तकाकार प्रकाशित भेल।

उपन्यासक भूमिका मे राजकमल लिखैत छथि—मसूरी हिल्स की अकर्मण्य परिस्थितियों से छुटकारा पाकर अचानक 1957 के नवम्बर में मैं कलकत्ता चला आया। एशिया का यह सबसे बड़ा शहर मुझे बहुत पराया लगा, चौड़ी-चौड़ी सड़कें, और फिर गलियों के अंदर और भी तंग गलियाँ। शानदार कपड़े पहने हुए मर्द और उनके भीतर छिपे हुए बूढ़े जानवर। लो-कट और शार्ट्स मे घिरी हुई औरतें, और उनके भीतर छिपी हुई भूखी हिरणी। मर्द और औरत, और उनके बीच एक सौदा, एक समझौता करने वाली एक हसीन चीज—पैसा।

पैसा अर्थात् पूंजीवादी अर्थतंत्रक बीच सम्मानजनक आ स्वतंत्र जीवन हासिल करबा लेल संघर्ष करैत लोकक पराजय-गाथा। शेफाली देह बेचि क' अपन भाइ सुभाष आ बहिन सोनाली कें नव, सम्मानजनक आ स्वतंत्र जीवन प्रदान करए चाहैत अछि। ओ स्वयं अपन घृणित जीवन कें त्यागि विवाह करैत अछि। मुदा ओकर सभ टा सपना चूर भ' जाइत छैक। सोनाली विमल ठाकुरक रखैल बनि जाइत अछि आ शेफालीक पति शेफाली कें फेर सँ देह बेचबा लेल बाध्य करैत अछि। उपन्यासक अंत मे शेफाली मरि जाइत अछि। सोनाली विलाप क' रहल अछि। मिसेज सविता

राय चौधरी ओकरा सांत्वना दैत कहैत अछि—सोनाली, अब पुकारने से क्या होगा? नदी सूख गई है।

एहि त्रासदीक बीच ओहि बस्तीक सामाजिक समस्या अछि, राजनीतिक संघर्ष अछि, राजनेता आ राजनीतिक दलक पाखंडपूर्ण चरित्र अछि, पूंजीवादी व्यवस्थाक बर्बर आ हिंस्र रूप अछि आ एहि सभ पतनशीलताक प्रति लेखकीय आक्रोश आ व्यंग्य अछि।

ताश के पत्तों का शहर, अग्निस्नान, एक अनार एक बीमार, बीस रानियों के बाइस्कोप सभ उपन्यासक इएह हाल अछि। सभ पूंजीवादी समाजक पतनशीलताक खिस्सा कहैत अछि, पात्रक जिजीविषा आ संघर्षक खिस्सा कहैत अछि, ओकर मूल्यहीनता-दिशाहीनताक खिस्सा कहैत अछि, ओकर टूटैत-बिगडैत जीवनक कथा कहैत अछि। सभ उपन्यासक अंत त्रासदी मे होइत अछि। सभ उपन्यास पाठकक मोन मे अवसाद आ करुणाक भाव उत्पन्न करैत अछि। इएह राजकमलक औपन्यासिक विशिष्टता अछि, इएह उपन्यासक आपसी अविशिष्टता अछि। सभ उपन्यासक समस्या एक अछि, रूप भिन्न-भिन्न अछि। एक उपन्यास दोसर उपन्यासक परिवर्ती (variable) अछि। सभ उपन्यासक परिवेश एक अछि, समस्या एक अछि, परिणति एक अछि।

ताश के पत्तों का शहरक बोनी हो वा नीलू, बीस रानियों के बाइस्कोपक कुन्दन बाई हो वा एक अनार एक बीमारक सीता हो वा अग्निस्नानक लूलू हो वा श्रीमती—सभक एक्के दुख अछि, एक्के दर्द अछि।

अग्निस्नानक एक टा मार्मिक दृश्य एहि रूप मे वर्णित अछि—लूलू की आँखों में आँसू भर आए। वह चुपचाप खड़ी रही, टूटती हुई, मरती हुई। फिर, चुपचाप बाहर चली आई। लूलू एकदम खुले रास्ते पर आ गई। और कोई रास्ता नहीं था। उसकी आँखों में सपने थे। हर औरत की तरह साधारण सपने। घर, परिवार और थोड़ी सी हँसी-खुशी, थोड़ा-सा प्यार! मगर वह सपना टूट चुका था। फिड के साथ रहने का मतलब था भूख और गरीबी और सिर्फ गरीबी! औरत, अगर उसके पास औरत का मन है, औरत का शरीर है, तो गरीबी क्यों सहे? लूलू अपनी नैतिकता, अपने शरीर का कुंवारापन कायम रखना चाहती है, मगर जब समाज नहीं चाहता तो वह क्या करे?

लूलू श्रीमती लग जाइत अछि जे बहुत पहिनहि सँ देह-व्यापार मे लागल अछि। किंतु आब ओकर हाल ई छैक जे—श्रीमती का कमरा अंदर से बंद था। कमरा अंदर से बंद था और कमरे के अंधेरे में बंद श्रीमती रो रही थी। रो रही

थी जैसे अपनी गलती से उंगलियाँ जल जाने पर बच्चे रोते हैं।

'नदी बहती थी'क शेफाली कहैत अछि—तुम्हारे ही कारण यह सब हो रहा है, जयन्त! तुम यहाँ रहने लगे और मेरी सोनाली चली गई। आज सुभाष भी चला गया। मैं तुम्हारे बिना ही ठीक थी, देह बेचकर दो पैसे कमाती थी और चैन से सोती थी। तुमने मुझे देह बेचने से रोका, बचाया और अब फिर सीधे-सीधे नहीं, मगर घुमा-फिरा कर मुझे वही करना पड़ता है।

एक अनार एक बीमारक एक टा कारुणिक दृश्य अछि—बहन के वापस आने तक सीता ने फ्रॉक और अंडरवियर नहीं पहना था। सामने, कमरे में रहने वाली निर्मला मौसी ने कहा था—तेरी बहन को गर्मी हो गई है। तू बड़ी हो जाएगी तो तुझे भी गरमी होगी। इस मुहल्ले की हर औरत को यही होता है। मुझे भी हुआ था। निर्मला मौसी पागल है, कुछ से कुछ बकती रहती है—लौटकर बड़ी बहन ने कहा था और सीता को अपनी गोद में बिठाकर, बाँहों से जकड़ती हुई रोने लगी थी।

बीस रानियों के बाइस्कोपक वर्णित विषय एहि सँ भिन्न नहि अछि—कुंदन अपनी बड़ी बहन के चरित्र और स्वभाव से एकदम अलग थी, परिस्थितियों से समझौता कर लेने वाली लड़की थी। शोरगुल नहीं करती, सह लेती थी। छोटी उम्र में पुखराज के साथ बम्बई आ गई। जमाने के सारे दुख उसने देखे। फारस रोड के बीमार मौसम में वह बड़ी हुई।

घोषित रूप सँ समलैंगिक यौन-समस्या सँ सम्बन्धित होइतहु मछली मरी हुई मे कल्याणीक देह-व्यापारक प्रचुर चित्रण भेल अछि।

एक अनार एक बीमार सँ राजकमल संतुष्ट नहि छलाह। एहि उपन्यास केँ ओ फेर सँ लिखय चाहैत छलाह। आत्मकथात्मक उपन्यासक रूपरेखा मे ओ लिखैत छथि—रीराइटिंग एक अनार एक बीमार टु रिकंस्ट्रक्ट ईश्वर एंड हिज फिलॉसफी। (ईश्वर आ ईश्वरक जीवन-दर्शनक पुनर्निमाण करबाक लेल हम एक अनार एक बीमार फेर सँ लिखय चाहैत छी।)

राजकमलक आन सभ औपन्यासिक पात्र जकाँ ईश्वर सेहो अपन अस्तित्व केँ कहुना कायम रखबा मे लागल अछि। पूंजीवादी शोषण-चक्र मे फँसल मनुक्खक नियति केँ ईश्वर अनिवार्य आ अपरिवर्तनशील मानैत अछि। वर्तमान परिस्थितिक सम्मुख लोक बेबस आ लाचार अछि—अब उसकी मर्जी से कहीं कुछ नहीं होता है। औरतें जहाँ और जब चाहती हैं, अपनी इच्छा से गर्भ धारण कर लेती हैं। बच्चे पैदा होते हैं, और पाँवों में पैसों का स्केट बांधकर सैर पर चल देते हैं। वापस नहीं लौटते।

एहि परिस्थिति केँ लोक चाहियोक' बदलि नहि सकैत अछि। ईश्वर कहैत अछि—मैं कुछ करना नहीं चाहता। क्योंकि करने से कुछ नहीं होता है ... दक्ष प्रजापति, रावण, कंस, दुर्योधन की कहानियों से लेकर अब ख़ुश्चेव-माओत्सेतुंग तक कोई बात नहीं बदली है। एहि परिस्थिति सँ छुटकाराक एक्के टा उपाय अछि—मृत्यु। ईश्वर कहैत अछि—साहब, आप जीवन से मुक्ति लीजिए, तभी स्वाधीन हो सकेंगे। ईश्वर मरि क' एहि घृणास्पद परिस्थिति सँ छुट्टी लेब' चाहैत अछि-माई फ्रेंड! मेरे दोस्त! मर्डर मी! मुझे मार डालो! एंड, फक माई लेडी! और मेरी औरत को पेंग मारते रहो। होल नाइट। सारी रात! सारी रात पेंग मारते रहो, मेरी औरत को, मुझे मार डालने के बाद मेरे दोस्त! माई फ्रेंड,... ईश्वर चीख रहा था और उल्टियाँ कर रहा था। राजकमलक औपन्यासिक संसार बहुत त्रासद अछि। ओ मनुक्खक पराजय आ विवशताक चित्र उपस्थित करैत छथि। देहगाथाक देवकान्त आ एक अनार एक बीमारक ईश्वरक दृष्टि मे उल्लेखनीय समानता अछि। देवकान्त कहैत अछि—उजाला मैं भी नहीं माँगता हूँ। माँगने से मिल सकेगा, मुझे विश्वास नहीं है।

देवकान्त टूटि आ थाकि गेल अछि—उजाला तो एक स्थिति है जिसे लाने के लिए अंधेरे की स्थितियों के खिलाफ जेहाद करना पड़ता है। मुझसे संभव नहीं है यह जेहाद यह क्रूसेड। मेरी तलवार की मूठ टूटी हुई है, मेरे जिरहबख्तर को जंग के कीड़े खा गए हैं।

राजकमलक पात्र जेहाद नहि क' पबैत अछि। ओ मात्र अस्तित्व रक्षा मे लागल रहैत अछि। ओहि सभक स्वत्व छिना गेल छैक आ ओ सभ पण्य वस्तु मे बदलि गेल अछि। सामाजिक-धार्मिक-नैतिक-सभ तरहक मूल्य पैसा मे तिरोहित भ' गेल अछि आ अप्रासंगिक बनि गेल अछि। पात्र सभक कोनो भविष्य नहि अछि। ओ सभ बंद दुनियाक वर्तमान मे कहुना जीबैत रहैत अछि—टूटल, हारल, निस्सहाय। राजकमल द्वारा चित्रित संसार मन मे करुणा उत्पन्न करैत अछि। करुणा राजकमलक ऐकांतिक मूल्य लगैत अछि। जीवनक अंतिम समय मे लिखल गेल मछली मरी हुई मे ओ लिखैत छथि—प्यार मरता है। वासनाएँ भी मर जाती हैं। करुणा नहीं! केवल एक करुणा नहीं मरती है।

राजकमलक विश्वास रहनि जे करुणा द्वारा एहि संसार केँ मानवीय बनाओल जा सकैत अछि आ ओहि मे मनोवांछित परिवर्तन कयल जा सकैत अछि। राजकमल केँ कोनो राजनीतिक वा दार्शनिक विचारधारा मे आस्था नहि रहनि। एकर अर्थ ई नहि जे ओ अनास्थावादी आ अराजक छलाह। हुनका ओकर प्रभावकारिता मे

अविश्वास छलनि। ओ ओकर निष्फलताक अनुभव क' रहल छलाह। राजकमल यथास्थितिवादियो नहि छलाह। ओ परिवर्तनकामी छलाह। मुदा एहि परिवर्तनक कोनो बाह्यगत रस्ता हुनका नहि भेटलनि। तेँ ओ एक टा आत्मगत आ भावात्मक रस्ता पकड़लनि। ओ करुणा सनक एक टा भावात्मक दर्शन गढ़लनि आ ओहि मे मनुक्खक मुक्तिक भविष्य देखलनि। राजकमलक उपन्यास मे उपभोक्तावादी समाजक त्रासदी व्यक्त भेल अछि।

प्रभूत करुणा सँ परिचालित दृष्टिक कारणेँ राजकमलक कथा-साहित्य नितान्त भिन्न भ' गेल अछि। पारस्परिक औपन्यासिक संरचना केँ राजकमल तोड़ि देलनि। हुनकर उपन्यास मे पारम्परिक वर्णनात्मकता, विश्लेषणात्मकता, विस्तार आ पसार नहि भेटैत अछि। हुनक कथा-साहित्य काव्ये जकाँ संश्लिष्ट, व्यंजक आ ध्वन्यात्मक अछि। ओहि मे काव्ये जकाँ आत्मपरकता आ भावात्मक सघनता भेटैत अछि।

राजकमलक मैथिली कथा साहित्यक बारे मे ललित जे टिप्पणी कयने रहथि, से हुनक हिन्दियो कथा-साहित्यक सन्दर्भ मे सटीक अछि। ओ लिखने रहथि जे—राजकमलक कथा मे आघात (shock) एवं चकित (surprise) करबाक तत्व भेटैत अछि। सर्वोपरि जे भेटत राजकमल केर लेखन मे से थिक गोपनतत्व। एक टा कुहेलिका, एक टा कुहेस। जतय द्रष्टा केँ अपन कल्पनानुसार इमेज गढ़बाक स्वतंत्रता रहि जाइ छैक। तहिना राजकमल केर कृतित्व मे अनएकसप्लेंड इभेंट्स (अव्याख्यायित घटना) भेटत। छोट-छोट कड़ी केँ धोगि क' आगू बढ़बाक प्रवृत्ति। प्रायः लेखक द्वारा भोगल यथार्थ एतेक भयावह थिक, जकर पूर्ण अभिव्यक्ति करबाक साहस किंवा औचित्य ओ नहि बुझैत अछि।

राजकमल अनेक निबंध लिखलनि, मुदा एखनधरि हुनक एक्को टा निबंध-संग्रह नहि छपि सकल अछि। हुनक अधिकांश निबंध साहित्य चिन्ता सँ सम्बन्धित अछि। किछु निबंध चित्रकला एवं सिनेमा सँ सम्बद्ध अछि। हुनक निबंध मे मात्र तत्व-चिन्ता नहि अछि। हुनक तत्व-चिन्ता तत्कालीन साहित्यिक परिवेश सँ घनिष्ठ रूप मे जुड़ल अछि आ अपन समय संदर्भ केँ प्रतिबिंबित करैत अछि। शिवचंद्र शर्मा लिखैत छथि—राजकमलजी ने कलकत्ता, दिल्ली आदि शहरों पर ऐसे खाकानुमा, जीवन्त निबंध लिखे हैं, जो रोचक होते हुए भी तथ्यपरक हैं। वैसे निबंध दूसरों ने, उस ढंग से नहीं लिखे हैं।

राजकमल हिंदी मे तीन टा नाटक लिखलनि—पाषाण सुंदरी, भग्न स्तूप का अक्षत स्तम्भ आ मेरी गली में आना। ओ मैथिलियो मे तीन टा नाटक लिखलनि—हफीम, महाकवि विद्यापति आ बसात। बसात रेडियो रूपक अछि। ई सभ एक

अंकी नाटक अछि। नाटक मे राजकमलक पैठ आ गति ओहि तरहक नहि छलनि, जाहि तरहक गति आन विधा मे भेटैत अछि।

हिंदीक अनेक पत्रिका लेल राजकमल नियमित स्तम्भ लिखलनि—कबिरा खड़ा बाजार में (लहर), पत्राचार (लहर), डायरी बेतारीख (निवेदिता), वह एक कहानी (नई कहानियाँ) एवं सामयिक कथा-साहित्य (विनोद)।

राजकमल अनेक बांग्ला उपन्यासक हिंदी मे अनुवाद कयलनि। कहल जाइत अछि जे ओ शंकरक चौरंगी, माणिक वंदोपाध्यायक प्राणेश्वर, संजय भट्टाचार्यक तीसरा नेत्र, दीपक चौधरीक फरियाद आ वाणी रायक मेरी आँखों में प्यासक अनुवाद कयने छलाह। एहि सभ मे सँ शंकरक चौरंगी प्रकाशित भ' क' बहुप्रशंसित भेल।

राजकमल प्रस्तावित भोजपुरी फिल्म टिकुलियावालीक पटकथा लिखने छलाह, मुदा ई फिल्म नहि बनि सकल। कलकत्ता मे 1965 मे जे भोजपुरी फिल्म फेस्टिवल भेल छल, तकर प्रमुख संयोजक सभ मे सँ एक राजकमल चौधरीयो छलाह। ओ स्वयं फिल्म बनब' चाहैत रहथि।

प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक तपन सिन्हा सँ हुनका बहुत रास गप्पो भेल रहनि। राजकमल फिल्म्स नाम सँ ओ एक टा लेटरपैड छपबौने रहथि। मुदा आन अनेक इच्छा-आकांक्षा जकाँ राजकमलक ईहो इच्छा साकार नहि भ' सकल। तपन सिन्हा हुनक प्रतिभा सँ बेस प्रभावित रहथि। हुनक मृत्युक समाचार सुनि क' ओ अत्यंत दुखी भेल छलाह आ बाजल रहथिन—ए जीनियस इज गोन एंड लॉस्ट। (एक टा प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति उठि गेल।)

मैथिली आ हिंदी साहित्य केँ एखन हुनका सँ बहुत आशा छल। ओ असमय आ अचानक चल गेलाह। रहि गेल अछि हुनक साहित्य जे हुनका बहुत दिन धरि जिऔने रहत किएक त' ओहि मे एक टा बेचैन आत्माक आवाज अछि।

मृत्युक बाद मैथिली-हिंदीक अनेक पत्रिका हुनका पर विशेषांक प्रकाशित कयलक, जाहि मे हुनक जीवन आ साहित्यक मूल्यांकन कयल गेल। हुनक मूल्यांकन एखनो भ' रहल अछि। राजकमलक साहित्य मे अद्‌भुत आकर्षण अछि। जे पढ़ैत अछि से ओकर कायल भ' जाइत अछि। राजकमल एखनो एक टा पैघ पाठकवर्ग केँ आकृष्ट क' रहल छथि आ बुझाइत अछि आगुओ करैत रहताह।

बांग्ला लेखक शरतचंद्र चटर्जी आ राजकमल चौधरी मे अनेक समानता अछि। शरतक जीवन विविधता सँ भरल आ विशाल छल। राजकमलोक अनुभव-क्षेत्र व्यापक आ बहुरंगी अछि। शरत आ राजकमल दुनू जीवन भरि भटकैत रहलाह।

दुनूक जीवन मे सुख कम आ बदनामी बेसी रहनि। दुनू लांछना सँ भरल जीवन बितौलनि। शरतक जीवन मे अफवाह, अनुश्रुति आ प्रवादक कोनो अंत नहि छल। राजकमलोक जीवन एहने रहनि। दुनू अपन जीवनक बारे मे दंत कथा पसारलनि। शरत केँ आ राजकमल केँ दुखदायी बचपन भेटलनि। दुनूक जीवन आ साहित्य मे प्रभूत करुणा अछि। दुनू करुणामयी स्त्री केँ साहित्यक विषय बनौलनि। प्रसिद्धि दुनू केँ भेटलनि। राजकमल केँ शरत-साहित्य प्रिय छल। राजकमल आ शरत विलक्षण व्यक्ति छलाह। हुनक साहित्यो विलक्षण अछि।

युगबद्ध मिथुन की भावभूमि तुम रस-पिच्छल
तुम स्वेद-सुरभि, हारा जिससे मृगमद परिमल
बिंबग्राही तुम स्वच्छ स्फटिक, तुम प्रभा तरल
भासित जिसमें सित-असित, मलिन एवं उज्ज्वल
तुम चर्चाओं के केन्द्र-बिंदु, तुम नित्य नवल
इस-उस पीढ़ी के लिए विरोधाभास प्रबल
बाहर छलनामय, भीतर-भीतर थे निश्छल
तुम तो थे अद्भुत व्यक्ति, चौधरी राजकमल

नागार्जुन

वाचक का प्रतिवेदन

1. मैथिली विनिबंध 'राजकमल चौधरी' की 94 पृष्ठों की पाण्डुलिपि आद्यन्त पढ़ गया। इसमें 54 पृष्ठों में राजकमल के जीवन और साहित्य पर विचार किया गया है। शेष 40 पृष्ठों के परिशिष्ट मे राजकमल चौधरी के हिंदी, मैथिली एवं अंगरेजी में लिखित वैयक्ति पत्र, आलोचना, निबन्ध, कथा, नाटक, कविता एवं राजकमल द्वारा तथाकथित अंकित रेखाचित्र इत्यादि 'चयन' शीर्षक से संकलित किये गये हैं। इनमें प्राय: कतिपय अंगरेजी कविता को छोड़कर शेष प्रकाशित ही है। चालिस पृष्ठों के इस परिशिष्ट की, पुस्तक की कलेवर-वृद्धि के अतिरिक्त कोई प्रयोजनीयता नहीं जान पड़ती है। लगता है, लेखक ने राजकमल की रचनाओं का संकलन कर उसकी भूमिका के रूप में पूर्व के 54 पृष्ठ लिख दिए हैं।
2. पाण्डुलिपि की भाषा अशुद्धियों से भरी हुई है। कुछ अशुद्धियों को बानगी रूप में देखा जा सकता है—पृष्ठ और पंक्तियों का निर्देश कोष्ठ के अंतर्गत दिया गया है—
   अखनो (6/13, 29, अन्यत्र भी), बचपन (6/23, 40), लगलथि (6/25,31, 26/14), दरार (7/1), डरि गेलीह (7/4), देलकनि 7/26—उचित देलथिन), बजौलकनि (7/28उचित-बजौलथिन) शोर पाड़लकनि (7/29), लेकिन (7/31, 10/11, 11/14, 13/40), या (7/44, 8/8, 17/12, 51/44, 45) बारेमे (8/23, 13/23), बतबैत (9/4) पैदा (9/12, 50/21), तरीका (9/16), परिग्रह (?) (9/18), 'कऽ' स्थाने 'के' (सर्वत्र), 'तँ' स्थान 'तऽ' (सर्वत्र), लड़का (9/23, 43), खेलाइथ (10/2), सुस्रषा (11/1), घरेलू (11/43), नाजुक (13/42; 28/33) कमौलथि (16/32), भेटाइन (17/11), लिखलथि (20/66), जीजिविषा (21/43), डिगा देलकनि (21/45), अही (22/2, 49/30) जुबक (25/26), कयलथि (25/26), निकाललथि (25/27), इज्जत (25/23), खुऔबनि (25/35), लेलथि (26/13), पिलथि (26/18), किनलथि (26/19), बबाल (27/7), निकललथि (27/1), अखंडया (?) (26/25), देखलथि (27/10), अयलथि (27/10), चलि देलथि (28/13), तेइस (28/26), ढलैत (?) अछि (32/33), छिपल ('33/28), खुलेआम (30/14), जांगट करैत रहय (33/35), छापलथि (33/37), भेटितियनि (33/46-उचित-भेटितनि), अता-पता (33/46-उचित-थाह-पता) मजबूर (50/6), चाह आ ललक (50/14), पैठ (53/51) इत्यादि-इत्यादि।
3. सम्पूर्ण आलेख मैथिली भाषा में रहते हुए भी हिंदी की शब्दावली, मुहाबरा, वाक्य-विन्यास एवं उक्ति भंगिमाओं से आक्रांत है।
4. 54 पृष्ठों के विवेचनात्मक भाग में लेखक ने अपने मंतव्य, मान्यता एवं निष्कर्ष के समर्थन में अंगरेजी एवं बांग्ला भाषा के मूल उद्धरणों के अतिरिक्त हिंदी भाषा के 55 मूल उद्धरणों का उपयोग किया है। इससे भ्रम हो जाता है कि आलेख मैथिली में है या हिंदी में।
5. राजकमल चौधरी के साहित्य-विवेचना में उनकी मैथिली रचनाओं पर 6 पृष्ठ मात्र खर्च किये गये हैं, जबकि हिंदी रचनाओं पर विचार हेतु 16 पृष्ठ दिये गये हैं। इस तरह विनिबन्ध-लेखक सूचित करना चाहता है कि राजकमल चौधरी मैथिली की अपेक्षा हिंदी के विशिष्ट साहित्यकार थे। वास्तविकता भी यही है कि राजकमल चौधरी की मैथिली की अपेक्षा हिंदी में ही अधिक रचनायें हैं। अत: उचित यह होता कि 'राजकमल चौधरी' पर 'भारतीय साहित्य के निर्माता' शृंखला में विनिबन्ध-लेखन-प्रकाशन की उपयुक्तता पर साहित्य-अकादेमी की हिंदी परामर्श-समिति द्वारा विचार कर निर्णय लिया जाता।
6. प्रस्तुत विनिबन्ध में राजकमल चौधरी के जीवन और साहित्य के संबंध में लेखक का दृष्टिकोण सर्वथा आत्मनिष्ठ रहा है।
7. जीवन-वृत्त में छोटी-छोटी नगण्य या महत्त्वहीन घटनाओं को अनावश्यक विस्तार दिया गया है।
8. समस्त विनिबन्ध में राजकमल चौधरी को दन्तकथाओं का अद्भुत और अविश्वसनीय पात्र (Legend) बना दिया गया है।
9. अनेक स्थलों पर तथ्यात्मक विसंगतियाँ हैं या तथ्यों को व्यवस्थित रूप में नहीं रखा गया है। कहीं पुनरुक्ति है (हमरा दुख अछि... पृ. 31 और 33),

कहीं अनावश्यक उद्धरण दिये गये हैं (पृ. 4 एवं पृ. 29), कहीं अनावश्यक विस्तृत विवरण भूखी पीढ़ी... पृ. 43-45) दिए गए हैं।

10. राजकमल चौधरी के जीवन में और तदनुरूप उनके साहित्य में सेक्स और शराब का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। विनिबन्ध लेखक ने राजकमल के इन दोनों पक्षों को उजागर करते हुए उनके दुर्व्यसनों को महिमा मंडित करने का प्रयत्न किया है। धर्मपत्नी शशिकान्ता से इतर शोभना, शकुन, संतोष, सावित्री शर्मा, नंदा, अलका इत्यादि ज्ञात-अज्ञात स्त्रियों से राजकमल के विवाहेतर संबंध को काफी महत्त्व...

11. विनिबंध में राजकमल चौधरी के दुर्व्यसनों और अमर्यादित, अनौचित्यपूर्ण, विवादास्पद, चारित्रिक स्खलन-सूचक प्रसंगों को प्रयत्न-पूर्वक संग्रह कर समाविष्ट किया गया है जिन्हें श्रेयस्कर नहीं कहा जा सकता है। ऐसे कुछ प्रसंगों एवं कथनों के निर्देश मात्र किये जाते हैं—
    i. 'ओ (राजकमल के पिता) एहन कन्या सँ विवाह कयने छलाह जे अवस्था मे हुनका सँ बहुत छोट आ राजकमलक उमरक रहनि। समवयस्कताक कारणेँ जमुना देवी (राजकमल की सौतेली माँ) आ राजकमलक पारस्परिक आकर्षणक संभावना हुनका (पिता को) निरंतर आशंकित कयने रहैत हेतनि।' (पृ. 9/पं. 35-37)
    ii. 'शकुन-सम्पर्क प्रसंग (पृ. 10)
    'शकुन हुनका सँ (राजकमल से) बहुत पैघ छलि आ दुपहर मे नहाइत काल अपन कामुक अंग-चेष्टा सँ हुनका (राजकमल को) लोभबैत छलि।' (पृ. 10/पं, 14-15)
    iii. शोभना झा—सम्पर्क प्रसंग (पृ. 10-11)
    iv. 'अन्यान्य व्यसन.... जाहि मे महताब जूनियर आ महताब सीनियर नामक भागलपुरक तवायफक संगति...' (पृ. 11/पं. 26-28)
    v. शिश्न-भंग प्रसंग (पृ. 22/पं. 18-24)
    vi. 'काज खतम क' कें जखन ओ बोनि मांगय अयलनि त' (राजकमल) कहलथिन—अखन नहि साँझ खन अबिहें।' 'से किएक मालिक ?' 'अरे साँझ खन अयबें त' एक बेर चुम्मो त' देबें।' (पृ. 26/ पं. 7-10)
    vii. नौटंकी-प्रसंग (पृ. 26-27)
    'राजकमल ककरो सँ पुछलथिन—नौटंकी मे छौंड़ियो सब छैक ?' जवाब भेटलनि-चारि-पाँच टा' (पृ. 26/पं. 33-34)

    viii. 'कहीं एक कमरा, एक ग्लास दारू और एक स्त्री हमारे लिए, सिर्फ हमारे लिए जरूर हो, (पृ. 28/पं. 22-23)
    ix. नारी शल-रति-प्रसंग (पृ. 34/पं. 35-40)
    x. ताड़ी पीबथि (पृ. 10/पं. 2), नौटंकीक लौंडा जकाँ (पृ 10/पं. 3-4)
    xi. मदिरा पान-प्रसंग (पृ. 11/18-19)
    xii. 'राजकमल जंगबहादुर सिंह नामक गुंडाक सोहबत मे सेहो रहलाह।' (पृ. 11/पं. 45)
    xiii. 'पाँच बेर गाँजाक चिलम पिलथि' (पृ. 26/पं. 17)
    xiv. सहरसा मे तीन बोतल शराब किनलथि। सुपौल पहुँचैत—
    xv. 'ओ खूब गाँजा धुकैत रहथि' (पृ. 26/पं. 23-24)

12. अंततः लेखक ने स्वयं निष्कर्ष के रूप में स्वीकार किया है कि
    क) 'राजकमलक विचार आ मान्यता अंतर्विरोध सँ भरल अछि।' (पृ. 45/ पं. 39)
    ख) 'शराब आ स्त्री राजकमलक जीवनक कमजोरी रहलनि।' (पृ. 50/ पं. 11-12)

13. समस्त आलेख के अध्ययन से यही निष्कर्ष निकलता है कि इस पुस्तक से उच्च जीवनादर्श की प्रेरणा और उदात्त विचारों के सन्देश मिलने की कोई संभावना नहीं है, अपितु यह पुस्तक मानव-मन को विकृति की ओर, मानव-जीवन को अपसंस्कृति की ओर तथा मानव-चरित्र को अध:पतन की ओर तेजी से धकेलने का काम करेगी। यह पुस्तक साहित्य-अकादेमी की गरिमा और परम्परा के अनुकूल सिद्ध नहीं हो सकेगी।

अत: मेरी राय में मैथिली में लिखित विनिबन्ध 'राजकमल चौधरी' का आलेख साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशन योग्य नहीं है। अग्राह्य है।

रामदेव झा

'वाचक का प्रतिवेदन' के बारे में

अपने मैथिली विनिबंध राजकमल चौधरी पर वाचक द्वारा भेजा गया प्रतिवेदन पढ़ गया हूँ। प्रतिवेदन दुर्भावनाओं से प्रेरित, तथ्यहीन और मनगढ़ंत है। प्रतिवेदन वस्तुपरकता से रहित और अंतर्विरोधी है। प्रतिवेदन में निहित दृष्टि और लहजा वस्तुनिष्ठ एवं तटस्थ होने के बदले विद्वेष जनित उच्छ्वास तथा आवेश से युक्त है। अगर थोड़ी गंभीरता और सतर्कता के साथ प्रतिवेदन का पाठ किया जाए तो विनिबंध लेखक के प्रति वाचक का नकारात्मक रवैया, कटूक्ति, व्यंग्य और उपहास को समझने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। इसके अनेक उदाहरण प्रतिवेदन में मौजूद हैं।

मेरी गलतियाँ ढूँढ़कर वाचक को कितनी प्रसन्नता हुई है, कितना संतोष मिला है; एक छोटा-सा उदाहरण देकर इसे मैं बताना चाहता हूँ। प्रतिवेदन में वाचक ने अशुद्धियों की लम्बी सूची दी है। बची हुई अशुद्धियों के लिये उनका काम एक इत्यादि से नहीं चलता; वे इत्यादि इत्यादि कहकर अपनी विजय और खुशी का इजहार करते हैं।

भाषा अपने प्रयोक्ता का सच्चा प्रतिबिंब होती है। उसमें उसके सरल और गूढ़, प्रकट तथा अप्रकट सभी प्रकार के मनोभाव, आशय, संकेत और रहस्य छिपे होते हैं। भाषा सभी प्रकार की संवेदनाओं और अनुभूतियों का ग्राफ तैयार करती रहती है। इत्यादि इत्यादि में वाचक का दूषित मनोभाव उनके अनजाने में प्रतिबिंबित हो गया है। वाचक ने अपने प्रतिवेदन नंबर एक में लिखा है—'कतिपय अंगरेजी कविता को छोड़कर शेष प्रकाशित ही है। वाचक का यह कथन सत्य नहीं है। राजकमल की मैथिली कहानी 'गाम मे राति, राति मे गाम' जो परिशिष्ट में सम्मिलित की गई है, अभी तक कहीं किसी पत्रिका में नहीं छपी है। मेरे ही प्रयास से इस कहानी का हिंदी अनुवाद समकालीन भारतीय साहित्य के 62 वें अंक में छपा था। दूसरी बात यह कि प्रकाशित हो जाने मात्र से कोई रचना संकलन के लिए अयोग्य

नहीं हो जाती। परिशिष्ट में सम्मिलित 'साँझक गाछ' और 'महावन' सिर्फ ये दो रचनाएँ ऐसी हैं जो अन्यत्र भी संकलित हैं। अन्य रचनाएँ या तो अप्रकाशित हैं या असंकलित। परिशिष्ट में रचनाओं को इसलिए शामिल किया गया है ताकि पाठकों को राजकमल के विविध साहित्य-रूपों का स्वाद मिल सके और वे स्थायी रूप से संकलित हो जाएँ। क्या राजकमल की रचनाओं का कलेवर वृद्धि के अतिरिक्त कोई मूल्य नहीं है?

प्रतिवेदन के दूसरे नंबर पर गलतियों की लंबी सूची है। वाचक ने जिस पहली गलती का उल्लेख किया है, वह है 'अखनो'। अब इसके सही या गलत होने का निर्णय कर लेते हैं। सबसे पहले तो यह तय कर लेना चाहिए कि यह मैथिली का शब्द है या विदेशी। मैथिली से परिचित कोई भी व्यक्ति एक क्षण के लिये भी यह संदेह नहीं कर सकता कि यह शब्द मैथिली का नहीं है। यह शत-प्रतिशत मैथिली का शब्द है, जिसका अर्थ है—अभी भी। शायद वाचक के मन में इसका शुद्ध रूप 'अखनधरि' रहा होगा, जिसका अर्थ होता है—अभी तक। अब दोनों को एक साथ रखकर देखिए—अखनो = अभी भी, अखनधरि = अभी तक

दोनों में कोई फर्क नजर आया? क्या 'अभी भी' और 'अभी तक' की व्यंजनाओं में कोई अंतर नहीं है? जब हम 'अखनो' कहते हैं तो किसी वस्तु की वर्तमानता पर बल देते हैं और जब 'अखनधरि' कहते हैं तो हमारा आशय समय की सीमा-रेखा से होता है। 'अखनो में बलाघात है, जबकि 'अखनधरि' बलाघातरहित और भिन्न अर्थ का सूचक है। अब मेरी तो समझ में नहीं आ रहा कि यह शब्द गलत कैसे हो गया। हाँ, एक और बात हो सकती है। हो सकता है वाचक को 'अखनो' लिखने के ढंग पर एतराज हो। कुछ लोग इसे 'एखनो' लिखते हैं अर्थात् 'अ' की जगह 'ए' का इस्तेमाल करते हैं। 'अ' लिखनेवालों की तादाद बहुत है और इसका उच्चारण तो हर कोई एक जैसा करता है, जिसमें 'ए' की ध्वनि नहीं होती; हमेशा 'अ' की ध्वनि के साथ इसका उच्चारण शुरू होता है। लिपि का उद्देश्य सम्बन्धित भाषा की ध्वनियों को ठीक-ठीक और हूबहू रूपायित करना होता है। उच्चरित और लिखित रूप की समानता हरेक भाषा और लिपि के लिए आदर्श होती है। मैथिली में किसी समय इस बात के लिए आंदोलन भी हुआ था कि मैथिली जिस रूप में बोली जाती है, उसी रूप में लिखी जाए। यात्री और राजकमल चौधरी जैसे अनेक समर्थ रचनाकारों ने मैथिली के उच्चारित रूप को ही लिपिबिद्ध किया। अब मेरी गलती यही हो सकती है कि मैंने यात्री और राजकमल की वैज्ञानिक परम्परा का निर्वाह किया।

'अखनो' के बाद अशुद्धियों की बानगी के रूप में उन्होंने जो दूसरा शब्द दिया है, वह है 'बचपन'। बचपन सुनते ही यह बात दिमाग में आती है कि अरे, यह तो हिंदी का शब्द है। हाँ, सही है। यह हिंदी का ही शब्द है। मैथिली में यह शब्द उसी तरह हिंदी से आया है, जिस तरह अंगरेजी से इंजन। बचपन और इंजन जिस तरह हिंदी के लिए अपरिहार्य हैं, उसी तरह मैथिली के लिए भी। मैथिली में हर कोई बचपन बोलता और लिखता है। वाचक के हिसाब से मुझे शायद 'नेनपन' का प्रयोग करना चाहिए, जो अप्रचलित हो चला है। 'नेनपन' 'नेना' शब्द से बना है। 'नेना' का अर्थ होता है बच्चा। अब हर कोई बच्चा बोलता है, नेना का प्रयोग बहुत विरल है। मैथिली में जब बच्चा चलन में आ गया तो बचपन को तो आना ही था। मैथिली में बचपन के आने का वैज्ञानिक कारण भी है। 'नेनपन' द्विअर्थी शब्द है। नेनपन का अर्थ बचपन भी है और लड़कपन भी। नेनपन के द्विअर्थी स्वरूप की छाया से बचने के लिए ही मैथिली में बचपन आ गया। बचपन कहने से किसी प्रकार की न्यूनता का बोध नहीं होता। जन्म से लेकर बारह वर्ष की उम्र तक की सामान्य अवस्था को बचपन कहा जाता है; जबकि मैथिली में 'नेनपन' का इस्तेमाल अब न्यूनता अथवा लड़कपन के अर्थ में रूढ़ हो गया है। बचपन को मैथिली से निकालकर अशुद्धियों के खाते में डाल देना किस बुद्धिमत्ता का परिचायक है, यह मेरी समझ में नहीं आता।

वाचक द्वारा निर्दिष्ट इस तरह की अशुद्धियों की सूची लम्बी है। अगर मैं सभी अशुद्धियों का विवेचन करने लगू तो एक पुस्तिका ही तैयार हो जाएगी। और, पुस्तिका तैयार करना इस पत्र का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। अशुद्धता संबंधी वाचक की आपत्तियों के खोखलेपन को जाहिर करने के लिए इतना ही काफी है।

प्रतिवेदन के तीसरे नंबर पर उन्होंने लिखा है—'सम्पूर्ण आलेख मैथिली भाषा में रहते हुए भी हिंदी की शब्दावली, मुहाबरा, वाक्य-विन्यास एवं उक्ति-भंगिमाओं से आक्रांत है।' गौरतलब बात यह है कि इस आरोप को पुष्ट और सिद्ध करने के लिए वाचक ने कोई उदाहरण नहीं दिया है। वाचक को हिंदी की प्रकृति का ज्ञान कितना है, मैं यह तो नहीं बता सकता; हाँ उनका व्याकरण निस्संदेह बहुत कमजोर है। ऊपर के उद्धरण में वाचक द्वारा प्रयुक्त 'मुहाबरा' शब्द पर ध्यान दीजिए। वाचक ने व की जगह ब लिखा है। प्रतिवेदन की आरंभिक पंक्तियों में ही वाचक ने अपना हिंदी-ज्ञान प्रदर्शित कर दिया है। 'वैयक्ति पत्र', 'कतिपय अंगरेजी कविता', 'चालिस'— ये वाचक द्वारा प्रयुक्त शब्द-समूह हैं।

इनमें से पहली गलती वाचक की असावधानता के कारण हुई है, दूसरी गलती वचन संबंधी अज्ञानता के कारण और तीसरी गलती हिज्जे न जानने के कारण। यहाँ

यह स्पष्ट कर देना प्रासंगिक होगा कि मैथिली मेरी मातृभाषा है और पिछले तीस वर्षों से मैं उसमें निरंतर लिख रहा हूँ।

लगता है हिंदी से आक्रांत होने का संदेह वाचक को इसलिए हुआ, क्योंकि पाण्डुलिपि में अधिकांश उद्धरण हिंदी के हैं। प्रतिवेदन के तीसरे नंबर पर वे कहते हैं कि आलेख मैथिली में रहते हुए भी हिंदी से आक्रांत है, मगर अगले ही क्षण प्रतिवेदन के चौथे नंबर पर उन्हें यह भ्रम होने लगता है कि आलेख मैथिली में है या हिंदी में। राजकमल की हिंदी रचनाओं पर सोलह पृष्ठ खर्च करना भी उन्हें खलने लगता है और प्रतिवेदन के पाँचवे नंबर पर वे वह सुझाव दे डालते हैं कि साहित्य अकादेमी को राजकमल पर विनिबंध हिंदी में लिखवाना चाहिए।

उद्धरण देने से पाण्डुलिपि की भाषा उद्धरण की भाषा में नहीं बदल जाती। अगर कोई बांग्ला का उद्धरण देखकर पाडुलिपि की भाषा को बांग्ला मान ले, तो समझ लेना चाहिए कि उसकी मति मारी गई। पाण्डुलिपि की भाषा को कभी मैथिली तो कभी हिंदी कहना वाचक की अस्थिर बुद्धि का परिचायक है या फिर यह समझ लेना चाहिए कि उनके विवेक की निर्णय-क्षमता दुर्बल और मंद पड़ गई है। ऐसा अगर व्यंग्य में कहा गया है तो यह व्यंग्य सिर्फ दुर्भावनाओं का ही नतीजा हो सकता है। राजकमल की हिंदी रचनाओं पर सोलह पृष्ठ खर्च कर डालने पर वाचक को एतराज है। शायद उनकी मंशा यह रही हो कि विनिबंध अगर मैथिली में है तो राजकमल की मैथिली रचनाओं का ही विशद विवेचन हो; उनकी हिंदी रचनाओं पर चलताऊ ढंग से विचार हो और किसी भी स्थिति में हिंदी का कद मैथिली से बड़ा न होने पाए, चाहे राजकमल ने हिंदी में बहुत ज्यादा क्यों न लिखा हो। विनिबंध की भाषा को लेखकीय अवदान का पैमाना बना देना या विनिबंध की भाषा को अनुचित महत्त्व देने के लिए लेखकीय कद में जोड़-घटाव करना कहाँ की बुद्धिमानी है? प्रतिवेदन के छठे नंबर पर वाचक ने लिखा है कि विनिबंध लेखक का दृष्टिकोण सर्वथा आत्मनिष्ठ रहा है। प्रतिवेदन के इस छठे नंबर का मिलान अगर आप चौथे नंबर से करें तो दोनों कथनों का अंतर्विरोध स्वतः स्पष्ट हो जाएगा। चौथे नंबर पर उन्होंने लिखा है कि लेखक ने अपने मंतव्य, मान्यता और निष्कर्ष के समर्थन में अंगरेजी, बांग्ला और हिंदी के विपुल उद्धरण दिए हैं। जिस दृष्टिकोण के समर्थन में इतनी भाषाओं के इतने उद्धरण दिए गए हों, वह दृष्टिकोण आत्मनिष्ठ कैसे हो सकता है? क्या तथ्यपरक होना आत्मनिष्ठता और तथ्य-विमुख होना वस्तुनिष्ठता है?

प्रतिवेदन के सातवें नंबर पर वाचक ने लिखा है कि छोटी-छोटी, नगण्य या

महत्त्वहीन घटनाओं को अनावश्यक विस्तार दिया गया है। वाचक ने एक भी महत्त्वहीन घटना का उदाहरण नहीं दिया है। छोटी या बड़ी कोई घटना अपने आप में महत्त्वपूर्ण या महत्त्वहीन नहीं होती। घटना को देखने वाली दृष्टि ही उसे महत्त्वपूर्ण या महत्त्वहीन बनाती है। अब मजबूरी यही है कि घटनाओं को देखने की मेरी अपनी दृष्टि है, वाचक की नहीं।

आठवें नंबर पर वाचक ने लिखा है कि लेखक ने राजकमल चौधरी को दंतकथाओं का अद्भुत और अविश्वसनीय पात्र बना दिया है। वाचक ने यह नहीं लिखा है कि ऐसा किस तरह बना दिया गया है। पाण्डुलिपि में एक उपशीर्षक है—दंतकथाक नायक। इस उपशीर्षक का हवाला देकर वाचक लिख सकते थे कि देखिए, लेखक ने विनिबंध के एक अध्याय का नाम ही रख दिया है—दंतकथा का नायक। राजकमल को दंतकथा का नायक बना देने का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है! लेकिन वाचक इस अध्याय का हवाला देने का नैतिक साहस शायद इसलिए नहीं जुटा सके, क्योंकि इस अध्याय में राजकमल को दंतकथाओं, अनुश्रुतियों एवं अतिरंजनाओं के वृत्त से निकालने की कोशिश की गई है ताकि उनके जीवन की निभ्रांत समझ हासिल हो सके। पूरे विनिबंध में लेखक का प्रयत्न राजकमल के जीवन की वास्तविकता और सच्चाई को उजागर करने का रहा है उन्हें दंतकथा का नायक बनाने का नहीं।

प्रतिवेदन के नवें नंबर पर वाचक ने तथ्यात्मक विसंगति, अव्यवस्था, पुनरुक्ति, अनावश्यक उद्धरण और विस्तृत विवरण का उल्लेख किया है। वाचक ने तथ्यात्मक विसंगति और अव्यवस्था का कोई उदाहरण नहीं दिया है, जो अपेक्षाकृत अधिक गंभीर आरोप हैं। अगर तथ्यात्मक विसंगति और अव्यवस्था होती तो राजकमल का जीवन-वृत्त अटक कर उलझ जाता। वह इतना सुसंगत और व्यवस्थित है कि वाचक को अद्भुत और अविश्वसनीय लगने लगा है। पुनरुक्ति का उन्होंने एक उदाहरण दिया है। लगता है उदाहरण देते समय वाचक मानसिक रूप से निश्चेष्ट थे। यही कारण है कि उद्धरण को उन्होंने उक्ति मान लिया है। पुनरुक्ति के रूप में उन्होंने जिस अंश का उदाहरण दिया है, वह मेरी उक्ति नहीं, बल्कि राजकमल की कविता का आंशिक उद्धरण है। दोनों स्थलों पर इस उद्धरण के दो कार्य हैं। पहले स्थल पर उसका कार्य पाठकों को राजकमल की कविताओं के मिजाज और स्वाद से परिचित कराना है, तो दूसरे स्थल पर विवेचन के एक भिन्न पहलू को रेखांकित करने से संबंधित है। अनावश्यक उद्धरण और विस्तृत विवरण संबंधी जो आरोप वाचक ने लगाए हैं, वे भूखी पीढ़ी से संबद्ध हैं। हिंदी में राजकमल को भूखी पीढ़ी

से जोड़ा जाता रहा है। उन्हें भूखी पीढ़ी का प्रवक्ता और नकलची कहा जाता रहा है। मैंने अत्यंत संक्षेप में, सिर्फ दो पृष्ठों में, इसकी जाँच-पड़ताल की है; जो किसी तरह अनावश्यक और अप्रासंगिक नहीं कही जा सकती।

प्रतिवेदन के दसवें नंबर पर वाचक ने राजकमल के दुर्व्यसनों को महिमामंडित करने का आरोप लगाया है। राजकमल शराब पीते थे और चार स्त्रियों के साथ उनके ऐसे महत्त्वपूर्ण संबंध थे, जिनके कारण राजकमल का जीवन गंभीर रूप से प्रभावित हुआ। इनके साक्ष्य भी हैं। मैंने ऐसे परिणामकारी प्रसंगों को छिपाने की कोई कोशिश नहीं की है, न उन्हें तूल दिया है। वे जैसे थे और उनकी भूमिका जैसी थी, मैंने उन्हें उसी रूप में रखा है। चटखारा लेने या उन्हें रंगीन बनाने की मैंने कोई कोशिश नहीं की है। इन प्रसंगों से बचकर निकल जाने का मतलब होता, राजकमल के जीवन की झूठी तस्वीर पेश करना और सच्चाई पर जानबूझ कर पर्दा डालना। मैंने ऐसा नहीं किया है और सच्चाई को सामने लाने का अर्थ उसे महिमामंडित करना नहीं होता।

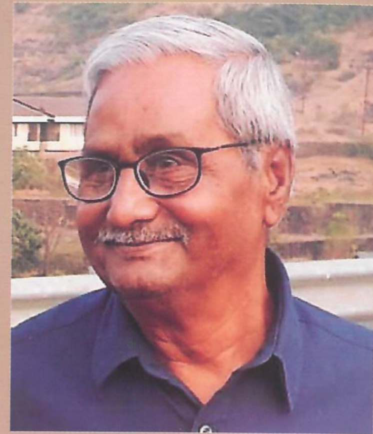
प्रतिवेदन के ग्यारहवें नंबर पर वाचक ने पाण्डुलिपि को जहाँ-तहाँ से नोचकर उसे अरुचिकर, वीभत्स और विकृत सिद्ध करने की कोशिश की है। अगर किसी अनिंद्य सुंदरी के हाथ पाँव बाल और स्तन काटकर दिखाए जाएँ, तो सुंदरता के बदले वे वीभत्सता का बोध ही कराएँगे। फूल डाल से तोड़ लिए जाने पर अपनी जैव प्राणवत्ता और दिव्यता खो देता है।

प्रतिवेदन के बारहवें नंबर पर वाचक ने राजकमल के परस्पर विरोधी विचार और शराब तथा स्त्री संबंधी उनकी कमजोरियों के बारे में एक-एक वाक्य वाली मेरी दो टिप्पणियों को सिर्फ उद्धृत कर दिया है। मेरी टिप्पणियों को आधार बनाकर वे कौन-सी बात सिद्ध करना चाहते हैं, इसका खुलासा वे नहीं करते। हाँ, अगर बारहवें को तेरहवें नंबर से जोड़कर देखा जाए तो बात कुछ बन सकती है। प्रतिवेदन के तेरहवें नंबर पर जो प्रतिवेदन का अंतिम नंबर भी है, वाचक फैसला सुनाते हैं कि पाण्डुलिपि का पाठ लोगों को अध:पतन की ओर ले जाएगा। औरत और शराब को तो पतनशीलता के साथ जोड़ा ही जा सकता है। भारतीय समाज की मूल्य-व्यवस्था में तो इसकी गुंजाइश है ही। आप औरत और शराब में गर्क रहें तो कोई बात नहीं, मगर दूसरों को यह बताना कि आप औरत और शराब में गर्क हैं; मर्यादाहीनता और पतनशीलता की निशानी बन जाता है। वाचक के अनुसार मुझे शायद राजकमल को राजकमल की तरह नहीं; मर्यादा पुरुषोत्तम राम के रूप में चित्रित करना चाहिए था, जिससे राजकमल उच्च जीवनादर्श के अक्षय स्रोत बन जाते।

लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया है। राजकमल को राजकमल ही रहने दिया है—अच्छाइयों और बुराइयों का समुच्चय। बुराइयों को छिपाकर सिर्फ अच्छाइयों को सामने लाना मेरी सत्यनिष्ठता को गँवारा नहीं रहा है। बुराइयों को मैंने बुराइयों के रूप में ही चित्रित किया है। राजकमल के जीवन पर पड़ने वाले उनके दुष्प्रभावों को दिखाया है। राजकमल के पश्चाताप और परिताप को उजागर किया है। अब शराब और स्त्री का नाम सुनते ही अगर कोई आँख-कान बंद करके राम-राम कह उठे, तो ऐसी लज्जाशीलता के लिए मैं क्या कर सकता हूँ। वाचक के प्रतिवेदन के बारे में मुझे इतना ही कहना है।

सुभाष चंद्र यादव

●●●



सुभाष चंद्र यादव

एहि किताब के लेखक सुभाष चंद्र यादव मैथिलीक अग्रणी कथाकार, समीक्षक आ अनुवादक छथि। नई दिल्लीक जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय सँ हिंदी मे एम.ए. एवं पीएच.डी. कयलाक बाद ओ अनेक वर्ष धरि अध्यापन करैत रहलाह। ओ मैथिली, हिंदी, बांग्ला, उर्दू, अंगरेजी, फ्रेंच आ स्पेनिश भाषाक जानकार छथि। मैथिली, हिंदी, बांग्ला तथा अंगरेजी मे हुनका द्वारा कयल गेल अनेक अनुवाद प्रकाशित भेल अछि। हाल मे हुनक उपन्यास 'गुलो' आ यात्रा-वृत्तांत 'रमता जोगी' बेस लोकप्रियता एवं प्रसिद्धि पौलक अछि।

ओ बिहार सरकारक सांस्कृतिक नीति-निर्धारण समिति, मैथिली अकादमीक कार्य-समिति, केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर आ साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के परामर्शी सदस्य रहि चुकल छथि।

एखन धरि मैथिली-हिंदी मे हुनक अनेक पुस्तक आ विभिन्न पत्र-पत्रिका मे कतेको रचना प्रकाशित भ'चुकल अछि।

ओ अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार सँ सम्मानित भेल छथि।

संपर्क : वार्ड नं. 16, सुपौल, बिहार, 852131

मूल्य : ₹ 250/-
ISBN 978-93-91925-33-8
अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/ यूजीएफ-4
शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)